जे० पी० की इस 'जेल डायरी' को महज एक किताब कहना या मानना काफी नहीं होगा। एक क्रांतिकारी पुस्तक होने के साथ ही यह डायरी सही अर्थों में, आजादी के बाद के भारत की एक जीवंत ऐतिहासिक धरोहर भी है। इस 'जेल डायरी' के पन्नों में जहां नये भारत और उसके जन मानस की साफ-सच्ची और करुण तस्वीर है—आने वाले समय के उजलते हुए संकेत हैं, वहां इनमें इमरजेंसी के दौरान चंडीगढ़ जेल में बंदी समर्थ चिंतक विचारक राजनीतिज्ञ और कवि मन जयप्रकाश की एक अंतरंग एकान्त यातना कथा भी है।

इस जेल डायरी का प्रकाशन संपूर्ण क्रांति के पुरस्कर्ता लोकनायक के कालजयी व्यक्तित्व के प्रति एक प्रसन्न श्रद्धा का प्रतीक भी है।

मेरी
जेल डायरी

चंडीगढ़ जेल में लिखी
जयप्रकाश नारायण की डायरी

अनुवादक व सम्पादक
डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

मेरी जेल डायरी

जयप्रकाश नारायण

अंधकार और प्रकाश

पृष्ठभूमि

बिहार मे जो आदोलन हुआ, वह यहा के छात्रो और युवको ने गुरू किया। जे० पी० तो इसम बाद मे शामिल हुए और छात्र नेताओ के बार-बार आग्रह करन पर उसकी बागडार हाथ मे ली। यह युवा आदोलन जिन मागा को लेकर शुरू हुआ था, उनमे मुख्य बातें थी—भ्रष्टाचार दूर हो महगाई खत्म हो, बेरोजगारी की समस्या हल हो और शिक्षा म आमूल परिवनन हो। इन्ही मागो म आगे चलकर जब आदोलन मे पूरी शक्ति आई और राजतंत्र उसको कुचलने मे कटिबद्ध हुआ तो यह एक माग और जुडी कि अगर जनता के प्रतिनिधि इन न्यायपूर्ण मागो को पूरा करने म असफल हैं तो उन्हें विधान सभा से त्यागपत्र देना चाहिए।

जे० पी० नही चाहते थ कि छात्रो और युवको के उस आदोलन का नेतत्व वह स्वय करें, लेकिन जब 18 माच, 1975 को विधान सभा के सामने सत्याग्रही छात्रो पर पुलिस ने डडे बरसाने और दूसरी तरफ कुछ पेशेवर उपद्रवी तत्त्वो ने पटना शहर मे जहा तहा आगजनी की कारवाई की तो पहली बार जे० पी० का माथा ठनका और तब उन्होंने अपने एक वक्तव्य मे उन उपद्रवी तत्त्वो की निन्दा करते हुए बिहार शासन को सावधान भी किया। साथ

ही 18 माच की घटना से जो तनाव का वातावरण पदा हुआ उसे शाति मे बदलने के लिए जे० पी० ने 8 अप्रल, 1974 को वह ऐतिहासिक मौन जुलूस निकाला, जिसका अदभुत प्रभाव जनमानम और युवामानस पर पडा था। यह मौन जुलूस छात्रो के आदोलन को हिसक तत्त्वो से बचाने और उस शाति के तत्त्वा से जोडने की दिशा म एक महत्त्वपूण प्रयास था, परन्तु बिहार क शासन ने अपना रवया नही बदला। उसन तो छात्रा के उस आन्दोलन को बस कुचलने का फसला कर लिया था। इसस आदोलन दबने के बजाय उभरता गया। जनता की भरपूर सहानुभूति भी उस मिली और छात्रा युवको क आन्दोलन ने एक बड जन-आदोलन का रूप ले लिया। सरकार की क्रूर दमनकारी नीतियो के फलस्वरूप आदोलन का रूप अधिकाधिक सरकार विरोधी होता गया और तब विधानसभा क विघटन के लिए बिहार क आकाश मे यह आवाज गूज उठी -- तुम प्रतिनिधि नही रहे हमारे कुर्सी गद्दी छोड दो!

लकिन ऐसा नही हुआ। उलट उन्हाने घोर दमन की नीति अपनाई और शातिपूण सत्याग्रही छात्रो युवको पर लाठी गोली स प्रहार करना शुरु किया और तब जयप्रकाश ने छात्रा, युवका के अनुरोध पर पहली बार उनके आदोलन का नेतत्व करना स्वीकार किया।

अब जयप्रकाश छात्रा और युवका के लोकनायक हो गए और वह आन्दोलन सपूण क्राति का रूप लेने लगा। इसीका साक्ष्य है 6 माच 1975 की दिल्ली म वह एतिहासिक जन प्रदशन जिसका नेतत्व लोकनायक ने किया और जिसम देश भर स आए हुए कई लाख लोगो ने भाग लिया।

फिर 5 जून 1975 को कलकत्ते म एक अभूतपूव जन प्रदशन हुआ, जिसम लाखा लोग शामिल हुए।

एक नया अध्याय

लोकनायक जे० पी० के नेतृत्व मे जहा एक राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक सघर्ष चल रहा था, वहा इलाहाबाद हाईकोर्ट म प्रधानमत्री श्रीमती इदिरा गाधी के खिलाफ राजनारायण द्वारा चुनाव याचिका लडी जा रही थी।

12 जून को इलाहाबाद हाइकोट मे न्यायाधीश श्री जगमोहन लाल सिंहा न श्रीमती गाधी के चुनाव को अवैध घोषित कर दिया।

इस घोषणा स भारतीय राजनीतिक जीवन और उस राष्ट्रीय सघर्ष के इतिहास मे अचानक एक नया अध्याय खुला। सारा प्रतिपक्षी दल एक जनता मोर्चा के रूप मे सगठित हुआ। इसके नेतृत्व के लिए स्वभावत जे० पी० का ही आह्वान हुआ।

23 जून को जे० पी० पटना स दिल्ली पहुचे और गाधी शान्ति प्रतिष्ठान की अतिथिशाला म ठहरे। उस क्षण से 25 जून की शाम तक पूरे भारतवर्ष के प्रतिपक्षी दल के नेता जे० पी० स मिलते जुलते रहे। जनता मोर्चा के अध्यक्ष श्री मोरारजी देसाई ने जे० पी० की सलाह स एलान किया कि पाचदलीय जनता मोर्चा श्रीमती गाधी से इलाहाबाद का फैसला मनवाने के लिए 29 जून से राष्ट्रीय स्तर पर शातिपूर्ण सत्याग्रह का आयोजन करेगा।

25 जून को दिल्ली के रामलीला मैदान म एक विशाल सभा हुई। इसीमे बोलते हुए जे० पी० ने घोषणा की कि हम ऐसी अवैध सरकार को 'बाईकाट' करते है। जनता ऐसी हुकूमत को कोई कर नहीं देगी। गाव स्तर से लेकर शहर और जिले से केन्द्र तक हमारा सघर्ष शुरू होगा।

24 25 जून इन दो दिनो मे जे० पी० न श्री जगजीवनराम और श्री यशवतराव चह्वाण स भेंट की। श्री चन्द्रशेखर के नेतृत्व म करीब साठ सत्तर काग्रेस एम० पी० जे० पी० के आह्वान पर जनता मोर्चा के समर्थन म सामने म आए।

पर इसके खिलाफ श्रीमती गांधी ने 25 जून की रात को जो क्रूर और दमनकारी कदम उठाया, उससे अचानक हिंदुस्तान की सारी तस्वीर ही बदल गई।

25 की आधी रात का गांधी शांति प्रतिष्ठान से पहली गिरफ्तारी जयप्रकाश की हुई। और उसके साथ ही समूचे देश के सभी प्रतिपक्षी नेता गिरफ्तार कर लिए गए।

26 की सुबह श्रीमती गांधी ने आपातस्थिति की घोषणा की। और जे० पी० के शब्दों में—'25 जून 1975 तक भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र था। 26 जून 1975 से वह एक अधिनायक तंत्र में परिवर्तित कर दिया गया। 25 जून तक जनता इस देश की मालिक थी परन्तु 26 जून से वह अधिकार छिन गया है और लोकशाही के स्थान पर एक व्यक्ति की तानाशाही कायम हो गई है।'

दिल्ली में गिरफ्तार करके कार से जे० पी० को हरियाणा के सोहना नामक स्थान पर ले जाया गया और वहां एक रेस्ट हाउस में रखा गया। स्वयं जे० पी० के ही शब्दों में—

सोहना पहुंचते ही मैंने देखा कि श्री मोरारजी देसाई भी गिरफ्तार करके ले आए गए हैं। उनसे फिर मेरी मुलाकात नहीं हुई बावजूद इसके कि वे उसी बगल में रखे गए।

वहां केवल तीन दिन रहा। इसी बीच मेरा हृदय रोग कुछ उभर आया। इसलिए 29 जून को दिल्ली के आल इंडिया इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइन्सीज में आवश्यक जांच और चिकित्सा के लिए मुझे ले गए। 1 जुलाई की शाम को एयर फोर्स के विमान से मुझे चंडीगढ़ पहुंचा दिया गया। वहां मुझे पी० जी० आई० के अस्पताल में रखा गया। तब से रिहाई के दिन 12 नवम्बर, 1975 तक वहीं नजरबंद रहा।

"नजरबंदी के साढ़े चार महीने में मैं बिलकुल अकेला ही रहा।

यह अकेलापन ही मुझे सबसे ज्यादा अखरने वाली बात थी। इस दृष्टि से इंदिराजी की सरकार का मेरे साथ व्यवहार विदेशी अंग्रेजी सरकार के व्यवहार से बुरा था क्योंकि सन 1943 में जब डा० राममनोहर लोहिया लाहौर किले में लाए गए तो हर दिन एक घंटे तक उनसे मिलने और बातचीत करने की इजाजत मुझे मिली थी।

"चंडीगढ़ अस्पताल के जिस कमरे में मुझे नजरबंद रखा गया था, वहां घूमने के लिए केवल तंग गलियारा था जिसके दोनों तरफ के कमरों में मेरे सशस्त्र पहरेदार रहते थे।"

●●

चंडीगढ़ जेल में जयप्रकाश की लिखी हुई यह डायरी डायरी के ये पृष्ठ इसके एक एक शब्द ऐसे साक्ष्य हैं जिनसे वर्तमान भारत को समझने में, उसके इतिहास को अनुभूत करने में महत्वपूर्ण मदद मिलेगी। यह एक ऐसा जीवंत दस्तावेज है जिसमें जे० पी० की आत्मा के स्वर हैं। सत्ताधारी कांग्रेस जो उतने समय के लिए लोकतंत्र की हत्या के लिए जिम्मेदार है जिसने हजारों लोगों को बिना मुकदमा चलाए जेल में बंद रखा और इसी प्रकार के अन्य कितने ही तानाशाही कदम उठाए उस अंधकार के पूरे मनोविज्ञान को समझने में डायरी के ये पृष्ठ मददगार होंगे।

मैं लोकनायक जयप्रकाश के जीवनी लेखक के नाते नहीं उन्हें मनुष्य रूप में बहुत नजदीक से देखने और समझने के आधार पर कहता हूं—ये पृष्ठ उनके एकांत क्षणों की ऐसी भरपूर जिंदगी हैं जिनमें उनके विचारक क्रांतिदर्शी उदास और करुण पुरुष का अत्यंत सहज रूप प्रकट हुआ है।

चंडीगढ़ में जे० पी० के बंदी जीवन की एक लंबी कहानी है। नजरबंदी के पूरे साढ़े चार महीनों के दौरान वे वहां बिल्कुल

पृष्ठ भारतीय लोकमानस के ऐसे दर्पण हैं जिनमें कोई भी अपने समय की छवि देख सकता है। अपने उस अंतर्मुख को देख सकता है जिसकी पहचान अब तक नहीं थी।

इस कारावास काल में जे० पी० के पुरुष और उनके चरित्र और व्यक्तित्व की पूरी पहचान मिलती है। उनके चित्त मनोभाव अंतर्द्वन्द्व, दुःख दर्द, परम एकाकीपन के विविध क्षण इन पृष्ठों पर सहज ही अंकित हैं।

इन्हीं अपूर्व क्षणों में जयप्रकाश के मानस में पहली बार एक कविता फूटी है, जो इस डायरी के पृष्ठों के साथ है।

कुछ ही पृष्ठों के अलावा शेष सारी डायरी सीधे अंग्रेजी में लिखी थी जे० पी० ने। मुझे पूरी डायरी अंग्रेजी में ही प्राप्त हुई। इसका हिन्दी अनुवाद और रूपांतरण आसान काम नहीं। पर चूंकि मैं जे० पी० के पूरे व्यक्तित्व और भाव विचारों से परिचित था इसलिए मुझे डायरी के इन पृष्ठों को अंग्रेजी से हिन्दी में लाने में उतनी कठिनाई नहीं हुई।

मेरा विश्वास है चंडीगढ़ जेल में लिखी लोकनायक जयप्रकाश की यह डायरी एक मूल्यवान निधि है। जे० पी० के अन्तःकरण की आवाज है। क्रांतिकारी समाजवादी, सर्वोदयी लोकनायक और अब हमें फिर से प्रजातंत्र को वापस दिलाने वाले महाप्राण पुरुष के ये शब्द हमें सदैव प्रकाश देते रहेंगे।

ये ज्योतिर्मय शब्द अंधकार के खिलाफ लड़े हुए प्रकाश की जयगाथा हैं।

—लक्ष्मीनारायण लाल

नई दिल्ली 17 मई 1977

जेल डायरी
1975

जुलाई, 21

मेरे चारों ओर सब टूटा बिखरा पड़ा है। नहीं जानता कि अपने जीवन-काल में वर्तमान समाज को फिर से संवारा हुआ देख पाऊंगा कि नहीं। शायद मेरे भतीजे और भतीजियां ऐसा देख पाएं। शायद!

लोकतन्त्र के बहुमुखी विकास तथा विस्तार के लिए मैं प्रयास करता रहा हूं। इसके लिए लोकतन्त्र की प्रक्रिया में मैं पूरी तरह जनता को निरन्तर साथ लेकर चलने का यत्न करता रहा हूं। इसके दो तरीके हैं। एक, हमें किसी ऐसे तन्त्र की व्यवस्था करनी चाहिए जिसके माध्यम से उम्मीदवारों को चुनते समय हम जनता से परामर्श प्राप्त कर सकें। दूसरे, पहले तरीके की भांति तन्त्र की व्यवस्था करके जिसके माध्यम से जनता अपने प्रतिनिधियों पर निगरानी रख सके और उनसे ईमानदारी के साथ काम करने की मांग कर सके। यही वे दो मूल तत्त्व थे जो मैं बिहार के इस संघर्षपूर्ण आंदोलन से प्राप्त करना चाहता था और आज वहां मैं लोकतन्त्र के हनन के साथ अपनी कल्पना का हनन होते देख रहा हूं।

पष्ठ भारतीय लोकमानस के ऐसे दपण हैं, जिनमें कोई भी अपने समय की छवि देख सकता है। अपने उस अतमुख को देख सकता है जिसकी पहचान अब तक नहीं थी।

इस कारावास काल म जे० पी० के पुम्प और उनके चरित्र और व्यक्तित्व की पूरी पहचान मिलती है। उनके चित्त, मनाभाव अतद्वद्व दुख दद, परम एकाकीपन के विविध क्षण इन पष्ठो पर सहज ही अंकित है।

इन्ही अपूव क्षणो म जयप्रकाश के मानस म पहली बार एक कविता फूटी है जो इस डायरी के पष्ठो के साथ है।

कुछ ही पृष्ठा के अलावा शप सारी डायरी सीधे अंग्रेजी मे लिखी थी जे० पी० ने। मुझ पूरी डायरी अंग्रेजी म ही प्राप्त हुई। इसका हिन्दी अनुवाद और रूपातरण आसान काम नही। पर चूकि मैं जे० पी० के पूरे व्यक्तित्व और भाव विचारो स परिचित था इसलिए मुझे डायरी के इन पृष्ठो को अग्रजी से हिन्दी म लाने मे उतनी कठिनाइ नही हुइ।

मेरा विश्वास है चडीगढ जेल म लिखी लोकनायक जयप्रकाश की यह डायरी एक मूल्यवान निधि है। जे० पी० क अन्त करण की आवाज है। क्रातिकारी समाजवादी सर्वोदयी लोकनायक और अब हम फिर स प्रजातन्त्र का वापस दिलाने वाले महाप्राण पुरुष के ये शब्द हमे सत्व प्रकाश देते रहगे।

ये ज्योतिमय शब्द अधकार के खिलाफ लडे हुए प्रकाश की जयगाथा हैं।

—लक्ष्मीनारायण लाल

नई दिल्ली 17 मइ 1977

जेल डायरी
1975

जुलाई, 21

मेरे चारो ओर सब टूटा बिखरा पड़ा है। नही जानता कि अपने जीवन-काल मे वर्तमान समाज को फिर से सवारा हुआ देख पाऊगा कि नही। शायद मेरे भतीजे और भतीजिया ऐसा देख पाए। शायद !

लोकतंत्र के बहुमुखी विकास तथा विस्तार के लिए मै प्रयास करता रहा हू। इसके लिए लोकतंत्र की प्रक्रिया मे मैं पूरी तरह जनता को निरन्तर साथ लेकर चलने का यत्न करता रहा हू। इसके दो तरीके हैं। एक, हमे किसी ऐसे तत्र की व्यवस्था करनी चाहिए जिसके माध्यम से उम्मीदवारो को चुनते समय हम जनता से परामर्श प्राप्त कर सकें। दूसरे पहले तरीको की भाति तत्र की व्यवस्था करके जिसके माध्यम से जनता अपने प्रतिनिधियो पर निगरानी रख सके और उनसे ईमानदारी के साथ काम करने की माग कर सके। यही वे दो मूल तत्त्व थे जो मैं बिहार के इस सघर्ष पूर्ण आदोलन से प्राप्त करना चाहता था और आज वहा मैं लोकतंत्र के हनन के साथ अपनी कल्पना का हनन होते देख रहा हू।

हमारे अनुमान कहा गलत रहे ? प्राय मैंने 'हमारे अनुमान कहे हैं किन्तु वह कहना ठीक नही होगा । इसके लिए मुझे पूरी तरह जिम्मेदारी लनी होगी । मेरी यह धारणा गलत सिद्ध हुइ कि लोकतान्त्रिक दश का प्रधानमन्त्री शान्तिपूण लोकतान्त्रिक आदोलन को परास्त करन के लिए सभी सामान्य एव असामान्य कानूनो का ता इस्तमाल करेगा किन्तु स्वय लोकतन्त्र को विनाश करके उसके स्थान पर अधिनायकवादी तरीका को अपनाएगा । मुर्झे विश्वास नही होता था कि यदि प्रधानमन्त्री चाहे भी तो उनके वरिष्ठ साथी तथा उनकी पार्टी जिनकी पिछली लोकतान्त्रिक परम्परा इतनी ऊची रही है इसकी अनुमति दे देंगे। किन्तु जिसका विश्वास नही होता था वही हुआ । देश म यदि हिंसात्मक विद्रोह शु हो गया था यह आशका होती कि हिंसात्मक तरीके से कह सरकार न छीन ली जाए तो एसे परिणाम समझ मे आ सकत थ किन्तु एक शान्त आदोलन का यह सहार ? भ्रष्टाचार बरोज गारी और दरिद्रता के विरुद्ध लडन के लिए जनता क्या कर सकती है हमारा युवा वग क्या कर सकता है ? आगामी चुनाव की चुपचाप प्रतीक्षा करें ? कि तु इसी बीच यदि स्थिति असह्य हो जाए तो जनता को क्या करना होगा ? शान्ति से चुपचाप हाथ पर हाथ धरकर बठ जाए और कष्टो को चुपचाप सहत रहे ? यह ई श्रीमती इन्दिरा गाधी के लोकतन्त्र का स्वरूप, श्मशान की खामोशी की तरह । और चुनाव ही यदि स्वतन्त्र तथा निष्पक्ष न हुए तो उसके लिए उन्हे जागरूक और सगठित होना होगा । मैं नही समझता कि अपनी दयनीय स्थिति को बदलने के लिए किसी भी लोकतान्त्रिक समाज मे लोग पूणत चुनाव पर ही निभर रहे हो। सभी जगह हडतालें प्रतिवाद जुलूस धरना, घेराव इत्यादि हुए है।

प्रधानमन्त्री ने लोकतन्त्र की हत्या करने और अपन तानाशाही शासन के शिकजे म कसने के लिए क्या कदम उठाए हैं उन्ह फिर

से गिनाने की आवश्यकता नहीं है। यह वही प्रधानमंत्री हैं जो बार-बार हमपर लोकतंत्र को तबाह करने और फासिस्टवाद स्थापित करने का आरोप लगाती रही हैं और हम देखते हैं कि वही प्रधानमंत्री लोकतंत्र को तबाह कर रही हैं और उसी लोकतंत्र के नाम पर स्वयं फासिस्टवाद स्थापित कर रही हैं। अपने हाथों से लोकतंत्र का गला घोटकर और लोकतंत्र की लाश को नीचे गहरी कब्र में दफनाकर वह लोकतंत्र की रक्षा कर रही हैं। क्या उन्होंने घोषणा नहीं की कि आपातस्थिति से पूर्व की अव्यवस्था की हालत में भारत को फिर से नहीं ले जाया जा सकता—अनियमितता की स्थिति? अव्यवस्था, अनियमितता की बात करना उनका चोली दामन का सम्बन्ध है। 9 अगस्त 1974 को उन्होंने दिल्ली में कांग्रेस युवकों की जो रैली बुलाई थी, क्या वह उसे भूल गई हैं? उसमें अश्लीलता और गुण्डागर्दी का नग्न नृत्य हुआ था और क्या उन्हें 6 मार्च 1975[1] को अखिल भारतीय जनता का जुलूस और रैली याद है? दिल्ली पुलिस के इंस्पेक्टर जनरल ने स्वयं कहा था कि उस दिन कोई भी दुर्घटना नहीं हुई। किन्तु 2 अप्रैल, 1975 को कलकत्ता के विश्वविद्यालय इंस्टीट्यूट हाल के सामने की व शर्मनाक घटनाएं याद हैं, जहां मुझे एक बैठक में भाषण देना था? इसके बिल्कुल विपरीत क्या उन्हें उसी वर्ष की 5 जून को कलकत्ता के विशाल जनसमूह का जुलूस याद है? पूरे विश्व में स्वीकार किया गया था कि कलकत्ता जैसे अशान्त नगर में अपनी किस्म का यह बहुत ही शान्तिपूर्ण जुलूस था। मैं नहीं जानता कि सार्वजनिक सभाएं, जुलूस, बंध को जो कि शान्तिपूर्ण और अनुशासनमय हों उन्हें कभी अव्यवस्था की संज्ञा दी जा सकती है।

1 लोक संघर्ष द्वारा आयोजित यह अखिल भारतीय जुलूस था जिसमें भाग लेनेवालों की संख्या अलग अलग अनुमानों के अनुसार 5 लाख से 10 लाख के बीच थी।

मैं समझता हूं कि वे सभी पुरुष स्त्रियां अब क्या कह रहे होंगे जो कहा करते थे कि मैं ही केवल देश के लिए आशा की किरण हूं। इस भयानक विनाश को लाने के लिए क्या वे मुझे कोस रहे हैं ! मुझे आश्चर्य नहीं होना चाहिए। वे शायद यह भी कह रहे होंगे कि श्रीमती गांधी इस प्रकार चारों ओर से घिर जाने पर जो कुछ कर रही हैं उसके अलावा व और कर भी क्या सकती हैं। किन्तु मुझे उम्मीद है कि कुछ लोग विशेषकर युवावर्ग में अवश्य होंगे जिनकी निष्ठा मुझमें और जिस उद्देश्य के लिए मैं लड़ रहा हूं उसमें अब भी है। मुझे आशा है भारत पतन से फिर उठेगा चाहे इसके लिए समय कितना भी लगे।

जुलाई 22

मुझे सदा यह विश्वास रहा है कि श्रीमती गांधी को लोकतन्त्र में कोई आस्था नहीं है। वह स्वभाव से व्यक्तिवादी विचारों से तानाशाही हैं। बड़े दुःख की बात है कि मेरा विश्वास सत्य निकला। मुझे याद है कि किसी लेख या बयान में मैंने श्रीमती गांधी की जीवनी लिखनेवाली श्रीमती उमा वासुदेव का प्रमाण के रूप में उद्धरण दिया तो बेचारी लेखिका से जवाब-तलबी की गई कि उसने क्या लिख दिया है ? किन्तु इससे मैंने अपना विचार नहीं बदला।

मैंने फिर कहां भूल की है ? घटनाओं ने बताया है कि मेरा यह सोचना ही भूल थी कि चाहे श्रीमती गांधी की व्यक्तिगत विचारधारा कुछ भी हो, उनके लिए तानाशाही सम्भव नहीं हो पाएगा। पहले मैंने सोचा था कि जनता ऐसा नहीं होने देगी और वे भी तानाशाही की ओर बढ़ने का साहस नहीं करेंगी। मैंने यह भी सोचा था जैसाकि मैंने कल लिखा था कांग्रेस पार्टी भी ऐसा नहीं

होने देगी, किन्तु घटनाओं ने सिद्ध किया है कि मैं गलती पर था। मैं अब भी सोचता हूं कि जनमत इसका प्रतिकार करेगा और प्रबल विरोध होगा, किन्तु इसके लिए समय चाहिए। इस समय जनता बिल्कुल भौचक्की हो गई है और उसके नेताओं के उसके बीच में न रहने के कारण वह नहीं जानती कि क्या करे। मैंने कल जिन लोगों का जिक्र किया था उन्हीं में से नये नेता पैदा होंगे। बिल्कुल ही नये नेता और विरोध जारी रहेगा।

जहां तक कांग्रेस पार्टी का सम्बन्ध है, मैं नहीं समझता कि वह इतनी बेजान क्यों हो गई है? यह सत्य है कि काफी संख्या में कम्युनिस्ट कांग्रेसी हैं। वे अंतिम समय तक श्रीमती गांधी के साथ रहेंगे। वे सदा लोकतंत्र के दुश्मन रहे हैं। उनके पीछे दक्षिण पंथी भारतीय कम्युनिस्ट दल है और उसकी पीठ पर सोवियत रूस। रूस ने श्रीमती गांधी की पूरी सहायता की है, क्योंकि अपनी वर्तमान नीति के अनुसार जितनी श्रीमती गांधी आगे बढ़ेंगी उतना ही रूस का इस देश पर सशक्त प्रभाव होगा। एक समय आएगा जब श्रीमती गांधी से पूरा लाभ उठा लेने के बाद रूस के लोग भारतीय कम्युनिस्ट दल और कांग्रेस में छिपे हुए अपने भेदियों के माध्यम से श्रीमती गांधी को इतिहास के कूड़ेदान में फेंक देंगे और उनकी जगह अपने आदमी बिठा देंगे। यह भी सम्भव है कि श्रीमती गांधी स्वयं कठपुतली बन गई हों किन्तु उन्हें सत्ता से प्यार है और वह नहीं चाहेंगी कि उन्हें बलपूर्वक हटा दिया जाए। पर एक समय आएगा और मुझे विश्वास है कि अवश्य आएगा, जब श्रीमती गांधी की उपयोगिता समाप्त हो जाएगी और स्वभावतः उनकी जगह ऐसा व्यक्ति वांछनीय समझा जाएगा जो कम्युनिस्टों के रंग में गहरा रंगा हो और स्वेच्छा से उनकी कठपुतली बनने को तैयार हो। तब श्रीमती गांधी उस समय असहाय होंगी। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि यह सब अवश्य होगा। शायद जनता विरोध में खड़ी हो जाए, मेरा प्रतिकार करे और स्वयं सत्ता हथिया ले।

इसके अतिरिक्त अन्य संभावनाएं भी हो सकती हैं। किन्तु तब उन कांग्रेसजनों का क्या होगा जो सही अर्थों में कांग्रेसी हैं? उन्होंने इतनी बुजदिली से क्या समर्पण कर दिया? ऐसा दिखाई देता है कि वास्तव में सच्चे कांग्रेसजन बहुत ही कम हैं। चन्द्रशेखर और रामधन की गिरफ्तारी के बाद और दूसरे युवा तुर्कों के निकाले जाने के बाद भी इन सच्चे कांग्रेसजनों में विद्रोह करने का साहस नहीं रहा। बाकी अधिकांश का अपना कोई आदर्श और विचार धारा नहीं थी। वे केवल व्यक्तिगत लाभ उठानेवाले तथा जी हजूरी करनेवाले हैं। श्रीमती गांधी उनसे काम लेंगी और उन्हें बाद में ठुकरा दिया जाएगा। किन्तु जगजीवन राम चौहान स्वर्ण सिंह जैसे वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं का क्या होगा? मुझे विश्वास नहीं होता कि श्रीमती गांधी की तरह वे भी लोकतंत्र के दुश्मन हैं। शायद उनमें भी साहस की कमी है और वे अपना पद खोकर जेल में बन्द होना नहीं चाहते, या फिर शायद वे समय काट रहे हैं। पर मैं नहीं मानता। एक कारण और भी है। वे आपस में ही संगठित नहीं हैं। किन्तु मैं उनकी मौन स्वीकृति से क्षुब्ध हूं।

क्या भारत भी दूसरा पाकिस्तान या बंगला देश बन जाएगा? यह कितने शर्म की बात होगी। इन देशों के पास कोई गांधी नेहरू पटेल, राजेन्द्र प्रसाद, मौलाना आजाद या राजगोपालाचार्य नहीं थे। क्या इन महापुरुषों का कार्य मिट्टी में मिल जाएगा? ऐसा विश्वास नहीं होता, इसलिए मैंने कल कहा था कि भारतीय लोकतंत्र गर्त से फिर उठेगा।

जुलाई, 23

जीवन विफलताओं से भरा है
सफलताएं जब कभी आईं निकट

दूर ठेला है उन्हें निज मार्ग से
तो क्या वह मूर्खता थी ?
नहीं !
सफलता और विफलता की परिभाषाएँ भिन्न हैं मेरी
इतिहास से पूछो कि वर्षों पूर्व
बन नहीं सकता प्रधानमंत्री क्या
किन्तु मुझ क्रान्तिशोधक के लिए
कुछ अन्य पथ ही मान्य उद्दिष्ट थे
पथ त्याग के, सेवा के, निर्माण के
पथ संघर्ष के, सम्पूर्ण क्रान्ति के
जग जिसे कहता विफलता
थी शोध की वे मंज़िलें
मंज़िलें वे अनगिनत हैं
गन्तव्य भी अति दूर है
रुकना नहीं मुझको कहीं
अवरुद्ध जितना मार्ग हो।
निज कामना कुछ है नहीं
सब है समर्पित ईश को
तो विफलताओं पर तुष्ट हूँ अपनी
और यह विफल जीवन
शत शत धन्य होगा
यदि समानधर्मा प्रिय तरुणों का कंटकाकीर्ण मार्ग
यह कुछ सुगम बना जाए!

जुलाई, 25

पिछले दो दिनों में कुछ लिखने की इच्छा नहीं हुई थी।

भारतीय लोकतंत्र पर किया गया प्रत्येक आघात मुझे अपने ऊपर किया गया आघात लगता है। मैंने अपने दिल को टटोला है और मैं सच्चाई से कह सकता हूं कि यदि मेरी अन्त में मृत्यु भी हो जाए तो मुझे इसकी तनिक भी परवाह नहीं है। किन्तु मैं यह अवश्य चाहूंगा कि मेरे अज़ीज़ मेरे अन्तिम समय मेरे पास रहें। बहुत पहले ही मैंने यह निर्णय लिया था कि यदि मेरे अज़ीज़ मेरे पास उस समय न भी हुए तो भी मेरी मृत्यु शान्तिमय होगी। हमारे लोकतंत्र पर ये जो गहरी परछाइयां पड़ रही हैं इनसे मेरा दिल रोने लगता है। मैं समझता हूं कि हृदय के इस रुदन के कारण ही मेरे स्वास्थ्य में सुधार नहीं हो पा रहा। आज प्रातः किए गए ई० सी० जी० में फिर अस्थायी स्पंद (एक्टापिक बीटस) का पता चला है और मुझे फिर से डायलिनटाइन में कर दिया गया है।

कल राजा आए और तारकुंडे के कनिष्ठ विमल दाव बाद में आए। मुझे अलग से अकेले रखने के विरुद्ध वे उच्च न्यायालय में याचिका कर रहे हैं और उनकी प्रार्थना है कि मुझे स्वीकार्य सहवास की अनुमति दी जाए।

मैंने संघ के गृह सचिव से प्रार्थना की है कि चंडीगढ़ की बजाय बिहार या किसी समीपस्थ स्थान पर मुझे स्थानान्तरित कर दिया जाए। लाल बाबू[1] कलकत्ता से आए थे और राजा[2] बम्बई से। दोनों ही अभी तक यहां से दूर थे। मैं बाबू जी[3] से मिलना चाहता हूं और वह भी मुझसे मिलना चाहती हैं। किन्तु यहां से पटना कितनी दूर है और यात्रा कितनी कष्टप्रद!

आज मैं केवल यह ही लिख सका हूं। कल शायद मन बदल जाए और मैं कुछ और लिख पाऊं!

1 लाल बाबू शिवनाथ प्रसाद का उपनाम जयप्रकाश की दिवंगत पत्नी प्रभावती देवी के भाई।

2 जयप्रकाश के छोटे भाई राजेश्वर प्रसाद जो बम्बई में रहते हैं।

3 बाबूजी—जयप्रकाश की छोटी बहन का घर का नाम।

जुलाई, 26

आज जेल में मुझे पूरा एक महीना बीत चुका है। मैं यह कहना चाहूंगा कि यह एक महीना एक वर्ष के बराबर था। शायद ऐसा इसलिए महसूस हो रहा है कि पिछले 30 वर्षों पूरा सही नहीं तो 29 वर्ष में जेल न जाने के कारण जेल जाने की आदत में ही फर्क पड़ गया है। इतिहास में इन्दिरा का शासन बहुत सी उपलब्धियों या उनके अभाव के कारण याद रहेगा। सबसे प्रसिद्ध उपलब्धि जनतंत्र की हत्या है। मुझे यह इसलिए भी याद रहेगा (कुछ महीने या कुछ वर्ष मुझे जीवित रहना है) कि स्वतंत्र भारत में यह एक ऐसा शासन था जिसमें मैंने पहली बार आंसू गैस लाठियों की चोटों (सी० आर० पी०) और जेल-यातना का अनुभव किया। ब्रिटिश शासन के अधीन मैंने व्यक्तिगत रूप से आंसू गैस अथवा लाठी प्रहार का अनुभव नहीं किया था और अप्रैल 1946 में आगरा की सेंट्रल जेल से रिहाई के बाद मुझे कभी भी नहीं गिरफ्तार किया गया न ही जेल भेजा गया। एक महीना एक वर्ष के बराबर लगने का कारण एक और भी था मुझे विश्वास है—मेरा अकेलापन। जेल के दूसरे साथियों के साथ शायद स्थिति और होती।

किन्तु आज मैं यह बात लिखने नहीं बैठा हूं। यह कुछ और ही महत्त्व की बात है यद्यपि प्रत्येक विवेकी भारतीय, मेरा अनुमान है उस परिणाम पर पहले ही पहुंच चुका होगा जिसके संबंध में मैं नीचे लिखने जा रहा हूं।

प्रधानमंत्री के लिखे मेरे पत्र और बाद की दो दिनों की टिप्पणियों में स्पष्ट हो गया होगा कि उन्होंने इस ढंग की कार्यवाही उस समय की जब उनके प्रधानमंत्री पद का खतरा पहुंचा। केवल इस बात ने ही निर्णय लेने पर विवश किया। किन्तु मुझे विश्वास है कि इन्दिराजी की पार्टी में भेस बदलकर काम कर रहे कम्युनिस्टों (सी० पी० आई) और इन सबके पीछे सोवियत के ऐजेंटों

न इस दश मे 25 जून से पूव लोक्तत्र के स्थान पर तानाशाही पद्धति लागू करने के लिए एव विस्तत कायक्रम तैयार किया होगा। इन तीना—प्रधानमत्री, काग्रेस म छदमवेशी कम्युनिस्टो तथा सी० पी० आई०—के लिए लोकतत्र एक अभिशाप था और वे अपन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कई वप पूव योजनाए तयार कर रहे होगे —'पहल सामाजिक लोकतत्र' और बाद म कम्युनिस्ट पार्टी का नग्न शासन जिसके पीछे बडी सावधानी स रूसी सरक्षण भेस बदलकर काम कर रहे होगे।

एक योजना क स्थान पर अवश्य दो योजनाए होगी। एक जिसकी इदिराजी सहायक है और लोगो को विश्वास कराया जाएगा कि य उनकी योजना है इस योजना म इदिराजी मत्यु पयन्त हावी रहेगी। दूसरी योजना रूस की है जिस सम्बन्ध म सी० पी० आई० न यह विश्वास दिला रखा है कि यह उनके विद्वान नताओ की दन है। इस योजना की जानकारी इन्दिराजी को नहा है यद्यपि इसके सम्बध म उन्हे कुछ निजी शकाए अवश्य होगी। इस सम्बध म काग्रेस म कम्युनिस्ट छदमवेशियो को भी मालूम नही है सिवाय कुछ व्यक्तियो के जिन पर सोवियत नेता विश्वास रखते है और जिन्होन अपनी गहरी गतिविधियो मे सी० पी० आई० यहा तक कि सोवियत नेताओ स भी कभी हमदर्दी नही दिखाई। कुछ मौका पर तो वे समाजवाद की पतक भूमि के प्रति भी आलोचक—यहा तक कि विरोधी दिखाई देगे।

बाद वाली योजना उस समय लागू की जानी थी जब सत्ता रूस सामाजिक लोकतत्र स अनावत कम्युनिस्ट तानाशाही के हाथो शक्ति परिवर्तित की जानी थी। तब बहुत स बुद्धिजीवियो का माथापच्ची करना पडगा यद्यपि सामाजिक लोकतात्रिक अवधि म अधिक माथापच्ची इस प्रकार का अशिष्ट मामला नही होगा।

सोचने की बात यह है कि क्या यह योजना अथवा ये योजनाए सफल हागी ? मुझे इसम बहुत सदह है। लेकिन अच्छा यह

होगा कि इस समय इस पर विचार न करें। किसी भी स्थिति में कुछ समय के लिए इस देश को नरक से गुजरना होगा।

प्रश्न यह है कि क्या हम इस विपत्ति से बच सकते थे? इस विषय पर पहले भी मैंने बातचीत की है। फिर भी यह विषय बार बार उठ खड़ा होता है। यदि हम अच्छे लडकों की भांति व्यवहार करते, प्रस्ताव पास करते और प्रत्यावेदना सहित उच्च सत्ताधारियों के पास पहुंचते होते तो हम उक्त परिस्थितियों का परिहार कर सकते थे। मुझे हैरानी है कि क्या अनुशासन पर्व का सही अर्थ है? मुझे स्मरण है कि सामाजिक और आर्थिक अन्याय के प्रति आन्दोलन करते समय विनोबाजी ने हमें परामर्श दिया था कि हम सरकार के विरुद्ध अपना आंदोलन न करें। उनका तर्क यह था कि जबकि अमरीका फिर से पाकिस्तान को सैनिक शस्त्र दे रहा है और चीन भी मदद दे रहा है (सैनिक अस्त्र शस्त्र की बजाय शस्त्रों से अधिक) पाकिस्तान में युद्ध होने की संभावना है इसलिए सरकार के विरुद्ध आन्दोलन देश को कमजोर करेगा। इसलिए सरकार के विरुद्ध आन्दोलन ठीक नहीं है। मैंने भी अपने तर्क पेश किए। इन्हें कुछ चुने हुए व्यक्तियों में सर्वसेवा संघ द्वारा प्रसारित हमारी वार्ता में देखा जा सकता है। किन्तु इससे न तो विनोबाजी ही प्रेरित हुए और न ही मैं।

किन्तु अब स्थिति क्या है? पाकिस्तान के साथ तो युद्ध नहीं हुआ, किन्तु भारतीय लोकतन्त्र की खुलेआम, पूर्वनियोजित ढंग से भयानक हत्या हो गई। विनोबाजी ने लेशमात्र भी इसका इशारा नहीं दिया था। मैं हैरान हूं कि एकदलीय तानाशाही को क्या वे स्वस्थ अनुशासन का मार्ग समझते हैं? यह शुद्धिकरण की अग्नि है जिसमें से देश को विशेषकर मोरारजी देसाई सिद्ध राज जैसे व्यक्ति तथा अन्य-अन्य व्यक्तियों को अवश्य गुजरना है ताकि अपने शत्रुओं का सामना करने तथा नैतिक, भौतिक और आध्यात्मिक आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए देश काफी शक्तिशाली बन सके।

अत यदि पूरे देश को विनाग म डुबानवाली स्थिति के सामन सभी शिष्टतापूवक व्यवहार करें विपक्षी गुमराह मर्वोदयी काय कर्ता विद्यार्थी और दूसरे युवावग और जनता स्वय सब चुप रहते तो चीजें सुरक्षित रहती ! किन्तु तब लोकतन्त्र किस उपयोग का होता ! लोकतन्त्र मे मामाजिक सास्कृतिक तथा राज नतिक परिवतन लाने के लिए क्या माग अपनाए जाते हैं ! क्या चुनाव ही केवल साधन हैं ! और यदि चुनाव निष्पक्ष तथा यायपूण न हो तो ? और जबकि आपकी जबान बन्द है और आपके दोनो हाथो म हथकडिया हैं तो चनाव किस प्रकार जीत सकत हैं ? आप अन्याय और दमन के विरुद्ध किस प्रकार लडेंगे और एक भ्रष्ट तथा दु शासन क विरुद्ध आप क्या करेंगे ? चुनाव तक प्रतीक्षा करें और पराजय की सभावना करें ? यदि आप इस प्रकार की सरकार का पर्दाफाश नही करेंग यदि इसके हटाए जान और बदलाव के लिए आप आदोलन नही करगे तो निवाचन म आपके जीतने के क्या मौक हैं ? इस प्रकार की सभी बठकें आदो लन हडताल बद और सविनय अवना आदि लोकतन्त्र के अस्त्र शस्त्र हैं और उनका प्रयोग अवश्य किया जाना चाहिए। यह सत्य है कि इसका प्रयोग शान्तिपूवक और कायदे से किया जाना चाहिए। लोकतन्त्र के साथ अव्यवस्था और हिंसात्मक ढग नही चल पाते। किन्तु बिहार का आदोलन शानपूण और कायदे का था और दिल्ली मे सात दिन का सविनय अवना कायक्रम भी शान्तिपूण ढग से चलाया जाना था। आपातस्थिति प्रस को दबाया जाना, मौलिक अधिकारा का निलम्बन हजारा लोगा की गिरफ्तारी और जेल, सविधान म कई सशोधन पीपुल्स रिप्रजेंटेशन एक्ट तथा मीसा के लिए कोई कारण नही था। इन सबके सम्बन्ध में मैंने प्रधानमत्री को लिखे अपने पत्र म विस्तारपूवक व्याख्या की है।[1]

1 इक्कीस जुलाई को लिखा गया। परिशिष्ट 1 देख।

इन्दिराजी ने 26 जून न जो कुछ भी किया, वह उस योजना का विस्तार है जिसके सम्बन्ध म मैंने प्रारम्भ म ही चर्चा की थी।

जुलाई 27

मेरे लिए खुशी का एक और दिन। बबुनी और अशोक आए।[1] बबुनी बहुत थकी हुई सी दिखाइ देती थी और मरे सम्बन्ध म उसे बहुत चिन्ता थी। वह रोने और चिल्लाने ही वाली थी और उसका प्रभाव मुझपर दिखाई देने लगा था किन्तु उसका ध्यान दूसरी ओर लगाने के उद्देश्य से मैं उसके बच्चों और बहनो (मेरी भतीजियों) के सम्बन्ध में बातचीत करने लगा। उसका परिणाम अच्छा हुआ और बबुनी ने अपने आपको सभाल लिया।

पटना म मेरे मित्रो और बन्धुओं तथा महिला चरखा समिति के सम्बन्ध म सूचनाए पाकर मैं प्रसन्न हुआ।

आज मेरी मन स्थिति अपने विचार और टिप्पणियां लिखने की नहीं है।

अगस्त, 6

जिसकी सभावना थी वही हुआ। उच्च न्यायालय द्वारा सभवत विपरीत निर्णय किए जाने के विरुद्ध श्रीमती गाधी ने लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम म संशोधन कराकर अपने आपको सुरक्षित कर लिया है। भारी सवधानिक सशोधन होने की सभावना है। यह सब कुछ स्वय नियुक्त नेता उद्धारक के लिए तानाशाही पूरा करने के लिए है। और यह कहा जाता है कि यह सब

1 जयप्रकाशजी की छोटी बहन—बबनी और उनके पुत्र।

अत यदि पूरे देश को विनाश म डुबानेवाली स्थिति के सामने सभी शिष्टतापूवक व्यवहार करें विपक्षी गुमराह सर्वोदयी काय कता विद्यार्थी और दूसरे युवावग और जनता स्वय सब चुप रहते तो चीज़ें सुरक्षित रहतीं। किन्तु तब लोकतत्र किस उपयोग का होता। लोकतत्र में सामाजिक सास्कृतिक तथा राज नतिक परिवतन लाने के लिए क्या माग अपनाए जाते हैं। क्या चुनाव ही केवल साधन है। और यदि चुनाव निष्पक्ष तथा यायपूण न हो तो? और जबकि आपकी ज़बान बन्द है और आपके दोनो हाथो म हथकडिया हैं तो चनाव किस प्रकार जीत सकते हैं? आप अयाय और दमन के विरुद्ध किस प्रकार लडेंगे और एक भ्रष्ट तथा दु शासन के विरुद्ध आप क्या करेंगे? चुनाव तक प्रतीक्षा करें और पराजय की सभावना करें? यदि आप इस प्रकार की सरकार का पदाफाश नही करेंगे यदि इसके हटाए जाने और बदलाव के लिए आप आदोलन नही करेंगे तो निर्वाचन म आपके जीतने के क्या मौके है? इस प्रकार की सभी बठकें आदो लन हडताल, बन्द और सविनय अवज्ञा आदि लोकतत्र के अस्त्र शस्त्र हैं और उनका प्रयोग अवश्य किया जाना चाहिए। यह सत्य है कि इसका प्रयोग शान्तिपूवक और कायदे से किया जाना चाहिए। लोकतत्र के साथ अव्यवस्था और हिंसात्मक ढग नही चल पाते। *किन्तु बिहार का आदोलन शातपूण और कायदे का था* और दिल्ली में सात दिन का सविनय अवज्ञा कायक्रम भी शान्तिपूण ढग से चलाया जाना था। आपातस्थिति प्रेस को दबाया जाना, *मौलिक अधिकारो का निलम्बन, हजारो लोगो की गिरफ्तारी* और जेल, सविधान म कई सशोधन, पापुल्स रिप्रजटेशन एक्ट तथा मीसा के लिए कोई कारण नही था। इन सबके सम्बन्ध म मैंने प्रधानमत्री को लिखे अपने पत्र म विस्तारपूर्वक व्याख्या की है।[1]

1 इक्कीस जुलाई को लिखा गया। परिशिष्ट 1 देखें।

इन्दिराजी ने 26 जून से जो कुछ भी किया, वह उस योजना का विस्तार है जिसके सम्बन्ध में मैंने प्रारम्भ में ही चर्चा की थी।

जुलाई 27

मेरे लिए खुशी का एक और दिन। बबुनी और अशोक आए।[1] बबुनी बहुत थकी हुई-सी दिखाई देती थी और मेरे सम्बन्ध में उसे बहुत चिन्ता थी। वह रोने और चिल्लाने ही वाली थी और उसका प्रभाव मुझपर दिखाई देने लगा था किन्तु उसका ध्यान दूसरी ओर लगाने के उद्देश्य से मैं उसके बच्चों और बहनों (मेरी भतीजियों) के सम्बन्ध में बातचीत करने लगा। उसका परिणाम अच्छा हुआ और बबुनी ने अपने आपको सम्भाल लिया।

पटना में मेरे मित्रों और बन्धुओं तथा महिला चरखा समिति के सम्बन्ध में सूचनाएँ पाकर मैं प्रसन्न हुआ।

आज मेरी मनःस्थिति अपने विचार और टिप्पणियाँ लिखने की नहीं है।

अगस्त 6

जिसकी सम्भावना थी वही हुआ। उच्च न्यायालय द्वारा सम्भवतः विपरीत निर्णय दिए जाने के विरुद्ध श्रीमती गांधी ने लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम में संशोधन करवाकर अपने आपको सुरक्षित कर लिया है। भारी संवैधानिक संशोधन होने की सम्भावना है। यह सब-कुछ स्वयं निर्मित तानाशाही के उद्देश्य के लिए नाना शाही पूरा करने के लिए है। और यह कहा जाता है कि यह सब

1 जयप्रकाशजी की छोटी बहन—बबुनी और उनके पुत्र।

कुछ सविधान के अनुरूप किया जा रहा है। हिटलर ने भी अपनी निर्णायक तानाशाही को कायम करने के लिए लोकतान्त्रिक प्रणाली को अपनाया था। क्या भारत को भी नरक में इसी तरह जाना होगा और फिर अधकार से निकलना होगा ? यह अब निश्चित दिखाई देता है किन्तु भारत को इसके लिए जो मूल्य चुकाना होगा वह बहुत महगा होगा। ईश्वर इसकी सहायता करे।

अगस्त 7

सम्पूर्ण क्रांति हमारा नारा है भावी इतिहास हमारा है। क्या यह अब इतिहास की विडम्बना रहेगा ! सभी जी हुजूर बुधजन और चाटुकार अवश्य ही हम पर हस रहे होंगे। उन्होंने सितारों को पाने की आकांक्षा की किन्तु नरक में गिरे इस तरह वे हमारा उपहास कर रहे होंगे। विश्व में उन्हीं लोगों ने सब-कुछ पाया है जिन्होंने सितारों को पाने की आकांक्षा की है चाहे इसमें अपने जीवन का भी उत्सर्ग करना पड़ा हो।

सम्पूर्ण क्रांति की बजाय हम विपरीत क्रांति के काले बादल देखते हैं। चारों ओर जिन उल्लू और गीदड़ो के चिल्लाने और गुर्राने की आवाजें हम सुनते हैं उनके लिए यह दावत का दिन है। चाहे रात कितनी भी गहरी क्यों न हो सुबह अवश्य होगी।

किन्तु क्या सुबह अपने आप ही होगी और क्या हम हाथ में हाथ रखे चुपचाप बैठ रहना होगा ? यदि सामाजिक क्रांति को प्राकृतिक क्रांति के बाद आना है तो सामाजिक प्रगति और परिवर्तन के लिए मानवीय प्रयासों के लिए कोई स्थान नहीं रहेगा। तो हम क्या करना है ? उत्तर है— जी हा जिन्होंने वह नारा उठाया और गीत गाया उन्हें अपने आपको कुर्बान करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए और बलिदान की वेदी का जिसने सबसे

पहला चुम्बन किया वह अवश्य ही उनका नाता होना चाहिए। भ्रम छट गए है और निणय ले लिया गया है।

कल रात देवी भगवती की पूजा करते समय मैंने इस अधकार से निकलने का कोई मार्ग पूछा था और आज प्राय यह उत्तर मुझे मिला। अपना मन शात और निश्चन्त पाता हू।

प्रभा के जाने के बाद मुझे जीवन म कोई रुचि नही रही। यदि सावजनिक काय के लिए मुझमे विशेष अभिरुचि न विकसित हुई होती ता मैं सन्यास लकर हिमालय म चला गया होता। मेरा मन भीतर म रो रहा था किन्तु बाहर स मै जीवन के नमी कार्यों म लगा हुआ था। मेरा स्वास्थ्य भी गिर रहा था। उदासी की इस घडी मे कुछ अनायास बात हुई जिसके कारण मेरे भीतर प्रकाश हुआ। मेरा स्वास्थ्य भी ठीक होने लगा और मैंने नई शक्ति और उत्साह का अनुभव किया।

1973 का अन्तिम महीना था। मैं पौनार म था। मुझे भीतर स प्रेरणा हुई कि मैं देश के युवावग का आह्वान करू। मैंने उनके नाम एक अपील की और 'लोकतत्र के लिए युवा' शीर्षक के अधीन उस समाचारपत्रों म छपने के लिए भेजा। मेरे अनुमान स बढकर इस अपील पर उत्साहवधक प्रतिक्रिया हुई।

अगस्त, 11

पहले की तरह मेरा अभी भी निश्चय वही है।[1] मैंने पत्र[2] नही भेजा इस फाड दिया गया। मैं उचित समय की प्रतीक्षा करूगा और देखूगा कि कसी स्थिति बनती है।

1 भूख हडताल पर जाने का निर्णय जो बाद में स्थगित किया गया।
2 प्रधानमत्री को उक्त निणय के सम्बन्ध में भजा गया पत्र।

अगस्त 12

मैंने फिर से समाचारपत्रों[1] का पढ़ना शुरू कर दिया है। श्रीमती गांधी लगातार मुझपर आक्रमण कर रही हैं और मुझे बद नाम कर रही हैं। वह कहती है कि मैं संसदीय लोकतंत्र का विरोधी रहा हूं और मुझे तानाशाही में विश्वास रखनेवाला बताया गया है। जितनी वह अथवा उनके साथी यह कहते हैं वे भूल जाते हैं (क) कि मैं कुछ चुनाव सुधार की मांग करता रहा हूं (जिससे चुनाव को कम खर्चीला बनाने के लिए साधन जुटाए जाएं) ताकि हमारा संसदीय लोकतंत्र अधिक लोकतांत्रिक बन सके। (ख) मैं अच्छे प्रकार के लोकतंत्र—जैसे गांधी कम्यूनीटेरियन लोकतंत्र के लिए आग्रह करता रहा हूं या यदि वह बहुत आदर्शवादी है (जोकि नहीं है) तो कुछ जर्मनी के लिस्ट सिस्टम और बहुमत प्रणाली, जैसे कि यहां है, उसका मिला-जुला रूप।

मेरी गिरफ्तारी के कुछ महीने पूर्व लोकतंत्र के लिए नागरिक संस्था के अध्यक्ष के नाते मैंने एक समिति बनाई थी जिसने राजनैतिक पार्टियां (सत्तारूढ़ कांग्रेस ने सहयोग नहीं दिया) राजनैतिक वैज्ञानिक गैर पार्टी और पब्लिक नेताओं से परामर्श किया और वर्तमान प्रणाली में सुधार करने के लिए एक रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस रिपोर्ट पर विरोधी पार्टियों ने विचार किया और उन्होंने कुछ सामूहिक प्रस्तावों पर सहमति दी। इन प्रस्तावों पर श्रीमती गांधी और उनकी पार्टी ने कभी भी ध्यान नहीं दिया।

1 जयप्रकाश जी ने समाचारपत्रों को पढ़ना बन्द कर दिया था क्योंकि विरोधी दल की आवाज़ बन्द करके सरकार द्वारा झूठ से भरा हुआ केवल एक तरफा प्रचार होता था।

जनता को और देसी प्रेस, जिसपर श्रीमति गांधी बहुत से ताने उलाहने देती रही हैं, को इसका पता है। आपातस्थिति के दौरान यदि कोई उनके झूठ और मिथ्या प्रचार का उत्तर भी देना चाहे तो कोई समाचारपत्र इसे छापने का साहस नहीं कर सकता था।

एक विदेशी समाचारपत्र (मेरे विचार में जर्मनी) के साथ साक्षात्कार में या शायद दो-तीन दिन पहले एक बयान में श्रीमती गांधी ने उनके तानाशाही पर आक्रमण करने किन्तु चीन आदि के सम्बन्ध में कुछ न कहने के लिए उनकी भर्त्सना की। क्या इससे बढ़कर और कुछ बचकाना हो सकता है? उत्तर स्पष्ट है।

लगभग प्रत्येक दिन श्रीमती गांधी जो कह रही हैं, मैं उनपर विचार करना चाहता था किन्तु इस विषय पर गम्भीरता से सोचने के उपरान्त मैं इस परिणाम पर पहुंचा कि यह केवल समय की बरबादी होगी। अच्छा यह होगा कि जब मेरी आत्मा की आवाज आएगी तो मैं अपने विचार स्वयं लिखूंगा। मुझे विश्वास है कि न भारत के लोग और न ही पश्चिम के लोकतंत्र इस बात के लिए कभी तयार होंगे कि वे श्रीमती गांधी के बयान निगल सकें। भूल में श्रीमती गांधी ने इसका अनुसरण किया और इस पर अपना गुस्सा जाहिर किया। इसका उदाहरण यह है कि विट्ठलभाई पटेल हाल में श्री ललितनारायण मिश्र की श्रद्धांजलि बैठक में वह यह कहती हुई उठी 'यदि मैं ही मार दी गई होती तो वे कहते कि मैंने अपने आपको मरवाया है।

अगस्त, 13

11 तारीख को श्रीमती गांधी की अपील और राजनारायण की क्रास अपील पर विचार हुआ। यह मामला 25 तारीख के लिए स्थगित कर दिया गया। शान्तिभूषण ने जिरह की कि कानून

मैंने फिर से समाचारपत्रों[1] को पढ़ना शुरू कर दिया है। श्रीमती गांधी लगातार मुझपर आक्रमण कर रही हैं और मुझे बद नाम कर रही हैं। वह कहती हैं कि मैं संसदीय लोकतंत्र का विरोधी रहा हूं और मुझे तानाशाही में विश्वास रखनेवाला बताया गया है। जितनी वह अथवा उनके साथी यह कहते हैं वे भूल जाते हैं (क) कि मैं कुछ चुनाव सुधार की मांग करता रहा हूं (जैसे चुनाव को कम खर्चीला बनाने के लिए साधन जुटाए जाएं) ताकि हमारा संसदीय लोकतन्त्र अधिक लोकतान्त्रिक बन सके। (ख) मैं अच्छे प्रकार के लोकतंत्र—जैसे गांधी कम्यूनीटेरियन लोकतन्त्र के लिए आग्रह करता रहा हूं या यदि वह बहुत आदर्शवादी है (जोकि नहीं है) तो कुछ जर्मनी के लिस्ट सिस्टम और बहुमत प्रणाली जैसी कि यहां है, उसका मिला-जुला रूप।

मेरी गिरफ्तारी के कुछ महीने पूर्व लोकतंत्र के लिए नागरिक संस्था के अध्यक्ष के नाते मैंने एक समिति बनाई थी जिसने राजनैतिक पार्टियां (सत्तारूढ़ कांग्रेस ने सहयोग नहीं किया) राजनैतिक वैज्ञानिक गैर पार्टी और पब्लिक नेताओं से परामर्श किया और वर्तमान प्रणाली में सुधार करने के लिए एक रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस रिपोर्ट पर विरोधी पार्टियों ने विचार किया और उन्होंने कुछ सामूहिक प्रस्तावों पर सहमति दी। इन प्रस्तावों पर श्रीमती गांधी और उनकी पार्टी ने कभी भी ध्यान नहीं दिया।

1 जयप्रकाश जी ने समाचारपत्रों को पढ़ना बन्द कर दिया था क्योंकि विरोधी दल की आवाज बन्द करके सरकार द्वारा झूठ से भरा हुआ केवल एकतरफा प्रचार होता था।

जनता को और देसी प्रेस, जिसपर श्रीमति गाधी बहुत से ताने उलाहने देती रही है, को इसका पता है। आपातस्थिति के दौरान यदि कोई उनके झूठ और मिथ्या प्रचार का उत्तर भी देना चाहे तो कोई समाचारपत्र इसे छापने का साहस नहीं कर सकता था।

एक विदेशी समाचारपत्र (मेरे विचार मे जर्मनी) के साथ साक्षात्कार मे या शायद दो-तीन दिन पहले एक बयान मे श्रीमती गाधी ने, उनके तानाशाही पर आक्रमण करने, किन्तु चीन आदि के सम्बन्ध मे कुछ न कहने के लिए उनकी भर्त्सना की। क्या इससे बढकर और कुछ बचकाना हो सकता है ? उत्तर स्पष्ट है।

लगभग प्रत्येक दिन श्रीमती गाधी जी कह रही हैं, मैं उनपर विचार करना चाहता था किन्तु इस विषय पर गम्भीरता से सोचने के उपरान्त मैं इस परिणाम पर पहुचा कि यह केवल समय की बरबादी होगी। अच्छा यह होगा कि जब मेरी आत्मा की आवाज आएगी तो मैं अपने विचार स्वय लिखूगा। मुझे विश्वास है कि न भारत के लोग और न ही पश्चिम के लोकतन्त्र इस बात के लिए कभी तयार होगे कि वे श्रीमती गाधी के बयान निगल सकें। भूल मे श्रीमती गाधी ने इसका अनुसरण किया और इस पर अपना गुस्सा जाहिर किया। इसका उदाहरण यह है कि विट्ठलभाई पटेल हॉल मे श्री ललितनारायण मिश्र की श्रद्धाजलि बठक मे वह यह कहती हुइ उठी, 'यदि मैं ही मार दी गइ होती तो वे कहते कि मैंने अपने आपको मरवाया है।

अगस्त, 13

11 तारीख को श्रीमती गाधी की अपील और राजनारायण की क्रास अपील पर विचार हुआ। यह मामला 25 तारीख के लिए स्थगित कर दिया गया। शान्तिभूषण ने जिरह की कि कानून

विचार किया जा सकता है। यह बहुत ही शानदार बात हुई है जिससे अभी भी उम्मीद दिखाई देती है। हमारे लोकतंत्र में अभी कुछ शक्ति शेष है। कोर्ट ने न्यायालय से कहा है कि 'मूलभूत संरचना' की व्याख्या की जाए। यह अच्छा है। हमारे संविधान और संसदीय लोकतंत्र को कुछ समझने वाले साधारण बुद्धि के साधारण लोगों के लिए कोई दावे की बात नहीं है कि हाल ही में किए गए संशोधन आपातस्थिति की घोषणा इत्यादि ने न केवल संविधान के मूल स्वरूप को बदल दिया है बल्कि उसका नाश तक कर दिया है।

संशोधन के सम्बन्ध में—इससे पूर्व जब मैंने लिखा था तो एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात भूल गया था। इसकी ओर मेरा ध्यान आज गया है। हमारे संविधान में प्रधानमंत्री का सीधा चुनाव नहीं है। केवल लोकसभा के सदस्य चुने जाते हैं और यह कोई भी पहले नहीं जानता कि कौन पार्टी या पार्टियां जीतेंगी और बाद में कौन पार्टी या पार्टियां अपना नेता चुनेंगी। इसका अर्थ है कि लोकसभा के सभी सदस्यों का चुनाव एक जैसा होता है और उनपर कानून भी एक जैसा ही लागू होता है। अब यदि उनमें से कोई प्रधानमंत्री चुन लिया जाता या जाती है तो उसके चुनाव को चुनौती अन्य लोकसभा की तरह क्यों नहीं दी जा सकती? प्रधानमंत्री के रूप में उसका चुनाव सीधे नहीं होता संविधान में इसकी कोई व्यवस्था नहीं है। अतः यह विशेष संशोधन केवल बेवकूफी है। श्री गोखले और केबिनेट के अन्य सदस्य प्रधानमंत्री

द्वारा उसी तरह वशीभूत किए गए दिखाई देते है जिस तरह अजगर द्वारा चूहा। प्रधानमन्त्री के चुनाव को चुनाव कानून से अलग करना मूर्खतापूर्ण होने के साथ ही कानून की नजर मे भी वैध नही है, क्योंकि प्रधानमन्त्री का चुनाव सामान्य चुनाव के बाद किया जाता है। यह कानून म भेदभाव है जैसे कि लोकसभा के एक सदस्य का दूसरे सदस्य से भेदभाव करना जो बहुत ही गैर कानूनी और अनुचित है। इस प्रकार प्रधानमन्त्री का चुनाव नही होता केवल सदस्यो का होता है और उनमे एक सदस्य प्रधानमन्त्री बन सकता है। अत किसी विशेष सदस्य के चुनाव (जो बाद म प्रधानमन्त्री बन जाता है) को चुनाव नियम और न्यायालय के अधिकार क्षेत्र से बाहर करना सदस्यो के बीच आपस म भेदभाव की नीति है।

प्रोफेसर ईश्वरीप्रसाद ने अपने मुस्लिम शासन के इतिहास म औरगजेब की मृत्यु के सम्बन्ध म लिखा है—'रोगी जिसके चारो ओर उसके सगे बन्धु हो, उसको प्यार भरी सेवा मिले जिससे उसका रोग सह्य हो जाता है। यदि वह नही मिलता तो बादशाह को अकेलापन और दर्द महसूस होता किन्तु उसे इसके लिए आवश्यक मूल्य चुकाना होगा।

दिल्ली उच्च न्यायालय ने उन्ही कारणो से, जिसकी सम्भावना थी याचिका रद्द कर दी। मुख्य विद्वान न्यायाधीशो के विरुद्ध कोई शिकायत नही है। शायद उनम से कोई भी जेल म या कारागार मे नहा रहे सम्भव है उनम से कुछ अस्पताल म रहे हो। साधारणतया जब कोई व्यक्ति अस्पताल म होता है, डाक्टरो और नर्सों के अलावा कोई एक प्रिय बन्धु या मित्र उसके पास रहता है, तो यह एक सहारा होता है उपचार म। यहा भारत के एक बहुत अच्छे

अस्पताल म डाक्टर तथा नर्से—जो सभी जगह दयालु होते हैं—उपचार के लिए आते और जाते हैं। अस्पताल स बाहर डाक्टर और नस भी साथी हो सक्त है किन्तु आवश्यकता स अधिक व एक मिनट भी नही रुक सक्त और व सिवा मेरे स्वास्थ्य के और किसी बात पर चर्चा नहा करगे। सिवा निदेशक के जस ही कोई डाक्टर या कोइ नस मेरे कमर म आते है उनके पीछे ही जेल या पुलिस (सी० आई० डी० या सी० बी० आई०) क अधिकारी आते हैं। इस अस्पताल म कई कमरा पर उहाने कब्ज़ा कर रखा है। उनका एक प्रतिनिधि (शायद प्रधान सिपाही) 24 घटो मरे दरवाज़े पर (बारी बारी स) खडा रहता है। यह स्थिति प्रशासनिक अधिकारियों की भी है जो प्राय मुझस मिलन आत है। उनकी जबान भी बन्द है और वे केवल वही बात करेंगे जो उनकी ड्यूटी कहती है। इस तरह अस्पताल रहत हुए भी मरी अच्छी देखभाल हो रही है। इस तरह यद्यपि कई व्यक्ति मरे पास आत जात हैं पर वस्तुत मैं अपन आप को अकेला पाता हू। प्रत्यक दिन दनिक पत्रो म कुछ न कुछ हाना है जो मुझ पूरी तरह परेशान कर दता है—आम तौर पर य श्रीमती गाधी की आधी सच्च और आधी झूठी बातें होती है। मरे साथ यदि एक भी राजनतिक बन्दी होता तो उस इस तल के कई कमरो म स कम स-कम एक म तो रखा ही जा सकता था। हम आपस मे बातें कर सक्त थ और अपने भाव व्यक्त कर सक्त थ। यह सब मेरे लिए दवा की बहुत सी टिकिया आराम और नीद की गोलिया के बराबर होता। कुछ दिन पूव तक अधिक निश्चित रूप स कहे तो उस दिन तक जिस दिन मैंने य पष्ठ लिखे मैंन निणय ने लिया था कि श्रीमती गाधी जो कहगी मैं उसपर टिप्पणी नही दूगा। मैं इतना परेशान हा जाता था कि कई बार मुझे नींद की गोलिया के लिए टलीफोन करना पडता किन्तु अब मैंने उस स्थिति को पार कर लिया है। फिर भी एक साथी की कमी मैं बहुत शिद्दत से महसूस कर रहा हू जिसके

साथ मन की खुली बातें की जा सकें। मेरे किसी बन्धु के मेरे साथ रहने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। अत यह मेरे लिए एकान्त कारावास है। सिवा कुछ समय के लिए जब मुझे पहर म थोडी दर के लिए मर के लिए ले जाया जाता है, बाकी दिन और रात मुझे अपने कमरे मे बन्द रहना पडता है।

ब्रिटिश शासन के दिनो म मैंने वर्षो जेल म बिताए हैं। जब तक किसी को तनहाई की सजा न दी गई हो, जब तक तालाबन्दी का समय न आए उसे स्वतन्त्रता होती थी कि अपने बाड म अपने साथी बन्दियो स मिले, खेल खेले बातचीत करे, इकट्ठे पढें और जेल के नियमो के अधीन जो कुछ भी करना चाहे करें। जब कोई बीमार हो जाता था और जेल अस्पताल म भेजा जाता था तो वहा पर दूसरे वार्डों के साथी बन्दी भी मिलते थे और प्रसन्नता होती थी। केवल लाहौर जेल म कुछ महीनो के लिए मुझे एकान्त कारावास म रखा गया था। इसी बीच व्यक्ति स्वतन्त्रता की याचिका दर्ज की जाती सरकार को पत्र इत्यादि लिखे जाते और फलतोगत्वा एक दिन हम सबकी प्रसन्नता और आश्चर्य म श्री राममनोहर को मेरी कोठरी म लाया गया। (इन्हे मेरे कुछ महीनो बाद लाहौर किला म लाया गया था।) इसके बाद—जब तक हम दोनो को इकट्ठे आगरा सेंट्रल जेल नही स्थानान्तरित कर दिया गया—हम प्रतिदिन एक घटा मिलते थे। आगरा जेल मे हम एक बड कमरे या बरक मे इकट्ठे रखा गया।

अत विद्वान न्यायाधीशो की यह धारणा है कि अस्पताल म रहने के कारण सर्वप्रथम एकान्त कारावास नही था, मिथ्या है। किन्तु इनके लिए अधिक मात्रा म मानवीय सहानुभूति तथा कल्पना की आवश्यकता है। मैं यह नही कह रहा हू कि विद्वान न्यायाधीशो मे इनम स किसी गुण की कमी है किन्तु जिन धारणाओं पर उन्होंने मेरी याचिका रद्द कर दी, व गलत हैं।

इस टिप्पणी स ऊपर ईश्वरीप्रसाद के मुस्लिम शासन का

इतिहास' मे उक्ति है। जहा एक शहनशाह तनहाई महसूस कर सकता था, वहा मुझ जैसा साधारण व्यक्ति भी तो महसूस कर ही सकता है।

यह उल्लेख भी न्यायसगत होगा कि औरंगजेब को अपने उच्च पद के लिए इतनी कुर्बानी नही करनी पडी। अपने पिता को जेल में बन्द करने अपने भाई और भतीजो को मारने जैसे उसके बुरे काम थे, ऐसा प्रोफेसर ईश्वरीप्रसाद ने स्वय कहा है। औरंगजेब को अपने लडके और लडकियो को अपने निकट लाने में भरोसा नही था। उसकी रक्षा के लिए उसने अपने प्रिय पुत्र कम्बख्श[1] को दूर भेज दिया था। औरंगजेब का अकेलापन उसका अपना चुना हुआ था पर मुझ पर तो यह थोपा गया है और यह बहुत कष्टप्रद है। यह सत्य है कि मैं मर नही रहा यद्यपि किसी हृदय के रोगी के सम्बन्ध मे कुछ नही कहा जा सकता किन्तु इस समय जबकि व्यक्तिगत तानाशाही को गत पाताल मे देश को फेका जा रहा है इस तरह की खामोशी मेरे लिए मौत से कम नही है।

अगस्त 15

आज 15 अगस्त है। हमारी स्वतन्त्रता के 28 वर्ष पूरे हो गए हैं। विदेशी शासन से भारत स्वतन्त्र है यद्यपि जिस मार्ग पर श्रीमती गाधी चल रही हैं, वह इस देश को अवश्य ही रूस के प्रभाव-क्षेत्र में ले आएगा। उस भयानक भविष्य के सम्बन्ध मे आज के ट्रिब्यून मे श्री के० पी० एस० मेनन का लेख है यह उसका एक सूचक है। मुझे पूरा विश्वास है कि भारत के लोग इसे कभी भी स्वीकार नही करेंगे।

स्वतन्त्रता की लडाई केवल राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए नही

1 कम्बख्श औरंगजेब का प्रिय बेटा।

लड़ी गई थी। स्वतंत्र भारत में लोकतंत्र की स्थापना हमारा महत्त्वपूर्ण आदर्श था। इस आदर्श की पूर्ति के लिए ही हमारे संविधान सभा ने भारतवासियों की ओर से 26 नवम्बर, 1949 को एक लोकतंत्र भारत का संविधान बनाया था।

क्या उस लोकतंत्र का आज कुछ शेष है ? यह सब इतना कृत्रिम और दुःस्वप्न सा लगता है कि राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री को बार-बार लोगों को आश्वासन देना पड़ता है कि आपातस्थिति एक अस्थाई मामला है कि भारत केवल लोकतंत्र से ही एक रह सकता है आदि-आदि। आज स्वतंत्रता दिवस संदेशों में इन दोनों महानुभावों ने इन आश्वासनों को दोहराया है।

किन्तु ये निकम्मी और ओछी दलीलें जिनके आधार पर आपातस्थिति की घोषणा की गई थी और बाद में संविधान में संशोधन किए गए इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ये दलीलें केवल भुलावा देने के लिए हैं। जहां तक श्रीमती गांधी का सम्बन्ध है, वह लोकतंत्र में विश्वास नहीं करतीं और पूरी कोशिश करेंगी कि फिर से लोकतंत्र कायम न होने पाए। देखना यह है कि लोकतंत्र में विश्वास रखनेवाली शक्तियां इस देश में कितनी देर तक इस षडयन्त्र को चलने देंगी। मैं यदि भारत के लोगों और युवा वर्ग को ठीक प्रकार समझाता हूं तो मुझे तनिक भी संदेह नहीं है कि वे इसे कभी नहीं होने देंगे।

इस आशा के समर्थन में एक और कारण भी है। हम देखते हैं कि प्रधानमंत्री बार बार कह रही हैं कि भारत में अनेक रूपताओं उसके बड़े क्षेत्र, बहुत बड़ी जनसंख्या, राष्ट्रीय एकता के लिए देश में केवल लोकतांत्रिक व्यवस्था ही संभव हो सकती है। यह बात उन्होंने आज भी कही है। हम आज श्रीमती गांधी की तानाशाही के नीचे हैं किन्तु इतिहास इसका गवाह है कि अकेले केन्द्र से पूरे भारत पर शासन करने के प्रयास कभी भी पूरी तरह सफल नहीं हुए और न ही इस प्रकार के (केन्द्रित) राज्य कभी

देर तक चल हैं। एक बादशाह के अधीन हमेशा ही राजा और सुल्तान रह हैं जो अपन अपन क्षेत्र म कमोवेश शक्तिशाली तथा लगभग प्रभुत्व-सम्पन्न हुए हैं। जस-जस समय बीतता गया विभिन्न (भारतीय) राज्यों की फिर सीमाए सिकुडती गइ या कम्ती गइ, किन्तु कुछ शताब्दियों के बाद ही य राज्य फिर अलग अलग हो गए।

यह उस समय की हालत है कि जब वयस्क मताधिकार पर आधारित लोकतंत्र या नागरिक स्वतत्रता तथा प्रत्येक नागरिक के अधिकार दिए जाने की अवधारणा नही थी और न ही उन दिनो भारत की जनसख्या इतनी अधिक थी। मैं नही समझता कि इन्दिराजी म कोई ऐसी विशप खूबी है या उनकी पार्टी मे ऐसी कोई खास बात है जिससे हम विश्वास होन लग कि उनका इस विशाल देश म लम्बी अवधि तक निरकुश राज चलता रह।

ऊपर मैंने श्रीमती गाधी की पार्टी की बात की है। इस पार्टी मे खुदगर्ज और बुजदिल लोग भरे पडे हैं। अधिकाश लोगो म पूरी तरह भ्रष्टाचार भरा पडा है। खुदगर्जी के कारण उनमे लगातार आपसी झगडे होते रहते है। जातिवाद भी उनम है। तो इस प्रकार की पार्टी के साथ क्या तानाशाही टिकी रह सकती है? इन्दिराजी ने काग्रेस म सभी सच्चे और साहसी लोगो को बाहर निकाल दिया है।

विरोधी पार्टिया यदि एकजुट म होती तो काग्रस का शासन बहुत पहले समाप्त हो गया होता। तानाशाही की आग से निकलने के बाद मुझे विश्वास है कि विरोधी दल एक होंगे। वस्तुत आपातस्थिति की घोषणा करने का एक यह भी कारण था कि गुजरात म जनता दल की विजय से श्रीमती गाधी सोचने लगी कि यदि राष्ट्रीय स्तर पर भी विरोधी दल का सगठन हो गया तो लोकसभा के आगामी चुनाव वह जीत नही पाएगी। इसके अतिरिक्त बिहार आदोलन का प्रभाव दूसरे राज्यो पर भी पड

रहा था। देश भर मे मेरे भ्रमण की सफलता से भी शायद वह डर गई हो। ऐसी स्थिति म उन्होंने शायद यह निणय ले लिया हो कि उनका हित लोकतन्त्र को समाप्त करने म ही है। फिर भी जसा कि मेरी ऊपर की बातो से स्पष्ट होगा वह अपने इस दानवी प्रयास म कभी भी सफल नही होगी।

अगस्त 16

बगलादेश स भयानक समाचार मिला है। विश्वास नही होता। किन्तु यह दूसरी सभी पार्टिया पर प्रतिबंध लगाकर मुजीब द्वारा स्थापित किए गए व्यक्तिगत और पार्टी तानाशाही का परिणाम है। उस समय दिल्ली मे यह अफवाह बडी जोरो पर थी कि मुजीब द्वारा अपनाइ गइ सारी रणनीति दिल्ली म मुजीब के विश्वासपात्र व्यक्तियो द्वारा ही तय की गई थी। उस समय मुजीब न भी यही मिलते-जुलते बहाने किए थे जो बहाने अब श्रीमती इन्दिरा कर रही हैं। मुजीब के सनिक विद्रोह के समय यह अफवाह थी कि भारत भी बगलादेश के माग पर जाएगा, अर्थात यदि श्रीमती गाधी की चलती रही तो भारत भी आज मुजीब की तानाशाही और लोकतन्त्र के बीच जसी स्थिति म रहेगा। मुझे भारी शकाए थी कि श्रीमती गाधी भी उसी माग पर आगे बढेंगी। मैंने पिछले वाक्य म शब्द 'भी' कहा क्योंकि वह सेना का विद्रोह था। ईश्वर जानते हैं कि य सेना का विद्रोह था या क्या था, किन्तु खाडकर मुश्ताक अहमद स्वय एसी स्थिति पदा नही कर सकते थ। सी० पी० आई० का कहना है कि अमरीकियो न यह घणित चीज की है। रूसी सम्भवत स्वय मौन रहेंगे किन्तु व अपन व्यवहारों से सारी दुनिया विशेष रूप स एशिया मे यही साबित करेंगे कि सारा दोष अमरीकी पूजीवाद का है। मैं आशा करता हू कि ईश्वर

इन्दिराजी का इन नाजुक क्षणों म मार्गदर्शन करें ताकि वे यह अनु-भव करने लगें कि तानाशाही इस देश को बरबाद कर देगी तथा लोकतन्त्र जिसके सम्बन्ध म उन्होंने कहा कहा कि भारत को इसम दूर रखने के लिए यह आवश्यक है कि उसे फिर से लागू किया जाए। बगलादेश की घटनाओ के कारण जो इस देश के लिए खतरे पदा हुए हैं उनका तभी सामना किया जा सकता है, यदि लोगो को उनकी स्वतन्त्रता वापस दी जाए और उन्हें खुली सास लेने की अनुमति दी जाए। स्वतन्त्रता को दबाने इस घुटन वाली स्थिति का और आगे बढाने के प्रयासो स केवल भयानक परिणाम ही निकल सकते हैं। य परिणाम कई प्रकार के हो सकते हैं, जिनकी कल्पना करना कठिन नहीं है। आवश्यक यह है कि उन्ह न होने दिया जाए। क्या श्रीमती गाधी इस स्थिति को सभालेंगी? अभी तक वह उन स्थितियो म काय करने म अयोग्य सिद्ध हुई हैं जिनम उनकी अपनी स्थिति डावाडोल हुई है। क्या जब देश एसी दशा म है वह काय करेंगी?

अगस्त 17

मेरे विचार म कल लिखते समय मैंने बगलादेश म हुई विकट घटनाओ के प्रति न्याय नही किया। श्री मुश्ताक अहमद ने यद्यपि पिछले सरकार के भ्रष्टाचार और स्वतन्त्रता को मारने की बात कही है, और इन दोनो मे सुधार करने का वचन दिया है। इसके सम्बन्ध म तो इतिहास ही बताएगा। पर यदि वे सेना के हाथो वस्तुत खिलौना बने हुए है तो मैं नही जानता वे कसे कर पाएग!

मुझे वह समय याद है जब भुट्टो द्वारा छोडे जाने पर मुजीब अपने देश को लौटे और देश की बागडोर अपने हाथ म ली। वह

बगबधु वन गए—यहा तक कि बगपिता ! वे अपने देश वासियो के प्रिय नेता थ । उस समय मुझे याद है कि मैंने उन्हे दो तीन पत्र लिखे थे य पत्र लिखत समय मेरी आखो से आसू बह रहे थे । इनमें स उन्होंने एक या दो का उत्तर दिया । श्री सेन के माध्यम से उन्होने मुझे बडे प्रेम सदेश भेजे । उन दिनों मुजीब के बारे म मेरी अच्छी धारणा और उनके प्रति आस्था थी, किन्तु राज्य सभालने के और एक पार्टी शासन लागू करने के बाद, उनके प्रति मेरी सारी श्रद्धा समाप्त हो गई । मैं उनकी कठिनाइयो को समझता था लेकिन यदि उनमे योग्यता होती और, जवाहरलाल का जिस प्रकार का जनता पर प्रभाव था उसी प्रकार उनका अपनी जनता पर था यह देखत हुए लोकतंत्र को कुचले बिना वे स्थिति पर काबू पा सकते थ किन्तु उन्होंने नासमझी का व्यवहार किया और असफल रहे । कल जब मैंने पढा कि उनकी हत्या कर दी गई है तो मुझे दु ख पहुचा किन्तु कोई सदमा नही पहुचा और न अपने हृदय मे और उनके लिए इतना अधिक विछोह भाव हुआ ।

मैं मुजीब से स्वय कभी नही मिला । मुजीब को छोडकर मैं प्रान्तीय सरकार के समय बगलादेश के दूसरे राजनतिक और सनिक नेताओ को निकट से जानता था । मैं खोडकर मुश्ताक अहमद को भी जानता था । मुझे याद है कि व औसत कद के छरहरे-स व्यक्ति थे जिन्होंने हमेशा गैर बगालियो का सरक्षण किया । उस समय यह खुली बात थी कि ताज्जुद्दीन अहमद और शायद नजरुल इस्लाम के साथ उनके अच्छे सम्बन्ध नही थे । बगलादेश से लौटने के बाद सेन ने मुझे बताया कि मुस्ताक अहमद मुजीब से अलग हैं क्योंकि उन्हे विदेश मत्रालय या दूसरा बराबर का महत्त्व पूर्ण केबिनट पद नही दिया गया हालाकि भारत म अपने प्रवास के दौरान व मुजीब क इतन कट्टर प्रशसक थे जितने कि दूसरे नेता । सेन ने यह भी बताया कि अवामी लीग म, तथा आम तौर पर देश भर म, यदि कोई मुजीब जसे नेता को चुनौती दे सकता

है तो वह खाडकर मुश्ताक अहमद ही हैं। कौन जानता था कि यह चुनौती इस रूप म फलीभूत हागी ! एक अन्तिम शब्द। मैंने अहमद के सम्बन्ध म दा धारणाए बनाइ थी कि कुछ सीमा तक उनका झुकाव पश्चिम की आर है और दूसरा की तुलना म धर्मनिरपेक्षता की दृष्टि स वह कुछ अधिक मुसलमान हैं।

बगलादेश के शासन परिवतन तथा शकाआ और प्रश्ना के सम्बन्ध म शायद समय ही कुछ उत्तर देगा। मुझे सदह है पर भ्रम नही है।

अगस्त 18

आज समाचारपत्रा म पढकर मुझे कुछ राहत मिली है कि बगलादेश ने अभी तक अपना सरकारी नाम लोक गणतन्त्र रखा हुआ है और उसे बदलकर इस्लामी गणतन्त्र नही रखा। कुछ समय के लिए धमनिरपक्षवाद सुरक्षित दिखाई देता है। अहमद की सरकार म दो हिन्दू मन्त्री हैं—मुजीब की सरकार म भी दो थे। मुझे प्रसन्नता है कि राष्ट्रीयता भी कायम है। बगलादेश किसी दश का पिछलग्गू नही बनने जा रहा है और न ही कोई ऐसी सभावना दिखाई दती है कि बगलादेश पाकिस्तान के साथ किसी प्रकार के सवधानिक सम्बन्ध मे परिसध या किसी अय रूप म बध रहा है। जसा कि अहमद को मैं समझ पाया हू वह भारत के साथ मित्रता रखना चाहेगे किन्तु इस सम्बन्ध मे किसी प्रकार की अभिन्नता या असमानता नही चाहगे।

मुजीब के दश के चार आधारभूत तत्त्व अथवा सिद्धान्त थे उनमे से दो थे लोकतन्त्र और समाजवाद। मुझे सदेह है कि नाम मात्र के रूप म दोना बच पाएगे। लोकतन्त्र का विनाश तो मुजीब ने स्वय ही कर दिया था। अब प्रश्न उसके बचने का नही बल्कि

पुन स्थापन का है। वस्तुत भारतीय काग्रस की तरह बगलादेश का समाजवाद' केवल नारा है और इसके सिवा यह कुछ नही है।

जसी कि कल मैंने भविष्यवाणी की थी कि रूस और रूसी प्रेस शात हैं और किसी तरफ अपना मन व्यक्त नहीं कर रहे है किन्तु यूरोप म कम्यूनिस्ट प्रस की प्रतिक्रिया मरी भविष्यवाणी क अनुसार स ी है। एल० ह्वयूमेनाइट न बहुत ही खुलकर कहा है कि यह काम सी० आई० ए० का है। पूर्वी यूरोप के देशा के समाचारपत्र अलग अलग विचार के हैं। कुछ देश इस अमरीका की गोपनीय सहायता के कारण दक्षिण पथी क्रान्ति कहते हैं और दूसर चीन द्वारा प्रोत्साहित उग्रवादियो का काय कहत हैं। केवल युगोस्लाविया न इसे गुट निरपक्षता नीति, जिसके मुजीव हिमायती थे, उसकी प्रभावहीनता पर खेद प्रकट किया है। मुझे ट्रिब्यून पत्न को दिया जाता है। इसमें पश्चिमी देशा के पत्रा क समाचार नही होत, कि तु एसा लगता है कि या तो उनका कुछ पता नही है या उन्होंने अपना कोई मत निश्चित नहा किया है। इस्लामी गणतंत्र की गप्प, अमरीकन प्रस एजेंसी की करतूता का पता नहीं कि अमरीकन इस प्रकार की शरारत के लिए क्या हमशा तयार रहत हैं ? मैंने अभी तक भारतीय समाचारपत्रा के विचार नहा पढ हैं। अन्य बाता की तरह य विचार भी सेंसर होत हाग। इसका अथ यह है कि सी० आई० ए० पर उगला उठान वाले विचार तो प्रकाशित हाेंगे किन्तु शायद कोई सतुलित दृष्टिकोण नही। विश्व म प्रत्येक स्थान पर सी० आई० ए० तथा के० सी० बी०, दोना ही सक्रिय और सक्रिय हैं। भारत म क० सी० बी० बहुतर काम कर रहा है। सभव है कि बगलादेश म के० सी० बी० की तुलना म सी० आई० ए० न अच्छा काय किया हो। मरा अपना विचार है कि बगलादेश का मामला एक आतरिक घटना थी किन्तु मुझ यह समझ म नहीं आता कि सना न मुजीव के विरुद्ध इस पाशविक ढग स क्यो बगावत की ? यह समझना

भी कठिन है कि यह सारी घटना इतने सहज ढग से कसे हुई ? अनुमानत देश मे न तो कोई इतना खून-खराबा हुआ और न ही सेना म किसी प्रकार की फूट पडी है।

अगस्त, 18

इन पष्ठो म एक विचार मैं लिखना चाहता हू। प्रत्येक दिन या किसी दिन मैं यह विचार जनता के सघष के सम्बन्ध म लिखना शुरू करना चाहता हू। इन विचारो को मिलाकर सघष के सम्बन्ध मे मेरा कुल दृष्टिकोण क्या होगा इन टिप्पणियो का क्रम फिर स बनाना-जोडना पडगा और सम्पादन करना होगा।

विनोबाजी ने थोड समय के लिए जब अपना मौन भग किया था, मुझ स्मरण है उन्होंने मुझसे कहा था कि व आदोलन के सम्बन्ध म मेरी धारणा से सहमत हैं और उसके लिए मेरी सहायता करन को तयार है किन्तु मुझे सरकार के विरुद्ध आन्दोलन चलान के विचार को छोडना हागा। सरकार के विरुद्ध आन्दोलन पर उनकी आपत्ति यह थी कि पाकिस्तान के व्यवहार के कारण युद्ध का खतरा बना हुआ है। अमरीका का फिर स पाकिस्तान का हथियार देना (प्रतिरोध हटा दिया गया) और चीन का असाधारण ढग स पाकिस्तान के प्रति मित्रता दिखाना। सरकार के विरुद्ध आदोलन शायद देश को कमजोर बना देगा। विनोबाजी का यह अनुमान नही था कि मरा यह आदोलन भारतीय लोकतत्र को अवरुद्ध कर देगा।

इन टिप्पणियो को प्रारम्भ करने के लिए यह एक अच्छा विषय है।

यह सघष आन्दोलन सम्पूण क्रान्ति के लिए था अर्थात सामाजिक जीवन एव उसके सगठन के प्रत्यक क्षत्र मे आदोलन—शान्ति

पूण क्रान्ति। लेकिन यह सब कुछ एकाएक तेजी से नही होगा। इसके लिए समय चाहिए। क्रान्तिकारी समय होने के कारण अधिक समय नही लगेगा। शायद एक या दो दशक का समय आधारभूत परिवतन पहले होंगे और व्यक्ति तथा समाज का रूपान्तरण (आम तौर पर मनोवैज्ञानिक) बाद मे।

इससे स्पष्ट हो जाना चाहिए कि किसी राजनतिक प्रणाली मे क्रान्तिकारी परिवतन सम्पूण क्रान्ति का अनिवाय तथा अभिन्न अग है अत आदोलन का भी।

शायद विनोबा का भी मत था और अब भी है कि राजनतिक क्रम म सर्वांगीण परिवतन बिना आदोलन किए शान्तिपूण ढग से भी किए जा सकते हैं किन्तु ग्राम स्वराज के काम म वष के अनुभव ने मुझे कायल कर दिया है कि अपने म ग्राम स्वराज एक मूल्यवान राजनतिक सगठन है बशर्ते कि यह काय ठोस हो—केवल कागजो म न हो। किन्तु ग्राम स्वराज आदोलन सर्वांगीण राजनतिक क्रान्ति लाने मे असफल रहा। सद्धातिक तौर पर कह तो कोई कारण नही कि ऐसा क्यो न हो। मैं नही जानता कि कितने मकडो हो सकता है हजारो बठको म मैंने बताया कि ग्राम स्वराज पर आधारित नया राजतत्र बनेगा और वतमान व्यवस्था को बदल देगा। मैं नही जानता कि मेरे किन्ही सर्वोदयी साथियो को, सबम कट्टु विरोधी को भी, मेरे इस विचार मे कभी कोई भूल मिली हो! पहले जिला लिए गए, बाद म सामुदायिक विकास खण्ड (जैसे बिहार मे सहरसा जिला) माडल के रूप म लिए गए किन्तु कही भी कामयाबी हासिल नही हुई। यदि हम सकीण तथा मतवादी सर्वोदय दृष्टि (यद्यपि इस रूप म कभी स्वीकार नही किया गया) से पूण क्रान्ति के काय को देखें तो स्पष्ट होगा कि बिहार म ग्राम जन सघष समितिया वही काय कर रही थी जो ग्राम स्वराज कर रह थे। उनम म बहुत सी सक्रिय थी, केवल कागजो पर न थी। इस सघष के बढने के साथ ही बहुत-सी

समितियां सक्रिय होती गई होतीं और वास्तविक रूप में जनता राज के रूप में विकसित हो गई होती (ग्राम स्तर पर जनता की सरकार)। भूदान से प्रारम्भ करके ग्राम स्वराज आन्दोलन और ग्रामदान (यह ग्राम स्वराज लाने के लिए एक प्रकार की पृष्ठभूमि थी) आज बुद्धिजीवी लोगों तक पहुंचने में बीस वर्ष से अधिक समय लग गया है।

दूसरी ओर ग्राम जन संघर्ष समितियां के पास पूरी तरह सक्रिय होने में मुश्किल से कुछ ही महीने थे किन्तु बहुत-से स्थानों पर ग्राम स्वराज की तुलना में वे बहुत अधिक सक्रिय हुए। मैं समझता हूं कि इसका कारण संघर्ष का वातावरण था। मुझे दिखाई देता है कि ऐसे वातावरण में मनोवैज्ञानिक वातावरण की शक्तियां पैदा की जाती है और लोग एक ओर खिंच जाते है। ये शक्तियां इन लोगों को चुनौती स्वीकार करने और अपने तथा दूसरों को बदलने के लिए प्रेरित करती है। इस शांत वातावरण में जिसमें कि ग्राम स्वराज काम कर रहा था मनोवैज्ञानिक शक्ति ही प्रभावशाली रही। आध्यात्मिक तथा नैतिक अपीलें विनोबा जी जैसे महात्माओं के प्रभाव ने अवश्य ही कुछ व्यक्तियों में नैतिक परिवर्तन पैदा किया किन्तु वे कभी भी सामाजिक या मनोवैज्ञानिक शक्ति नहीं बने। भूदान आन्दोलन के दिनों में जबकि हजारों भूमिपतियों ने दान में अपनी भूमि दी भी थी यह दावा किया जा सकता है कि यह कुछ व्यक्तियों तक ही सीमित न रहते हुए इससे विशाल क्षेत्र में नैतिक शक्ति का प्रचार हुआ था। शायद ऐसा ही हुआ किन्तु यह थोड़े समय तक सीमित रहा और बाद में गुप्त दानियों ने जो कुछ किया था उसे वापस लेने का प्रयास किया गया या वापस ले लिया। हालांकि विनोबाजी कार्यक्षेत्र में थे, लेकिन शीघ्र ही नैतिक बल क्षीण हो गया और जब ग्राम दान आया तो

उस शक्ति का बहुत ही कम प्रभाव बचा हुआ था। भूमि और सम्पत्ति के सम्बन्ध में कुछ विचार अभी थे लेकिन उन विचारों को स्वीकार्य विचार' के रूप में नहीं लिया गया। यदि विचार मान लिए गए होते तो सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए ये बहुत शक्तिशाली सिद्ध होते।

इससे यह समझ लेना चाहिए कि आंदोलन के वातावरण का प्रभाव आपकी इच्छा पर है—जब आप चाहें, बना लें। यह तो तभी बनता है जब सामान्य जनता—जिसमें युवावर्ग और छात्र भी शामिल हैं तथा बुद्धिजीवी, विशेष रूप से बुद्धिजीवी बहुत महत्त्वपूर्ण हैं—में असन्तोष, निराशा, मोह-माया से मुक्ति तथा प्राधिकारियों (सरकार से प्रारम्भ होकर कॉलेज प्राधिकारी तथा स्थानीय प्राधिकारी तक) से अलग पड़ जाते हैं ऐसा समय आंदोलन शुरू करने के लिए उचित समय होता है। यह आंदोलन हिंसा में भी बदल सकता है या शान्तिमय भी रह सकता है। यहाँ यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि क्रान्तिकारी परिवर्तन के लिए शान्त लोगों का आंदोलन अन्य देशों की तुलना में गांधीजी के भारत में अधिक स्वीकार्य होगा और क्रान्तिकारी लोगों की दृष्टि में कपोल कल्पना नहीं होगी। प्रत्यक्ष दिशा में क्रान्ति की स्थिति पैदा करने के लिए नेता और संगठन दोनों की आवश्यकता होगी। नेता और संगठन के न होने पर, क्रान्ति अन्त में अस्त-व्यस्तता की स्थिति में समाप्त होगी या तानाशाही लागू हो जाएगी।

अगस्त, 21

तीन दिनों के बाद पिछली बातों से शुरू करके मैं कहना

क्षेत्रों मे इसके सम्बन्ध म नारे और गीन सम्पूण क्रान्ति अब नारा है, भावी इतिहास हमारा है" गूजन नगे। यह नारा यनि गीत नही है, भारत के सभी हिन्दी भाषी और हिन्दी समझने वाले राज्या म बडी तेजी से फन गया। क्या यह समूचे राष्ट्र के क्रान्ति आदोलन की शुरुआत थी ? इसम सदेह नही कि देश भर म लगातार दौरो से जनता म जागति आई किन्तु इसे फलाने का समय आ गया है। पहला उचित नता की कमी दिखाई न्ती थी दूसरे, जस-जसे सामान्य चुनाव समीप आ रह थे विरोधी दल का ध्यान चुनाव की आर नई चेतना का उपयोग करके चुनाव जीतने की सभावना की ओर अधिक स अधिक झुक रहा था। मैं इसके केवल विरुद्ध ही नही था बल्कि अपने देश म लोकतन्त्र की रक्षा के लिए इच्छुक था कि केन्द्र स काग्रेसी स्वाधिकार को भग किया जाए। मैंने विरोधी दला को व्यापक सामाजिक परिवतन लाने और इसके परिणामस्वरूप तयार किए गए वातावरण को आगामी चुनाव म प्रयोग म लाने के लिए सामान्य जनता के आदोलन म जुट जाने की प्ररणा नी। उसके लिए मैंने प्रयास किया नि वे या तो एक पार्टी म मिल जाए या गुजरात के जनता सगठन की तरह एक सूत्र मे बध जाए। शक्ति के लिए काग्रेसी एकाधिकार को तोडने के अलावा इसम मरी इच्छा यह थी कि विरोधी दलो द्वारा निए गए वचना को जनता के आदोलन म प्रयोग किया जाए और उनको आश्वासन दिया जाए कि केन्द्र और राज्या म विजयी होने पर नई सरकारें उनकी सहायता करेंगी और क्रान्तिकारी आन्दोलन म भाग लेंगी। इसके साथ ही जनता के आदोलन से सम्बन्धित एक और महत्त्वपूण पहलू को स्पष्ट करना चाहूगा जिसके सम्बन्ध म काफी चचा कर चुका हू किन्तु मुझे भय है कि लोगा न इस सभी तक अच्छी प्रकार से नही समझा है। इसे किसी और दिन कहूगा। यह बात और क्रान्ति सामान्य राजनतिक प्रक्रिया स क्या नही लाई जा सकी ?

अगस्त 22

आदालन के सम्बन्ध म दी जा रही टिप्पणिया नो आज रोकना पडेगा। बगलादेश स बहुत ही भयानक समाचार प्राप्त हुए हैं। यह बहुत ही नबर है। कालम्बिया ब्राडकास्टिग के पत्र कार रिचड थ्रिकेंड के अनुसार मुजीब की पत्नी, उनके तीन लडके (नौ साल के सबम छोटे लडके सहित) दा बहुए दो भतीजे—समीप के कुल 18 रिश्तेदार राज्य क्रान्ति क दिन मार दिए गए। इस बबरता को समझना कठिन है। खोन्दकर मुश्ताक अहमद मे अन्यायपूण घृणा नही हो सकती थी, या मैं कहू कि उन्हे मुजीब स भय था, न कि उनकी पत्नी और बच्चो से। इससे हम पुरान सामन्ती बबर दिनो को पहुच गए जब तख्त लेने के लिए भाई ने भाई को मार दिया। मुश्ताक अहमद अपने देश म हुई घटनाओ तथा भारत के साथ मत्री के सम्बन्ध म बडी शान्ति से बोल रहे है—राजनीति के मूलभूत सिद्धान्त, राष्ट्रीयता सामाजिकता धम निरपेक्षता और लोकतत्र, किन्तु श्री अहमद जो व्यवहार कर रह हैं, उसके साथ ये काले कारनामे कसे मेल खा सकेंगे? लोकतत्र की अभी भी बात करते हुए माशल ला की पूरी शक्तिया हाथ म लेने की बात मुझे समझ आ सकती। सभी तानाशाह इसी तरह की ही बातें करते है। हमारे बीच मे श्रीमती इन्दिरा गाधी हैं किन्तु पूरे मुजीब परिवार को खत्म करन के क्या मानी है? क्या उनको इसलिए मार दिया गया कि यदि उनम म एक भी बचा रहा तो वह देश मे मुजीब-समथन के लिए वातावरण पैदा कर सकता है? या क्या यह भी हो सकता है कि जघन्य काय श्री अहमद के आदेश पर न किया गया हो न ही विद्रोही सनिक नताओ के सयुक्त कमान द्वारा, बल्कि एक सनिक अधिकारी या अधिकारियो के समूह के इशारे पर यह मब किया गया हो जिन्हे मुजीब के विरुद्ध व्यक्तिगत बर भाव हो और इस तरह पशाचिक

ढग स बदला लिया हो ? केवल ईश्वर ही जानता है। समय के साथ ही सच्चाई का पता चलेगा। जो कुछ भी हो, हाल ही के इतिहास की यह सबस दिल दहलान वाली राजनीतिक घटना है।

आज के समाचार मे श्रीमती गाधी स करजिया का इण्टरव्यू छपा है। इसम अधिकतर वही पुरानी बातें हैं—अपनी ईमान दारी, सक्षमता और अपने-आपको देश का सरक्षक साबित करन की बातें। किन्तु उनम दो बयान साफ हैं—यदि उनको सही समझा जाए तो भारत म उस लोकतन्त्र की आशा बन सकती है, चाहे उस लोकतन्त्र मे हाथ पाव बधे हो और मुह तक बन्द हो, किन्तु सास ले रहे हो जीवित हो। य बयान हैं—1 कोई नया सविधान नही होगा और वतमान सविधान ही रहेगा यद्यपि श्रीमती गाधी का शासन स्थाई बनाने के लिए उसमे आवश्यक रददोबदल होग 2 चुनाव किए जाएग यद्यपि तारीखो की घोषणा करना अभी बहुत जल्दी होगा। इसके लिए हम धयवादी होना है। श्रीमती गाधी उस समय चुनाव कराएगी जब उन्ह यह विश्वास हो जाएगा कि उन्होंने एसे हालात पदा कर दिए हैं जिसम उनका विजयी होना सुनिश्चित है। वस्तुत इसी उददेश्य की पूर्ति के लिए ही आपात-स्थिति की घोषणा की गई थी। इसमे कोइ सन्देह नही है कि गुजरात के बाद विरोधी दल म एक सगठन का अस्पष्ट विश्वास आन्दोलन के फलस्वरूप सामूहिक जागति और स्वय उनकी नतिकताओ के कारण डर है कि चुनाव म सम्भवत उनकी पराजय हो। सर्वोच्च न्यायालय के फसल को लकर भी वह चिन्तित हैं। इसलिए जनता प्रतिनिधित्व अधिनियम तथा सविधान म सशोधन कराकर उन्होंने अपनी स्थिति सुरक्षित की है। इसलिए गिरफ्तारिया आपातस्थिति की घोषणा समाचार-पत्रो तथा नागरिको की स्वतन्त्रता का दबाया जाना, विचार प्रकट करने तथा सगठन (दूसरो के लिए) की स्वतन्त्रता के मौलिक अधिकार को खत्म करना और इसके साथ ही सवधानिक

सशोधनो म भी उनके उद्देश्यो की पूर्ति होती है। श्रीमती गाधी को सुरक्षित तथा उत्साहित रखना (बाद की घटनाओं से मेरी भविष्यवाणी सिद्ध ही हुई है) भी एक उद्देश्य है।

इस साक्षात्कार म एक मनोरजक बात यह है कि श्रीमती गाधी स्वीकार करती हैं कि पहले के 10 सूत्र लागू नहीं किए थ। और फिर आगे वे कहती हैं कि यदि कुछ पहले नहीं किया गया तो कोई कारण नहीं कि इस अब क्यो न लागू किया जाए। वह यह भी कहती हैं कि हम बडे प्रयास कर रहे हैं और अब अनुशासन और नतिकता की नई लहर आई है। बचार मोहन धारिया तथा युव तुर्कों को श्रीमती गाधी के 10-सूत्रो के सम्बन्ध म स्मरण कराने के लिए काफी कीमत चुकानी पडी। अब कम स कम उन्हे प्रसन्नता होनी चाहिए कि उनकी बात पर विचार कर ध्यान दिया गया। देश म जिस नई चेतना का सूत्रपात हुआ श्रीमती गाधी के इनकार के बावजूद म नही समझता कि 20-सूत्री कायक्रम लागू करने के सम्बन्ध में अब वे अधिक आशावादी होगी। मैं तो हू, और इसकी चर्चा मैंने प्रधानमन्त्री को लिखे पत्र म भी की है।

अनुशासन और नतिकता की नई चेतना क सम्बन्ध म भी कुछ कहना चाहूगा। मैं देखता हू कि प्रशासन के बडे अधिकारी इस बात म प्रसन्न हैं कि कमचारियो और मातहतो म पहले की अपक्षा अब अधिक अनुशासन है। मुझे इसमे सदेह नहीं है, किन्तु श्रीमती गाधी को जानना चाहिए कि भय के कारण पैदा हुए अनुशासन पर तनिक भी प्रसन्न नही होना चाहिए। कोई भी राष्ट्र भय से नही बनता। बालक की तरह बीमार राष्ट्र[1] जो भय के जरिये बडा होगा वह बीमार, मदबुद्धि वयस्क की तरह होगा। मैं नही जानता कि श्रीमती गाधी ने नैतिकता कहा देखी है ? भय के कारण अनुशासन हो सकता है नतिकता नही। स्वस्थ राष्ट्र

1 यह संदर्भ जयप्रकाशजी के प्रधानमंत्री के नाम 21 जुलाई के पत्र का है। परिशिष्ट 1 देखें।

स्वतन्त्रता के परिवेश मे ही स्वस्थ हो सकता है। अनुशासन बनाना दो भापी प्रणाली है। हाल ही के वर्षो म हमारे शासको न नक्ली अनुशासन ही दिखाया है। उन्होने भ्रष्टाचार, शक्ति के लिए सघष आदि क्या कुछ नही किया। प्रत्यक क्षेत्र मे ऐसा हुआ है।

श्री करजिया न मेल मिलाप के प्रश्न को भी उठाया है। 'श्री नारायण ही श्रीमती गाधी की मुख्य परेशानी हैं।' श्रीमती गाधी न जो कहा है मैं उसपर टिप्पणी नही करना चाहता। मैं अन्त म ही अपने विचार रखना चाहूगा।

विरोधी दल का इसके लिए स्वय उत्तर देना होगा। उनके स्थान पर अपने-आपको रखकर मैं पूछना चाहूगा कि इसके लिए मल मिलाप का क्या मतलब है? श्रीमती गाधी का स्पष्ट अथ यह है कि वह अपना दृष्टिकोण छोड दें क्योकि साक्षात्कार के दौरान बताया जाता है कि उन्होने यही कहा कि किसी प्रकार की बात चीत करन के पूव हम स्थिति को थोडा और समझना है क्योकि उन्हे पूरा भरोसा है कि विरोधी दल ने अपना रवया बदल लिया है। काश कि करजिया उनस पूछते कि उसमे उनका आशय क्या है? क्या वह चाहती हैं कि विरोधी दल अपना दृष्टिकोण त्यागकर श्रीमती गाधी का पूरी तरह समथन करें और ससद मे प्लेटफाम पर और समाचारपत्रो म कुछ न कह, और अच्छे लडको की तरह उसी प्रकार व्यवहार करें जिस प्रकार आदश विरोधी दल मे सी० पी० आई० करती है? इन सब बातो से मुझे हैरानी होती है।

जसा कि मैं समझता हू कि ससदीय लोकतत्र म विरोधी दल का बुनियादी कत्तव्य यह है कि चुनाव विधि मे वह सत्ताधारी

पार्टी को वदल द । चुनाव क बीच विरोधी दल ससद मे सरकार के विरोधी दल के रूप म काय करता है । प्रचार रचनात्मक काय शान्तिपूण प्रदशनो और दूसर प्रजातान्त्रिक साधनो स लोगो का समथन प्राप्त हो और दूसरी आर सरकार पर दवाव डालकर विरोधी दल मतदाता पर अपन प्रभाव का क्षत्र बनाता है साथ ही जनता के ऐसे वग का सहायता भी देता है जिनपर प्रशास कीय या कानूनी कायवाहियो के कारण प्रतिकूल प्रभाव पडा है ।

आम तौर पर अवज्ञा विरोधी दल के कायक्रम का भाग नहीं है किन्तु कुछ मौको पर जहा सत्ताधारी सरकार लगातार बुराइया करती जाती है—जसे भ्रष्टाचार या दबाव की नीति नितात आवश्यक विषयो म सुधार लान के लिए न्यायसगत सघष करना (विहार के विद्यार्थियो का आन्दोलन इसका उदाहरण है) आदि एसी बातें ह जहा विरोधी दल को लाचार होकर नागरिक अवज्ञा करनी पडती है ।

कुछ क्षेत्र एसे है जसे सामाजिक एव आर्थिक प्रश्न, जहा केवल नागरिक अवज्ञा ही नहीं बल्कि सत्याग्रह भी आवश्यक हो जाता है । इसम सामाजिक कायकर्ता लग सकते हैं पर शायद विरोधी दल भी । य सत्याग्रह सरकार क विरुद्ध नागरिक अवज्ञा म उस समय परिणत हो सकते हैं जब सरकार अत्याचारियो की ओर से इन विरोधी दलो पर बडे जुल्म करने लगती है । भारत के विभिन्न भागो म जहा काग्रेस-सत्ता रही है यह वार वार हुआ है । इस तरह विरोधी दल यह कभी आश्वासन नहीं दे सकते कि वे सत्याग्रह नहीं करेंगे ।

अव अन्तिम प्रश्न रह जाता है । जसाकि बिहार म हुआ—नागरिक अवज्ञा म क्या कोई चुनी हुई सरकार तथा विधानसभा भग करन की माग की गई है ? इस प्रश्न का कई बार उत्तर दिया जा चुका है और सक्षम वधानिक वकीलो द्वारा इसकी वधानिक महत्ता की भी जाच की जा चुकी है । पिछली बार

वासी अभी भी सबसे अधिक पिछडे हुए हैं और साहूकार (जिनमे बहुत से जमींदार और दूकानदार—जो स्वय चाहे छोटे ही है) बडे अत्याचारी ढग से लूट रहे है और आदिवासियो का शोषण कर रहे हैं। बिहार मे मदानी लोगो को व डिक कहते हैं।

कुछ उद्योग, बैक, जीवन बीमा कम्पनियो का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया है। रेलो का बहुत पहले ही राष्ट्रीयकरण कर दिया गया था। सावजनिक क्षेत्र म बडे बडे उद्योगो को स्थापित किया गया ह किन्तु य सब पूजीवादी अयोग्यता, फिजूलखर्ची और भ्रष्टाचार को बढावा दे रहे है। सरकारी पजीवाद का अथ है—राज्यो को अधिक शक्ति देना। यह मुख्यत सरकारी दफ्तरशाही है जिसे गेलब्रेथ ने ठीक ही सावजनिक दफ्तरशाही कहा है। इन सभी म समाजवाद का कोई भी अश तथा विशेषता नही है। *श्रमजीवी और पब्लिक या य कहे कि जनता को इसमे कोई स्थान* नही है सिवा इसके कि वे श्रमिक है या उपभोक्ता हैं। आर्थिक लोकतन्त्र जिसके सम्बन्ध म बहुत चर्चा है, वह नही है और न ही वह औद्योगिक लोकतन्त्र है। इसका यह अथ नही है कि मैं समाजवाद के विरुद्ध हू। समाजवाद स मेरा गहरा सम्बन्ध होने के कारण मैं यह सब कुछ कह रहा हू। यह बहुत दुख की बात है कि समाजवाद के हमारे प्रवत्तक प्राय समाजवाद को राष्ट्रीयकरण के बराबर कहते हैं।

बहुत सी समितियो और आयोगो के बावजूद हमारी शिक्षा प्रणाली बुनियादी तौर पर वही है जो ब्रिटिश शासन के दिनो म थी। एक ऐसी शिक्षा—जिसका उद्देश्य एक वग को शिक्षा के *माध्यम से ऊचा उठाना है।* इस सम्बन्ध म बहुत कुछ कहने की आवश्यकता है किन्तु इसके लिए यह स्थान नही है। यहा मैं केवल यह दिखाने की कोशिश कर रहा हू कि स्वतन्त्रता के इतने वर्षों के बाद भी हमारे समाज का ताना बाना नही बदला है। जनता के रूढिया आचार व्यवहार आस्थाए और अन्धविश्वास अभी तक

वही है। बहुत से लोगो म ऊचे दर्जे के लोगो मे भी जो परिवतन दिखाई दता है, वह बाहरी या ऊपरी है।

स्वतन्त्रता के बाद राजनीति सावजनिक जीवन और व्यापार की नतिकता मे ही लगातार गिरावट आई है।

सामाजिक और आर्थिक विकास का देखें तो चित्र और भी भयानक है। जनसख्या लगातार बढ रही है। दरिद्रता भी बढ रही है। 40 प्रतिशत से अधिक जनता दरिद्रता की सीमा स नीचे है। न्यूनतम आवश्यकताए—जसे भोजन और कपड के अतिरिक्त पीने का पानी मनुष्य के रहने के लिए—पशु के लिए नही—मकान, डाक्टरी सुविधाए उपलब्ध नहीं हैं। स्कूल बहुत कम हैं और पढाने का तरीका सही नही है। समाचारपत्र आज कहत है कि खनिज के मामले म बिहार दश म सबस अमीर प्रदेश है। बिहार के पास अच्छी भूमि तथा बारहमासी नदिया हैं, तो फिर बिहार देश म सबस गरीब राज्य क्यो है? इसी तरह सूची म हम सख्या को बढाए रह है।

प्रश्न यह है कि साधारण लोकतान्त्रिक प्रणाली म क्या मौलिक रूप म इस चित्र को बदला जा सकता है? यदि विरोधी दल जीत भी जाए तो क्या चित्र बदलेगा? मुझे सन्देह है कि एसा नही होगा। कानून पास किए जाएगे और लागू किए जाएग। धन खच किया जाएगा। यदि यह सब कुछ कर भी दिया जाए—सम्भवत भ्रष्टाचार को इन मामला म लाए बिना—तो भी क्या इस प्रणाली स समाज का क्रम बदलेगा? मैं समझता हू—नही। क्या?

इससे पूव कि मैं इसका उत्तर दू मुझ कुछ उदाहरण देकर स्पष्ट करने दें कि मेरा आशय क्या है। विवाह प्रथा को ही लीजिए। विशेष रूप से तिलक और दहेज प्रथा, जो बिहार, बगाल उत्तरप्रदेश और कुछ दूसर राज्या म प्रचलित है। इस बुराई को ठीक करने के लिए कानून बनाया गया किन्तु यह कानून अव्याव हारिक सिद्ध हुआ, बल्कि इस बीच यह बीमारी बडी तेजी स

सिद्धात को स्पष्ट रूप म पहली बार मैंने पूना म 23 जनवरी, 1975 को नागरिक स्वागत के समय अपने भाषण म प्रतिपादित किया था। किन्तु यह केवल विचार ही नही था, जो स्वागत के समय एकाएक मेरे मन म उतर आया। यह सदा मेरे मन म रहा है और मुझे ध्यान है कि इस सम्बध म मैंने पहले भी कई बार चर्चा की है। किन्तु इस तथ्य के रहते हुए पूना निगम, जिसका प्रशासन विरोधी दल के हाथ म है और जिसका महापौर समाजवादी है, उसके साथ सत्ताधारी काग्रस के सदस्य भी थ और उन्होंने भी मेरे स्वागत के लिए अपना सहयोग दिया। मैंने तब उस सिद्धान की यथाशीघ्र व्याख्या करना आवश्यक समझा। पूना के पत्रकारा के लिए यह नई बात भी थी और उन्होंने इसका प्रचार भी किया। राष्ट्रीय पत्रा म भी इसका अच्छा प्रकाशन हुआ। इसलिए उस समय यह सोचा जाता था कि मैंने अपने सिद्धाना स हटकर नया माग अपना लिया है। वस्तुत बिहार म भी कुछ विरोधी दला के नेताओ को एसा ही लगा था, किन्तु बाद म आदोलन को चलान के लिए निर्धारित की गई कार्यविधि का दखते हुए स्थिति को स्वीकार कर लिया। व मागें, जो लोगा के लिए बहुत ही महत्व पूण हैं, तय की जाती हैं और उन्हें मुख्यमत्री को प्रस्तुत किया जाता है। यदि उन्ह दखकर मुख्यमत्री यह कह कि ठीक बात है आइए, हम मिलकर बठें और इसपर विचार करें। मैं आपको इन समस्याओ और बुराइया का हल निकालने म शासन म भ्रष्टाचार को हटान के लिए सहयोग दने को तयार हू। उदाहरण के लिए आदोलन (क्योंकि यह अभी भी आन्दोलन ही है—सरकार क विरुद्ध नहा, किन्तु कुछ बुराइयो के विरुद्ध और कुछ परिवतना तथा आदेशो के लिए) जो अब जन आन्दोलन का रूप ले चुका है लेकिन अभी तक काग्रेस सरकार का रवया उसके प्रति उपक्षा पूण है।

अगस्त, 27

इन टिप्पणियों को लिखने में एक और बाधा ! कल जब मैंने प्रभा[1] और शीला को पत्र लिखे तो मुझे कोई अंदाज नहीं था कि पटना में इतनी भयंकर बाढ़ आई है। यहां बैठे मैं अपने को बहुत दुखी और असहाय महसूस करता हूं, जबकि मेरे अपने लोग इस अभूतपूर्व आपत्ति में हैं। गरीब और मध्यवर्ग के लोग तो बहुत ही दुर्दशा में होंगे। जो इकहरी मंजिल के रहनेवाले या पक्के मकानों में रहते होंगे उन्होंने अपना सब कुछ खो दिया होगा। वे अपना सामान कहां ले जा सके होंगे ? मैं जानता हूं कि महिला चर्खा समिति, जो निचले स्तर क्षेत्र में है, उसपर क्या गुजरी होगी ! वहां पर पानी 6 से 8 फुट तक गहरा होगा ! नगर की आम जनता भूखों मर रही होगी ! पीने का पानी कम उपलब्ध होता होगा ! वह भोजन से भी अधिक गम्भीर समस्या है। अधिकतर लोग गंदा पानी पीते होंगे। मैं नहीं जानता कि वहां पर सहायता के क्या-क्या प्रबन्ध किए गए हैं। मुझे बिहार सरकार की योग्यता पर विश्वास नहीं है कि ऐसी स्थिति में उसने कुछ किया होगा। सेना और वायुसेना अधिक उपयोगी हो सकती है।

मैं सोचता रहा हूं कि प्रतिज्ञा पत्र में एक महीने या एक पखवाड़े के लिए पैरोल ले लूं ताकि लोक सहायता की व्यवस्था कर सकूं। संचार के साधनों में पूरी अस्त व्यस्तता होने के कारण कार्य कठिन हो जाएगा किन्तु गैर-बाढ़ क्षेत्रों के युवकों को अधिक गतिशील बनाऊं और दूसरे राज्यों से सहायता प्राप्त करने में तैयारी करूं। जी हां, जैसे ही इस सम्बन्ध में अधिक सोचता हूं बहुत अधिक कार्य हो सकता है। राज्यों के सभी लोकप्रिय नेता जेलों में हैं। अधिकांश कांग्रेसी नेता भ्रष्ट और आरामतलब हो गए हैं।

1 श्रीमती प्रभा चौधरी और श्रीमती रखयार महिला चर्खा समिति के कार्यकर्ता हैं।

बिहार का प्रशासन भी बहुत कुशल नही है। आज दोपहर बाद तक निणय लूगा कि मुझे पराल पर रिहाई के लिए प्राथना करना चाहिए या नही। मुझे स्मरण है कि 1934 के महान भूकम्प के समय ब्रिटिश सरकार ने राजेन्द्र बाबू को हजारीबाग जेल से रिहा कर दिया गया था। इसके लिए राजन्द्र बाबू या किसी ने प्राथना नही की थी, बल्कि उन्होंने अपनी ओर से हा रिहा कर दिया था। श्रीमती इन्दिरा गाधी इतनी मानवीय नहीं हैं या कमजोर हैं किन्तु काश, कि तुम भी कर पाती जिस प्रकार ब्रिटिश पूजीवाद ने किया था। मैंने निणय किया है कि चडीगढ के डिप्टी कमीश्नर के माध्यम से प्रधानमत्री को निम्नलिखित सदेश भेजू।

प्रधानमत्री, नई दिल्ली

पटना और बिहार की बाढ़ की रिपोर्टों से बहुत दुखी हुआ। इतिहास साक्षी है कि इस प्रकार का कष्ट पटना मे पहले नहीं देखा। यहां बेकार बठे मैं बुरी तरह से दयनीय स्थिति मे असहाय हू। आपसे प्राथना करता हू कि पेरोल पर एक महीने की रिहाई कर दें ताकि मैं बिहार राज्य की और बाहरी राज्यों की जनता को सहायता के लिए प्ररित कर सकू और राज्य तथा केन्द्रीय सरकारों के सहयोग से लोक प्रिय सहायता की व्यवस्था कर सकू। यदि बाढ़ का प्रभाव कम भी हो जाए फिर भी अभी यह काम करने बाकी हैं। 1934 के महाभूकम्प के समय ब्रिटिश सरकार ने इसी प्रकार के काय के लिए राजेन्द्र बाबू को रिहा किया था। शीघ्र ध्यान देने और कायवाही के लिए प्राथना करता हू।

—जयप्रकाश

मैंने उनसे प्राथना की है कि इस सदेश को टेलीफोन या एक्सप्रेस तार द्वारा भेजा जाए।

अगस्त 28

दिल्ली से उत्तर की इतनी जल्दी अपेक्षा करना ठीक नहीं। सभवत कुछ भी होनेवाला नहीं है क्योंकि यह मौका और उसके लिए मेरी यह प्राथना एसा सुयोग है कि ऐसी स्थिति स वह अपने को अपनी स्थिति को इस तरह पेश करेंगी जो सामायत भारतीय और विश्व जनमत के सामन स्वय को सही साबित करने म असमथ थी। इस तरह स्वय को सही साबित करन का उनके पास एक ही माग है कि वह देश मे हो रही आतरिक गडबड को सौ गुना बढा चढाकर बताए। इससे किसीका भी सहमति नही होगी। यदि यह भी कल्पना कर ली जाए कि वह इस सकट म निकलना चाहती हैं, जिसम वह स्वय फसी थी (उस गडबड की क्या बात जिसम उहोन देश को फक दिया है)। वह उसी प्रकार काय करके निकल सकती हैं, जो काय 1934 के बिहार भूकम्प के अवसर पर किए गए थे। यह स्मरण करना होगा कि गोलमज कान्फ्रेंस क असफल होने के बाद और गाधीजी की वापसी पर ब्रिटिश सरकार न एक अभियान चलाया। यहा तक कि जब बम्बई म कायकारिणी की बठक हो रही थी जवाहरलाल को मनकपुर म गिरफ्तार कर लिया गया। मेरा अनुमान है कि जब वे इलाहाबाद स बम्बई क लिए बम्बई मेल से यात्रा कर रहे थ तो उ ह गिरफ्तार किया गया था। मैं उस समय उनके साथ यात्रा कर रहा था। उन दिनो मैं स्वराज भवन म ए आई० सी० सी० के कायालय म काम करता था (खान अब्दुल गफ्फारखा को पशावर म पहल ही गिरफ्तार किया जा चुका था)। सारे देश म काग्रेसी नताओ को पकडा जा रहा था।

गांधीजी को भी गिरफ्तार करके यरवदा जेल में बंदी रखा गया था। इसके प्रतिक्रियास्वरूप नागरिक अवज्ञा जिसे गांधी इरविन समझौता के अनुसार स्थगित किया हुआ था फिर से शुरू कर दी गई। ये घटनाएं जनवरी 1933 की हैं।

1934 के शुरू में यह आन्दोलन अभी जारी था, किन्तु जनसमूह नागरिक अवज्ञा की बजाय गोपनीय रूप से भर्ती किए गए लोगों द्वारा ही नागरिक अवज्ञा की जाती थी। ये लोग स्टेट या जिला कांग्रेस कमेटियों द्वारा तैयार किए गए गुप्त कार्यक्रम के अनुसार बाहर आते थे और वैधानिक ढंग से कानून तोड़ते थे। वस्तुतः उक्त समितियां ही नागरिक अवज्ञा समितियां थीं, फलतः राजेन्द्र बाबू को जेल अवधि से कुछ महीने पहले ही रिहा कर दिया गया था। औपचारिक रूप से नागरिक अवज्ञा का कार्यक्रम नहीं हटाया गया था क्योंकि कार्यकारिणी के सदस्य अभी तक जेलों में थे। ऐसी स्थिति में सरकारी तौर पर इसको बंद नहीं किया जा सकता था, लेकिन प्राकृतिक विपदा—जैसे महान् भूकम्प आदि—के समय राजेन्द्र बाबू या बिहार का कोई भी दूसरा कांग्रेस नेता इस आंदोलन को चलाने की नहीं सोच सकता था। उनका प्राथमिक एवं तुरन्त कार्य यही था कि वे अपनी सेवाएं पीड़ित जनता को दे दें। एक सहायता समिति का पहले से गठन हो चुका था। राजेन्द्र बाबू की अध्यक्षता के फलस्वरूप स्थिति में बहुत परिवर्तन हुआ। बड़े पैमाने पर सहायता कार्य शीघ्र ही प्रारम्भ कर दिए गए। मुझे याद है कि वायसराय के सहायता कोष के पीछे पीछे राजेन्द्र बाबू का भी सहायता कोष चल रहा था। शीघ्र ही बिहार में सामान्य बंदियों को रिहा कर दिया गया। सहायता के लिए स्वयं गांधीजी बिहार आए, जवाहरलाल भी। जमनालाल[1] और दूसरे बहुत से अखिल भारतीय नेताओं ने सहायता

1 दिवंगत जमनालाल बजाज गांधीवादी उद्योगपति और कई वर्षों तक कांग्रेस पार्टी के कोषाध्यक्ष।

कार्यों मे कुछ काम किया। प्रोफेसर जे० सी० कुमारप्पा[1] ने सेवा अनुभाग का कार्यभार सभाला और इसी प्रकार अय ने। इस तरह औपचारिक रूप म किसीके द्वारा भी आदोलन को वापस लेने पर नागरिक अवज्ञा कायक्रम स्वत समाप्त हो गया क्योकि इस बडी विपदा के कारण लोगो का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और राष्ट्रीय नेताओ का पूरा ध्यान और शक्ति इसमे लग गई थी। ब्रिटिश सरकार ने भी इस स्थिति को स्वीकार किया और विशेष दमनकारी कानून वापस ले लिए गए या समाप्त होने दिया गया। कुछ ही महीनो में सभी बन्दियो को रिहा कर दिया गया। उन्होने या तो अपनी सजा की अवधि पूरी कर ली थी या उस सम्बन्ध म निर्धारित की गई नीति के अनुसार ऐसा किया गया था।

बिहार म भयकर बाढ आई है इस बात को लेकर क्या श्रीमती गाधी स्थिति को सामाय बनाने की इच्छुक हैं? यदि मुझे पेरोल पर या किसी भी तरह रिहा कर दिया जाता है तो मेरा सबसे पहला कर्तव्य यह होगा कि अपने आपको, अपने सभी मित्रो को तथा बिहार और अय राज्यो के कायकर्ताओ को लोगो की सेवा म लगा दूगा। इस समय किसी सघष या आदोलन का सोचना जनता के साथ उपहास करना है जो इस समय अभूतपूर्व कष्ट सहन कर रही है। स्वाभाविक है कि बिहार का आदोलन अब बद करना होगा। मैंने प्रधानमत्री को अपने सदेश म यह कहा है कि मैं राज्य एव केन्द्रीय सरकार के सहयोग से काय करूगा। इससे उनके मन में जो भय है, वह समाप्त होना चाहिए। इन परिस्थितियो म आदोलन स सम्बन्धित सभी बदियो को रिहा करना बुद्धिसगत बात होगी। उनको सहायता काय म लगा दिया जाएगा। मैं अखिल भारतीय नेताओ को बिहार की सहायता के लिए आमत्रित करूगा। पूरे भारत म गिरफ्तारिया बिलकुल ही न्याय-

1 गांधीवादी अथशास्त्री अब जीवित नहीं हैं।

गाधीजी को भी गिरफ्तार करके यरवदा जेल म बदी रखा गया था। इसके प्रतिक्रियास्वरूप नागरिक अवना, जिसे गाधी इरविन समझौता के अनुसार स्थगित किया हुआ था फिर से गुरु कर दी गई। य घटनाए जनवरी 1933 की हैं।

1934 के शुरु म यह आन्दोलन अभी जारी था, किन्तु जनसमह नागरिक अवना की बजाय, गोपनीय रूप से भर्ती किए गए लोगो द्वारा ही नागरिक अवना की जाती थी। य लोग स्टेट या जिला काग्रेस कमेटिया द्वारा तयार किए गए गुप्त कायक्रम के अनुसार वाहर आते थे और वधानिक ढग स कानन तोडते थ। वस्तुत उक्त समितिया ही नागरिक अवना समितिया थीं फलत राजेन्द्र बावू को जेल अवधि से कुछ महीने पहले ही रिहा कर दिया गया था। औपचारिक रूप स नागरिक अवना का कायक्रम नहीं हटाया गया था क्योकि कायकारिणी के सदस्य अभी तक जेलो म थे। ऐसी स्थिति म सरकारी तौर पर इसको बन्द नहीं किया जा सकता था लेकिन प्राकृतिक विपदा—जस महान भूकम्प आदि —के समय राजेन्द्र बाबू या बिहार का कोई भी दूसरा काग्रेस नेता इस आदोलन का चलाने को नहीं सोच सकता था। उनका प्राथमिक एव तुरन्त काय यही था कि वे अपनी सेवाए पीडित जनता को दे दें। एक सहायता समिति का पहले से गठन हो चुका था। राजेन्द्र बाबू की अध्यक्षता के फलस्वरूप स्थिति में बहुत परिवतन हुआ। बड पमाने पर सहायता काय शीघ्र ही प्रारम्भ कर दिए गए। मुझे याद है कि वायसराय के सहायता कोष के पीछे-पीछे राजेन्द्र बाबू का भी सहायता कोष चल रहा था। शीघ्र ही बिहार म सामान्य वन्दियो को रिहा कर दिया गया। सहायता के लिए स्वय गाधीजी बिहार आए जवाहरलाल भी। जमना लाल[1] और दूसरे बहुत स अखिल भारतीय नताओ ने सहायता

1 दिवगत जमनालाल बजाज गाधीवादी उद्योगपति और कई वर्षों तक काग्रेस पार्टी के कोषाध्यक्ष।

कार्यों मे कुछ काम किया। प्रोफेसर जे० सी० कुमारप्पा[1] ने सेवा अनुभाग का कायभार सभाला और इसी प्रकार अय ने। इस तरह औपचारिक रूप म किसीके द्वारा भी आदोलन को वापस लेन पर नागरिक अवज्ञा कायक्रम स्वत समाप्त हो गया क्योंकि इस बडी विपदा के कारण लोगा का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और राष्ट्रीय नताआ का पूरा ध्यान और शक्ति इसम लग गई थी। ब्रिटिश सरकार ने भी इस स्थिति को स्वीकार किया और विशेष दमनकारी कानून वापस ल लिए गए या समाप्त होन दिया गया। कुछ ही महीनों मे सभी बन्दियो को रिहा कर दिया गया। उन्होंने या तो अपनी सजा की अवधि पूरी कर ली थी या उस सम्बध म निधारित की गई नीति के अनुसार एसा किया गया था।

बिहार म भयकर बाढ आई है इस बात को लेकर क्या श्रीमती गाधी स्थिति को सामाय बनाने की इच्छुक हैं ? यदि मुझे पेरोल पर या किसी भी तरह रिहा कर दिया जाता है तो मेरा सबस पहला कतव्य यह होगा कि अपन-आपको, अपने सभी मित्रा को तथा बिहार और अय राज्या के कायकताआ को लोगा की सवा म लगा दूगा। इस समय किसी सघष या आदोलन का सोचना जनता के साथ उपहास करना है जो इस समय अभूतपूव कष्ट सहन कर रही है। स्वाभाविक है कि बिहार का आदोलन अब बन्द करना होगा। मैंने प्रधानमत्री को अपने सदेश म यह कहा है कि मैं राज्य एव केन्द्रीय सरकार के सहयोग से काय करूगा। इससे उनके मन म जो भय है वह समाप्त होना चाहिए। इन परिस्थितियों म आन्दोलन से सम्बधित सभी बदियो को रिहा करना बुद्धिसगत बात होगी। उनको सहायता काय म लगा दिया जाएगा। मैं अखिल भारतीय नताआ को बिहार की सहायता के लिए आमत्रित करूगा। पूरे भारत म गिरफ्तारिया बिलकुल ही न्याय

1 गाधीवादी अथशास्त्री अब जीवित नहीं हैं।

गांधीजी को भी गिरफ्तार करके यरवदा जेल में बन्दी रखा गया था। इसके प्रतिक्रियास्वरूप नागरिक अवज्ञा जिसे गांधी इरविन समझौता के अनुसार स्थगित किया हुआ था, फिर से शुरू कर दी गई। ये घटनाएं जनवरी 1933 की हैं।

1934 के शुरू में यह आन्दोलन अभी जारी था किन्तु जनसमूह नागरिक अवज्ञा की बजाय गोपनीय रूप से भर्ती किए गए लोगों द्वारा ही नागरिक अवज्ञा की जाती थी। ये लोग स्टेट या जिला कांग्रेस कमेटियों द्वारा तैयार किए गए गुप्त कार्यक्रम के अनुसार बाहर आते थे और वैधानिक ढंग से कानून तोड़ते थे। वस्तुतः उक्त समितियां ही नागरिक अवज्ञा समितियां थीं, फलतः राजेन्द्र बाबू को जेल अवधि से कुछ महीने पहले ही रिहा कर दिया गया था। औपचारिक रूप से नागरिक अवज्ञा का कार्यक्रम नहीं हटाया गया था क्योंकि कार्यकारिणी के सदस्य अभी तक जेलों में थे। ऐसी स्थिति में सरकारी तौर पर इसको बन्द नहीं किया जा सकता था लेकिन प्राकृतिक विपदा—जैसे महान् भूकम्प आदि—के समय राजेन्द्र बाबू या बिहार का कोई भी दूसरा कांग्रेस नेता इस आंदोलन को चलाने की नहीं सोच सकता था। उनका प्राथमिक एवं तुरंत कार्य यही था कि वे अपनी सेवाएं पीड़ित जनता को दे दें। एक सहायता समिति का पहले से गठन हो चुका था। राजेन्द्र बाबू की अध्यक्षता के फलस्वरूप स्थिति में बहुत परिवर्तन हुआ। बड़े पैमाने पर सहायता कार्य शीघ्र ही प्रारम्भ कर दिए गए। मुझे याद है कि वायसराय के सहायता कोष के पीछे-पीछे राजेन्द्र बाबू का भी सहायता कार्य चल रहा था। शीघ्र ही बिहार में सामान्य बन्दियों को रिहा कर दिया गया। सहायता के लिए स्वयं गांधीजी बिहार आए, जवाहरलाल भी। जमनालाल[1] और दूसरे बहुत से अखिल भारतीय नेताओं ने सहायता

1 दिवंगत जमनालाल बजाज गांधीवादी उद्योगपति और कई वर्षों तक कांग्रेस पार्टी के कोषाध्यक्ष।

कार्यों मे कुछ काम किया । प्रोफेसर जे० सी० कुमारप्पा[1] ने सेवा अनुभाग का कार्यभार सभाला और इसी प्रकार अन्य ने। इस तरह औपचारिक रूप म किसीके द्वारा भी आदोलन को वापस लेने पर नागरिक अवज्ञा कायक्रम स्वत समाप्त हो गया, क्योकि इस बडी विपदा के कारण लोगो का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और राष्ट्रीय नेताओ का पूरा ध्यान और शक्ति इसमे लग गई थी। ब्रिटिश सरकार ने भी इस स्थिति का स्वीकार किया और विशेष दमनकारी कानून वापस ले लिए गए या समाप्त होन दिया गया। कुछ ही महीनो मे सभी बदियो को रिहा कर दिया गया। उन्होंने या तो अपनी सजा की अवधि पूरी कर ली थी या उस सम्बध म निर्धारित की गई नीति के अनुसार एसा किया गया था।

बिहार म भयकर बाढ आई है इस बात को लेकर क्या श्रीमती गाधी स्थिति को सामान्य बनाने की इच्छुक ह ? यदि मुझे परोल पर या किसी भी तरह रिहा कर दिया जाता है तो मेरा सबसे पहला कत्तव्य यह होगा कि अपने आपको, अपन सभी मित्रो को तथा बिहार और अन्य राज्यो के कायकर्ताओ को लोगो की सेवा मे लगा दूगा। इस समय किसी सघष या आदोलन का सोचना जनता के साथ उपहास करना है जो इस समय अभूतपूर्व कष्ट सहन कर रही है। स्वाभाविक है कि बिहार का आदोलन अब बन्द करना होगा। मैंने प्रधानमन्त्री को अपने सदेश मे यह कहा है कि मैं राज्य एव केन्द्रीय सरकार के सहयोग स काय करूगा। इसस उनके मन म जो भय है वह समाप्त होना चाहिए। इन परिस्थितियो मे आन्दोलन से सम्बन्धित सभी बदियो को रिहा करना बुद्धिसगत बात होगी। उनका सहायता काय म लगा दिया जाएगा। मैं अखिल भारतीय नेताओ को बिहार की सहायता के लिए आमन्त्रित करूगा। पूरे भारत म गिरफ्तारिया बिलकुल ही न्याय

1 गांधीवादी अर्थशास्त्री अब जीवित नहीं हैं।

सगत नही हैं और जब हमन अपना पूरा ध्यान और अपनी शक्ति को सहायता-काय मे लगा दिया है तो श्रीमती गाधी के मन मे यह भय नही होना चाहिए कि इस प्राकृतिक आपदा का उपयोग आदोलन के लिए करूगा। इस प्रकार देश म तनाव की स्थिति भी कम हो जाएगी। लोकतत्र फिर से लागू होगा और सामान्य जीवन जिसके सम्बन्ध म श्रीमती गाधी बहुत कुछ कहती हैं, फिर स स्थापित हो जाएगा।

प्रश्न यह है कि श्रीमती गाधी के पास इस सबको देखने के लिए क्या पर्याप्त कल्पनाशक्ति है? शायद इससे भी गहरा प्रश्न यह है कि क्या श्रीमती गाधी लोकतत्र चाहती हैं और पहले वाली सामान्य स्थिति चाहती हैं? 1971 से कम से कम जो वे कर रही हैं उससे यह स्पष्ट है कि वह लोकतत्र से घबडाती हैं क्योकि एसी स्थिति म उन्हे दुविधा है कि शक्ति उनके हाथ मे रहगी भी या नही। और शक्ति उनके पास रहनी ही चाहिए चाहे जो कुछ भी हो। फिर भी मुझ विश्वास है कि उनकी ओर स कोई उत्तर नही आएगा और यदि आएगा भी तो वह नकारात्मक होगा। ऐसा ही होन दीजिए शायद ऐसा होना ही ठीक है। लोगो को देखन द कि वह कितने नीचे जा सकती हैं। अन्त मे तो जनता की ही विजय होगी। मुझे ऐसा दिखाई दता है श्रीमती गाधी के मन म कोई स्वार्थ है जो इस भयानक आपदा के कारण उन्हें बिहार की स्थिति सामान्य बनाने म रोके हुए है। वह शायद सोचती होगी कि जयप्रकाश और साथ ही सभी विरोधी नेताओ बिहार के बहुत से सर्वोदयी नेताओ तथा कार्यकर्ताओ के हट जाने पर इस भयानक आपदा स बिहार को बचान का कुछ श्रेय उन्हे उनकी पार्टी बिहार सरकार तथा केन्द्र को मिलेगा। चाहे वह ऐसा सोचें लेकिन मुझे विश्वास है कि जसे ही सेना और वायुसेना सहायता-काय का काम सिविल अधिकारियो को सौंपेगी बिहार सरकार तथा प्रशासन और बिहार के कांग्रेसियो का अबाध

भ्रष्टाचार पनपने लगेगा। जैसाकि श्रीमती गांधी समझती हैं, इस सबका फल इतना मीठा नहीं होगा। 1966-67 के बिहार अकाल के अनुभव याद करें। मार्च, 1967 में संयुक्त सरकार ने कार्यभार संभाला था। उसमें अन्य जो भी दोष रहे हों किन्तु उसने सहायता-कार्य में कांग्रेसी सरकार की तुलना में अच्छे रिकार्ड स्थापित किए। मुझे बिहार के लोगों के हित में आशा करनी चाहिए कि इस बार बिहार की सरकार और कांग्रेस अच्छा काम करके दिखाएगी। यदि इसका श्रेय उनको और श्रीमती गांधी को जाता है तो वे इसके हकदार होंगे और कोई उसका बुरा नहीं मानेगा।

पुनश्च—ऊपर संघर्ष या आंदोलन के सम्बन्ध में मैंने जो भी विचार रखे हैं बिहार में उन्हें लागू रखते हुए सहायता कार्य में अधिक कार्य करने के उद्देश्य से इन्हें मेरे अन्तःकरण की आवाज मानी जाए, किन्तु जेल से दोबारा स्वतंत्र होने के लिए कोई छिपी हुई प्रवंचना है—यह न माना जाए। मैं यह लिखना चाहूंगा कि आज बिहार में जो हो रहा है, उसकी प्रत्यक्ष स्थिति का प्रभाव जो मुझपर पड़ा है यह सब उसकी प्रतिक्रिया है। 1966 67 के बिहार अकाल में वस्तुतः इसी प्रकार मैंने किया था। प्रभावित जिलों में सभी प्रकार का सर्वोदय कार्य स्थगित कर दिया गया था। दूसरे जिलों में सर्वोदय कार्यकर्ता हटाए गए थे और उन्हें प्रभावित क्षेत्रों में नियुक्त किया गया था। यहां तक कि अखिल भारतीय सर्वोदय आमंत्रित किए गए थे और उन्हें इन कार्यों पर लगाया गया था। उनमें प्रमुख थे सिद्धराज ढड्ढा।

उस समय सर्वोदय कार्यकर्ताओं में कुछ मतभेद हो गया था किन्तु अधिकांश ने इनके लिए अपना सहयोग दिया। राममूर्तिजी[1] ने ग्राम समाजों के माध्यम से सहायता-कार्य करने का प्रस्ताव किया और उसका विनोबाजी ने समर्थन किया किन्तु दुर्भाग्यवश

1 आचार्य राममूर्ति विख्यात सर्वोदय कार्यकर्ता और बुद्धिजीवी।

अधिक से अधिक एक दजन ग्राम ही ऐसे थ जिनम ग्राम-सभा काय करती थी और सहायता के इतने बडे काय को सभाल सकती थी। गावो म प्राय वह भावना पनप रही थी कि यह सहायता काय सम्पन्न परिवारो के लिए ही है ताकि सहायता लाभो म उन्हे अधिकाश हिस्सा मिल पाए। ग्राम सभाओ द्वारा सहायता काय करने के सम्बध म मुझे कोई आपत्ति नही थी। दरअसल मैं हृदय से चाहता था कि इतने अधिक पमाने पर वहा जो बिहार सहायता समिति काय कर रही थी उसे देखते हुए सिवा कुछ विरल अपवादो के उनपर निभर करना असभव था। फिर भी 1961 के वष म जब मुगेर जिला लखीसराय खडगपुर और समीपवर्ती क्षत्र जहा बाढ के शिकार पहले सभी हुए थे अत्यधिक वर्षा—विशेष रूप स पहाडी क्षेत्रो के कारण उन्हे बाढो ने घर लिया। उसे देखते हुए मैंने उसी नीति को अपनाया।

पुनश्च—जसाकि मैंने ऊपर लिखा है शायद नागरिक अवज्ञा आदोलन चुपके से अपरिचित हाथो म नही चला गया या जसे यह आदोलन गुजरा वस्तुत इस अखिल भारतीय काग्रेस समिति की पटना बठक म औपचारिक रूप से वापस ले लिया गया—शायद मई 1934 को (हम काग्रेस समाजवादियो ने इसका विरोध किया था) किन्तु एक प्रस्ताव अवश्य पास किया गया था और एक रचनात्मक कायक्रम अपनाया गया था। यह वही समय था जब मैंने बिहार समाजवादी पार्टी की ओर स समाजवाद म विश्वास रखने वाले काग्रस के कायकर्ताओ का सम्मेलन बुलाया। आचाय नरेन्द्रदेव ने इस सम्मेलन की अध्यक्षता की थी और प्रोफेसर बारी स्वागत समिति के अध्यक्ष थे। यह सम्मेलन अजुमन इस्लामिया हाल म हुआ और मुझे भारतीय नेशनल काग्रेस के भीतर समाजवादी काग्रेसजनो की अखिल भारतीय पार्टी का सगठन मत्री चुना गया। पीछे देखने पर मालूम होता है कि यह निणय गलत था कि पार्टी का गठन किया जाए जिसकी नीति कायक्रम, सदस्यता

विधान और निगम स हो। एक खुला समूह या ब्लाक अच्छा रहता और कानून की दृष्टि स वध होता। हाई कमान ने कोई कारवाई न की क्योकि काग्रेस के समाजवादियो की प्रामाणिकता सहायता और स्वतन्त्रता के प्रति उनकी निष्ठा प्रश्नाधीन नही थी।

अगस्त, 30

पिछले पष्ठो म न्खिाई दगा कि आन्दोलन की धारणा म राज्य की सरकार के विरुद्ध सघष अनिवायत आवश्यक नही है। यह सम्बन्धित सरकार को निणय लेना होगा कि उस सहयोग देना है या सामना। प्रश्न यह है कि जहा भी काग्रेस सरकारो न लोगो की मागो की सूची दखी है तो उनके लिए कभी भी सहयोग का माग अपनाना सम्भव नही हुआ। प्रधानमत्री के नाम अपन पत्र म मैंने बताया था कि इसका उत्तर काग्रस मत्रियो म भ्रष्टाचार है। श्रीमती गाधी का अपना चरित्र यानी धनी व्यापारीवग म पार्टी और चुनाव प्रबध के लिए करोडो रुपय इकटठा करना एक राजनतिक भ्रष्टाचार ह। इससे अधिकाश शक्ति के इच्छुक काग्रेसजना की सवेदनशीलता पूरी तरह समाप्त हो गई है। जवाहरलाल क समय म भी पार्टी और चुनाव के लिए निधि इकटठी की जाती थी। श्री बाबू क समय मे भी (बिहार की बात कर रहा हू कि यह सभी जगह व्याप्त था और व्यय करन का क्षेत्र तुलनात्मक रूप न कम था और अधिकतर रुपया लेखो मे दिखाया जाता था)। किसी भी मामले म यह नही हुआ कि केवल जवाहरलाल जानत थे कि कितना एकत्र किया जाना है बल्कि दूसरे भी जस सरदार या एस० के० पाटिल भी जानत थे और न ही इस प्रणाली म य व्यापार इतने लज्जाजनक ढग से किए गए जितने कि श्रीमती गाधी के समय म किसीने सुने हो।

जसे भी हो, हाल ही के विद्यार्थी तथा जन-आदोलन के सामन भ्रष्टाचार केन्द्रीय विषय के होने के कारण और राज्यो या केन्द्र म काग्रेस मत्रालय इसका सामना करने के लिए तयार न होने के कारण उन्होंने आदोलन के सम्बन्ध में लगातार विरोधी दृष्टिकोण अपना लिया। इसस भी बढकर शायद एक और कारण था यद्यपि वह दिखाई न दे रहा था। काग्रेस ने जब देखा कि यह आदोलन ऊपरी उपचारो म सतुष्ट होनेवाला नही है बल्कि इसका उद्देश्य समाज म राजनतिक परिवतनो सहित मूलभूत परिवतन लाने का भी है दूसरे शब्दो म सम्पूण क्रान्ति है तो उसके लिए यह कहना कि (सरकार की ओर से) लोकतत्र खतरे म आन्तरिक खतरे इत्यादि की आवाजें बुलन्द करना स्वाभाविक था।

प्रश्न यह है कि क्या विरोधी दल अलग-अलग रूप स व्यवहार करेंगे ? इस अभी देखना है। किन्तु एक बार आन्दोलन म भाग लेने के उपरान्त, यद्यपि यह पार्टी का चुनाव उद्देश्य की प्राप्ति के लिए भी है (राजनतिक पार्टियो द्वारा ऐसा करना उनके स्वभाव म है), वे अपने आप को सम्पूण क्रान्ति के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वचनबद्ध पाते है साथ ही आन्दोलन की प्रक्रिया म सुधारवादी भी। अपनी पार्टी के हितार्थ आदोलन को चलाने के उद्देश्य के सम्बन्ध म भी मैं इनकार नहीं कर सकता कि उन्होंने बिहार म ऐसा करने का प्रयास किया है—पार्टी को सगठित करना और अनुशासित बनाना—जिसके लिए वे अधिक दोषी रहे थे। किन्तु पूरे चित्र को देखते हुए यह कहना गलत नही होगा कि जनता का हित सदा ही पार्टी के हित स ऊपर रखा गया है। यह अपवाद केवल उन मामलो म है जहा एक पार्टी का नियत्रण है, और बिना पार्टी की शक्तिया—जस विद्यार्थी नागरिक और स्थानीय सर्वोदय कायकर्ता कमजोर है। ऐसे मामलो मे सम्बन्धित पार्टी ने अपनी पार्टी के हितो को आन्दोलन के हितो के साथ

मिला लिया। बिना पार्टी की शक्तियों को खास तौर पर मजबूत करने के उद्देश्य से मैं निर्दलीय युवावर्ग छात्रों, जिन्हें छात्रयुवा संघर्षवाहिनी कहते हैं—की नई स्वयंसेवी शक्तियों को केन्द्रित करने में तत्पर रहा हूं। 26 जून 1973 के दिन—जिस दिन मुझे गिरफ्तार किया गया उस दिन—इस युवा वर्ग की एक बड़ी रैली होनी थी और मुझे उसमें भाषण देना था। शान्तिपूर्ण सामाजिक या सम्पूर्ण क्रान्ति की इस धारणा के सम्बन्ध में एक कठिनाई है। क्या अपनी इच्छा से आंदोलन के लिए आवश्यक मनोवैज्ञानिक वातावरण पैदा किया जा सकता है? यदि नहीं तो इस धारणा का कोई आंदोलन भी उसी तरह समाप्त हो सकता है जिस प्रकार ग्राम स्वराज के लिए विनोबाजी का आंदोलन। सत्य यह है कि सामाजिक शक्ति (विशाल अर्थों में प्रयोग करते हुए) हमेशा ही गरीबी, बेरोजगारी और गलत शिक्षा इत्यादि में विद्यमान रहती है किन्तु फिर भी आन्दोलन की आग सुलगाने के लिए चिंगारी जलाने की आवश्यकता बनी रहती है ताकि भारतीय समाज का मानस प्रदीप्त किया जा सके।

इसके अतिरिक्त एक मामूली कठिनाई और भी है—यह गैर कांग्रेस और गैर सी० पी० आई० विरोधी दलों के सम्बन्ध में है। यदि कोई ऐसा आंदोलन चलाया जाए जो कांग्रेस सरकार के विरुद्ध न हो तो वे इस ओर जरा भी ध्यान नहीं देते, क्योंकि ऐसे मामले में उन्हें वस्तुतः भय है कि यदि आन्दोलन किन्हीं निहित स्वार्थों के विरुद्ध है (जो होना चाहिए ताकि उसका कोई अर्थ हो) तो उनके इसमें भाग लेने से मतदाताओं पर कहीं प्रतिकूल प्रभाव न पड़ जाए। उनकी इतनी ही चिन्ता है।

इन कठिनाइयों का क्या कोई उत्तर है? यदि हम साफ स्लेट पर लिखना प्रारम्भ कर दें तो उत्तर होगा—नहीं। भविष्य के आंदोलन का सम्बन्ध अतीत के आन्दोलन से है। गिरफ्तारियों के समय जहां बात समाप्त हुई थी, वहां से प्रारम्भ करके आपात

अगस्त, 31

प्रिय श्री देवश्याम[1]

प्रधानमंत्री को मैंने पेरोल पर रिहा करने के सम्बन्ध में जो प्रार्थना की थी, उसपर मैं विचार कर रहा हूं। मुझे ऐसा दिखाई देता है कि प्रधानमंत्री के मन पर शायद यह भार होगा कि मैं इसका राजनैतिक उद्देश्यों के लिए लाभ उठाऊंगा। इससे शायद उनके मन में अनुकूल निर्णय लेने में कठिनाई हो रही हो। इसका अनुमान लगाते हुए मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि प्रधानमंत्री को कह दें कि इस सन्दर्भ में उन्हें किसी किस्म का डर नहीं होना चाहिए। पेरोल पर रिहाई की अवधि को किसी राजनैतिक उद्देश्य के लिए लाभ उठाने में मैं अनैतिक और नीतिविरुद्ध समझता हूं। इस समय राजनीति की बातें करना लोगों की कठिनाइयों और कष्टों के साथ मजाक करना है। जिस व्यक्ति में तनिक भी मानव संवेदना है वह कभी भी ऐसी बात नहीं सोच सकता।

प्रधानमंत्री के नाम पत्र के मसौदे को मैंने फिर से पढ़ा है। एक प्रकार से इसे तार की भाषा में लिखा गया था ताकि तार या टेलीफोन द्वारा इसे संचारित किया जा सके। संदेश को दोबारा पढ़ने पर मैं देखता हूं कि यह आश्वासन कि मैं अपने-आपको सहायता कार्यों तक ही सीमित रखूंगा इसमें बिल्कुल स्पष्ट है। इन शब्दों से तो यह और भी स्पष्ट हो जाता है— राज्य और केंद्रीय सरकारों के सहयोग से।

मैं आपका आभारी हूंगा यदि यह स्पष्टीकरण आप दिल्ली पहुंचवा दें, ताकि मेरी प्रार्थना पर विचार करने से पूर्व यह प्रधानमंत्री के पास पहुंच जाए।

आपका

—जयप्रकाश नारायण

1 श्री एम० जी० देवश्याम चंडीगढ़ के डिप्टी कमिश्नर।

(टिप्पणी जारी)—कल जो मैंने लिखा था, वह सम्पूर्ण क्रान्ति के एकतरफा सघर्ष है और दूसरे राज्यों म फल सकता है, किन्तु इसके अतिरिक्त एक और सहज मार्ग शायद हो सकता है। गुजरात और बिहार के संघर्षों से जो परिणाम देख सभव है, एक छोटे-स सघर्ष से प्रारम्भ होकर जगल की आग की तरह फल जाए। गुजरात म यह शुरू हुआ छात्रो के हास्टल के एक वाडन के विरुद्ध, जिसका परिणाम यह हुआ कि श्रीमती गाधी और केन्द्रीय सरकार न विवश होकर गुजरात सरकार को त्यागपत्र देन के लिए मजबूर किया और अत म विधानसभा भी भग कर दी। दुर्भाग्यवश गुजरात म कोई भी नता नही था जो इस सघर्ष को उस समय तक आगे बढाता जब तक कम से कम दूसरे उददश्यो की पूर्ति नही हो जाती—भ्रष्टाचार का हटाया जाना शिक्षा सम्बन्धी सुधार, बेराजगारी की समस्या का समाधान। गुजरात के छात्रो के लिए यह शानदार विजय थी और उनकी सफलता के लिए कोइ भी उन्हें दोषी नही ठहरा सकता। इस सफलता और मोरारजी भाई के अनशन क कारण चुनाव हुआ और जनता मयुक्त दल की विजय हुई। उस सघर्ष की यह बहुत बडी उपलब्धि है किन्तु चन्द्रशेखर की तरह भावी इतिहासकार पूछ सकत हैं—'यह सब किसलिए हुआ ' अगर यही सब कुछ था तो आगामी चुनाव तक वे प्रतीक्षा क्या नही कर सकत थे ?' यह श्रीमती गाधी के अनुग्रहपूर्ण प्रचार का विषय है।

अत यह प्रश्न और इस तरह का प्रचार न्यायसगत होता, यदि गुजरात सघर्ष काग्रेस के स्थान पर जनता सगठन द्वारा सत्ता प्राप्त करके यह समाप्त हो गया होता। बाहरी तौर पर यह एसा दिखाई दता है, किन्तु इस विषय को गहराइ स दखने पर परिणाम अनिवायत ये निकलत हैं कि गुजरात सघर्ष भारत के लोकतन्त्र की ओर पदचिह्न था साथ ही ससदीय लोकतन्त्र का जिसम जनता,

लोग केवल निष्क्रिय एजेंट नहीं हैं बल्कि सक्रिय, तकाजा करने वाले और अन्त में आदेश देनेवाले हैं। यह जनता का गौरव है कि भारत में पहली बार गुजरात संघर्ष को संगठित पार्टियों ने अपना आधार माना है और उनको अपनी इच्छा कहने का अधिकार मिला है। हां, यह सही है कि इस संघर्ष को छात्र और युवक ही चला रहे थे किन्तु यदि उनके पीछे जनता का सहारा न होता तो वे जीत नहीं सकते थे। और जनता ने छात्रों को क्या समर्थन दिया इसका कारण यह है कि छात्रों ने जनता की शिकायतों इच्छाओं और आस्था (चाहे वे कितने अस्पष्ट रूप में बनाए गए हों) को माना। गुजरात संघर्ष के बाद भारत और भारतीय लोकतंत्र वह कभी भी नहीं होगा। यह सब-कुछ कहने के बाद मैं फिर बात को दोहराऊंगा कि यह खेद की बात है कि एक विधानसभा भंग करने के साथ गुजरात संघर्ष समाप्त हो गया। एक मनोपूर्ण और संवेदनशील सरकार का कोई भी उपयोग नहीं कर रहा ताकि क्रांतिकारी संघर्ष—चाहे इसे नव निर्माण संघर्ष कहें या जो कुछ भी कहें—फिर से शान्तिकारी आंदोलन शुरू करे। यह आंदोलन एक उदाहरण प्रस्तुत करे कि समाज में कुछ शांति लाने के लिए विरोध के स्थान पर सहयोग कितना उपयोगी सिद्ध होता है।

ऐसा दिखाई देता है कि प्रारम्भ में जिस बात को कहना प्रारम्भ किया है उससे मैं विषयांतर हो गया हूं। सीधी बात है कि कोई भी नहीं जानता कि बिहार और गुजरात के बाद वहां पर एक छोटी सी चिनगारी एक राज्य या किसी क्षेत्र में क्रांतिकारी संघर्ष का कारण बन सकती है। पहले जैसे दो उदाहरणों में बताया गया है कि सभी जगह ये पूर्व शर्तें व्याप्त हैं देश में यह कहीं भी प्रारंभ हो सकती है और फल सकती है। यह और ही तरह का और अपूर्व ढंग है कि बिहार का संघर्ष भारत के दूसरे भागों में भी फल जाए।

(टिप्पणी जारी) — श्रीमती गाधी न अपने एक बयान म मेरे और मेरे साथियो के सम्बन्ध म निरर्थक बोलते हुए कहा कि उन्ह छात्र कोई नुकसान नही पहुचा सकते। चाहे व इस जलाए अन्य प्रकार के हिंसक काय करें तथा हुल्लडबाजी के दृश्य प्रस्तुत करें किन्तु (हमारे लिए) व पवित्र हैं और उनके विरुद्ध कुछ भी नही किया जा सकता, इत्यादि। मैंने निणय लिया था कि इसके आगे मैं श्रीमती गाधी की बातो पर टिप्पणी नही करूगा किन्तु इसके बारे म मुझे कुछ अवश्य कहना है, क्योकि बिहार और गुजरात के सघर्षों म छात्रा न इतना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है कि भविष्य म भी इससे अधिक योगदान देंगे। गुजरात म सदेह की बात है कि सम्पत्ति और व्यक्तियो के साथ हिंसात्मक कार्यवाही की गई किन्तु एसा छात्रा के उस छोटे-से अग ने किया था जो या तो यह जानना चाहते थे कि वे कितने रणवीर थे या व एसी राजनीतिक पार्टी के प्रभावाधीन थे जो शान्तिपूर्ण रास्ते अपनाने के लिए वचनबद्ध नही है। अधिकतर मामलो मे हिंसात्मक कायवाही पुलिस की उत्तेजना स—(कुछ मामलो म बडी चरम सीमाए और अभद्र रूप मे) सघष तीव्र होने का कारण बनी। किन्तु जसाकि था गुजरात सघष म भाग लनवाल अधिकाश छात्र शान्तिमय प्रणाली म विश्वास रखते और उसको अमल मे लानेवाले थे। सयोगवश नव निर्माण समिति के अधिकाश नताओ म से एक जो हिंसा का खूब प्रचार करता था, अब श्रीमती गाधी की पार्टी मे शामिल हो गया है। जहा तक बिहार का सम्बन्ध है यह सरकारी क्षेत्रो म भी माना गया है कि यदि म हस्तक्षेप न करता और मेरा सक्रिय मागदशन न होता तो छात्रों द्वारा भारी हिंसात्मक कार्यवाही की गई होती। श्रीमती गाधी इन तथ्यो को जानती हैं किन्तु उनम यह ईमानदारी नही है कि जिसका जो देय है उसको वह

दें। यह कहकर वह मेरी निन्दा करती रही है कि छात्र आग लगा सकते थे और तबाह कर सकते थे और मैंने (परोक्ष रूप में मेरे बारे में कुछ कहते हुए जैसा कि यह प्रायः करती है) उनकी कारवाइयों की कभी भी निन्दा नहीं की। यह झूठ है। एक उदाहरण देता हूँ—बिहार सत्याग्रह के प्रारम्भिक दिनों में जब सत्याग्रही विधानसभा के सदस्यों को विधानसभा से रोकने का प्रयास करते थे और मार्ग में लेट जाते थे और एक दिन सत्याग्रहियों द्वारा जब कुछ विधानसभा के सदस्यों की पिटाई की जिसके परिणामस्वरूप कुछ की कमीज़ें फट गई तब मैंने सार्वजनिक रूप में इसकी निंदा की थी और विधानसभा के अध्यक्ष को अपना दुःख प्रकट करते हुए लिखा था कि वे विधानसभा के ऐसे सदस्यों के प्रति मेरा गहरा खेद और क्षमा-याचना भिजवा दें (अध्यक्ष ने मेरे इस पत्र को कृपापूर्वक विधानसभा में पढ़कर सुनाया)। अन्य और भी कुछ मौके थे जब मैंने हिंसा की निंदा की और सीधे शांतिपूर्ण ढंग अपनाने के लिए आग्रह किया। जब एक उत्तेजित भीड़ जिसे अनावश्यक तौर पर भड़काया गया था ने एक सिपाही को मार दिया—जो कि निर्दोष था—मैंने न केवल इसकी निन्दा की थी बल्कि सार्वजनिक तौर पर बिहार पश्चिम स

है कि विश्वविद्यालय के छात्र क्यो बसो को जलाते हैं और इसी प्रकार के दूसरे काय करते हैं ? देश के सामने य बहुत महत्त्वपूण प्रश्न हैं। छात्र अशान्ति का अध्ययन सभी प्रश्नो का उत्तर नही देता, किन्तु उपलब्ध उत्तरो के आधार पर नीति निधारित करना सभव है। किन्तु इस नीति को लागू करने का किसको साहस है ? इस नीति मे न केवल शिक्षण सस्थाए ही आएगी बल्कि अन्य क्षेत्र भी—जसे आर्थिक और सामाजिक विकास, उनका निर्देशन और समाज म वग सगठन व पुर्ननिमाण आदि पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। मुझे भय है कि मध्यवग के लोग, जिसमे अधिकाश राजनीतिज्ञ अधिकारीवग, अध्यापक व्यापारी व्याव सायिक और दूसरे इसी प्रकार के लोग आते हैं, जो किसी आकर्षक बहाने के आधार पर शक्षिक प्रणाली या सामाजिक आथिक राजनतिक सास्कृतिक क्षत्र म क्रातिकारी परिवतन को रोक देंगे। शायद इन टिप्पणियो म किसी दिन मैं इस बात को और प्रतिपादित करूगा।

आपातस्थिति म आज चाहे कोई बसें न जलाई जा रही हो और श्रीमती गाधी शायद सोच रही होगी कि छात्र-अशान्ति, अनुशासनहीनता तथा हिंसा की समस्या उन्होंने हल कर दी है किन्तु यदि आपातस्थिति अधिक समय तक चलती है तो श्रीमती गाधी को ऐसे विस्फोट का सामना करना पडेगा, जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की होगी।

●●

(टिप्पणी जारी)—इसस पूव इन टिप्पणियो म (जुलाई 21 को देखें) मैंने उन दो मुददो का जिक्र किया है जो मैं बिहार सघष की झनझनाहट और हलचल स निकालना चाहता हू। बिहार

टाइप के जनता आदोलन के उददश्यो की यदि सूची बनानी होती तो पूर्वकथित टिप्पणियो म बनाए गए उददेश्यो म शामिल करन के लिए उनका सबसे पहला नम्बर होता। दूसरा उददश्य होता—जनता के सहयोग स क्रातिकारी सघप प्रारम्भ करना, ताकि समाज म पूरा परिवतन लाया जा सके। इस सघप म शायद युवावग और छात्रो को सबसे आग होना होगा—चाहे सरकार से सहयोग प्राप्त करके या मुकाबला करक। राजनतिक दलो के कत्तव्य के सम्बध म भी बातचीत करनी होगी—परिवतन के एजेंट अगुए आदशवादी युवावग के कत्तव्य, परिवतन के लिए व्यापक सघप की जरूरत है। इन बातो को हमे स्पष्टतया सविस्तार बताना होगा। यहा पर मैंने उन्हे स्मरण कराने के लिए नोट किया है। अगले कुछ दिना म इनपर सविस्तार लिखना होगा।

सितम्बर 4

प्रधानमत्री के पास पत्र अभी नही गया है। मैंने अतिम मसौदा तयार करने की भी परेशानी नही उठाई। मैं दिल्ली स पत्र के उत्तर की प्रतीक्षा मे हू।

आज एक प्रकार का कुछ उत्तर प्राप्त हुआ है। खाद्य और कृषि मत्रालय के अपर सचिव श्री वोहरा[1] आज दोपहर बाद आए हैं। प्रोफसर पी० एन० धर ने उन्ह मुझसे मिलन को कहा है। श्री वोहरा न मुझे बताया कि व पटना गए थ। उन्होंन वहा सब क्या देखा और क्या किया, उनस जो बहुत ही असाधारण बात का पता चला वह यह कि सिवा कमिश्नर पटना और जिला मजिस्ट्रेट

1 श्री बा वी० वोहरा—भारत म भूमि तथा जल-परीक्षण समस्याओं के विशषज्ञ थे।

के मुख्यमंत्री, मुख्य सचिव और दूसरे मंत्री और अधिकारी जैसे चाट खाए हुए हैं और कुछ करने के लिए कोई भी कार्यवाही नहीं की। मुख्यमंत्री अपने घर म ही असहाय पड़े हैं और उन्होंने नाव द्वारा अथवा बाढ के पानी को लाघकर उससे बाहर आन का नही सोचा है। एक वरिष्ठ अधिकारी की तरह श्री वोहरा इन सभी मामला के सम्बन्ध म बहुत अधिक सतर्क और बहुत सयत थे। उनकी बात से स्पष्ट था कि यदि इस मामले म केन्द्रीय सरकार न जूझती तथा वायुसेना का उपयोग न करती और राज्य सरकार की मदद न करती तो राज्य सरकार उस समय तक कुछ न करती जब तक कि बाढ का पानी नही घट जाता और स्थिति म काफी सुधार न हो जाता। इन सभी बातो म श्री वोहरा का योग दान सराहनीय दिखाई देता है।

श्री वोहरा ने जो कहा उन सबको सुनकर मैं हैरान था कि उन्हे मेरे पास क्या भेजा गया। वे बहुत चौकस भी थे, किन्तु यह स्पष्ट था कि प्रो० धर मेरी प्रतिक्रिया जानना चाहते थे। इस महसूस करते हुए श्री वोहरा ने जब अपनी बात समाप्त की तो मैंने उनसे कहा कि उनकी बातें सुनकर मैं बहुत ही इच्छुक और अधीर हो गया हू। मैं पटना और बिहार के दुखी लोगो के बीच जाना चाहता हू ताकि अपनी योग्यता एव क्षमता के अनुसार उनकी सेवा कर सकू। मैंने उनसे कहा कि जनता के अपने पाव पर खडा होने के लिए उनकी सहायता की जानी चाहिए। इसके लिए उन्हे इस आघात स जाग्रत करना चाहिए और सगठित करना चाहिए। मुझे याद है कि यह काम सरकार और काग्रेस नेता नहीं कर पाए —यह भी मैंने श्री वोहरा से कहा कि बिहार की विपदा देश की विपदा है और उसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास किया जाना चाहिए। यदि मैं बदी न होता मैं देश के दूसरे भागो से स्वय सेवक एकत्र करता, धन इकटठा करता। मैंने उन्हें बताया कि स्वय सेवी सहायता, सस्था द्वारा खर्च किया गया एक रुपया सरकार

द्वारा खर्च किए गए दस रुपयों के बराबर है। अतः मैं भारत सरकार या प्रधानमन्त्री से निवेदन करता हूं कि मेरी पहली प्रार्थना पर गम्भीरता तथा सहानुभूतिपूर्वक ध्यान दें।

मैंने श्री वोहरा को एक और बात बताई जिसका सम्बन्ध इस समस्या से था, यद्यपि श्री वोहरा इस मामले के किसी राजनतिक पहलू पर बातचीत करने में कुछ परेशान दिखाई देते थे। मैंने उनसे कहा कि प्रो० धर को मेरी ओर से कह दें कि आपातस्थिति के नाम पर जो नीतियां बाद में बनाई गई हैं, उनकी समीक्षा का यह उचित समय है। मैंने उन्हें आश्वासन दिया कि राजनतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इस अभूतपूर्व आपदा से लाभ उठाने का प्रश्न ही नहीं उठता। बिहार स्थिति से राजनतिक लाभ लेना लोगों की कठिनाईयों का परिहास होगा।

एक और मनोरंजक बात मैंने पाई श्री वोहरा की, वह यह थी कि प्रतिवर्ष जल ऊपर की उर्वर भूमि सागर में बहा ले जाता है इन समस्याओं का उन्होंने अध्ययन किया था। वे किसी गम्भीर बात तथा दीर्घकालीन व्यवस्था के रूप में कुछ किए जाने के लिए बहुत कुछ इच्छुक दिखाई देते थे और बताया कि जिस बात की आवश्यकता है वह है राजनतिक संकल्प। मैंने उन्हें बताया कि मैं उनसे बहुत अधिक सहमत नहीं हूं। बिहार में मैंने देखा है कि प्रत्येक प्राकृतिक आपदा जैसा कि 1966-67 का महादुर्भिक्ष था, दीर्घकालीन समाधानों के सम्बन्ध में तथा युद्ध-स्तर पर कार्य संचालन के लिए बहुत बातें की जाती हैं, किन्तु जैसे ही आपदा समाप्त हुई राजनीति का अधम स्वार्थभरा खेल प्रारम्भ हुआ।

श्री वोहरा का अनुमान था कि जल प्रबन्ध तथा भूमि प्रबन्ध के व्यापक प्रयोग पर लगभग 50 हजार करोड़ लागत आएगी। इस गरीब देश के लिए यह बहुत बड़ी रकम है। किन्तु यदि प्राकृतिक विपदा से होनेवाली हानि जमा की जाए तो स्वतन्त्रता से अब तक 50 हजार करोड़ से ज्यादा की हानि हो चुकी होगी।

बिहार दुर्भिक्ष के दिनों म 600 करोड रुपये की हानि का अनुमान था जिसमे पटना मे ही 100 करोड़ की हानि हुई थी।

प्रसगवश मैं यहा उस प्रश्न का उत्तर दे रहा हू जो प्राय पूछा जाता है (अन्य के अलावा मेरे द्वारा भी) कि प्रकृतिप्रदत्त बिहार को धनी होना चाहिए था किन्तु यह सबसे गरीब राज्य है। अवश्य ही यह बात बन्त महत्त्व का प्रश्न है। 1966 से प्रारम्भ करके एक दशक के भीतर बिहार मे 1100 करोड रुपये की हानि हुई है और वह भी केवल दो विपत्तिओ—दुर्भिक्ष अकाल तथा इस वष की बाढ—से। इसके अलावा प्रत्यक वष राज्य का एक भाग या अन्य सूखा या बाढ़ा से प्रभावित हुआ है।

सितम्बर, 5

आज के हिंदुस्तान टाइम्स म पटना से तपनदास गुप्ता ने एक सक्षिप्त रपट भेजी है। कितना भयकर डरावना चित्र उन्होंने खींचा है! बिहार मत्रालय तथा श्रीमती गाधी के राज्य म उनकी अदभुत पार्टी के पूण नेतत्व या पहलकदमी के क्या कहने! ऐसा दिखाई देता है कि 25, 26 तथा 27 जून के भयकर दिनो मे वे पुणत ही निष्क्रिय रहे। जसाकि कल श्री वोहरा ने कहा मुख्यमत्री तथा अन्य मानसिक आघात से पीडित थ और वे उससे उस समय तक नही निकले जब तक कि केन्द्रीय सरकार ने पहलकदमी नही की। मुख्यमत्री ने जो सबसे पहली बठक बुलाई वह भी श्री वोहरा की पहलकदमी पर। इसम राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारी बिजली बोर्ड के अध्यक्ष, रेला के मडल अधीक्षक, वायु सना और देश के कुछ नेताओ ने भाग लिया। किन्तु यह जानकर प्रसन्नता होती है कि सभी नागरिक इस मानसिक आघात से पीडित नही थे। साधारण लोगो के कुछ वग ने पहलकदमी और मानवीय शील

का परिचय दिया और यह नौजवान सुरेश कौन है ? यह अवश्य ही बडा साहसी तथा दयावान होगा। तपन के अनुसार उसने सबसे पहले सहायता काय प्रारम्भ किया। गहरे पानी को पार करते हुए बिस्कुट तथा दूसरे सामानसहित लोगो के पास पहुचा। ईश्वर जानते है कि इस तरह के बीसो नौजवान बडी आयु के भी पुरुष और महिलाए ऐसे होगे जिन्होने दूसरे क्षेत्रो म विभिन्न तरीको से सहायता-काय किया होगा। इस घडी मे मेरा मन पटना और बिहार जाने के लिए कितना लालायित है मगर अफसोस ! ईश्वर की अनुकम्पा रही तो मैं अवश्य वहा जाऊगा।

●●

जसाकि अनुमान था जेनेवा म मिस्र इसरायल के करार पर हस्ताक्षर हो गए। जसाकि यह भी अनुमान था कि रूस न प्रतिनिधि भेजना मना कर दिया है। इसी तरह अमरीका ने भी भाग नही लिया है। मानवता डा० किसिंजर के प्रति कृतज्ञ होगी जिनकी कृपा से बातचीत म कुछ सुधार हुआ है। महत्त्व केवल इस बात मे है कि न केवल इन दो राष्ट्रो के बीच सम्बन्ध के अधिक मजबूत तथा व्यापक होने का आश्वासन दिया गया है बल्कि निर्भीक, साहसी तथा देशभक्त अराफ़त को भी उसम सम्मिलित किया गया है। इसी प्रकार स्वभावत सीरिया भी। सदर सादात वस्तुत बहुत ही दूरदर्शी राजनीतिज्ञ हैं। जो काय उन्होने किया है इसके लिए अवश्य ही उन्हे बहुत साहस जुटाना पडा होगा। मैं कामना करता हू कि जब तक करार को अन्तिम रूप देकर पक्का न कर लिया जाए वे जीए और पश्चिम एशिया और पश्चिम एशिया ही नही बल्कि विश्व के समृद्ध और शान्तिमय

होने की जो नई किरण फूटी है उसे बुझाने में कोई दुश्मन सफल नहीं हो।

यह प्रसन्नता की बात है कि सादात अब गोलन हाइटस—जो सीरिया और फिलिस्तीनियों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं की ओर विचार करने के लिए इच्छुक हैं। किन्तु उन्हें यह स्वीकार करना चाहिए कि इसरायल का भी सुरक्षित और गारण्टीप्राप्त सीमाओं में रहने और पनपने का अपना अधिकार है। उन्हें यह भी स्पष्ट रखना चाहिए कि पश्चिम के गम्भीर युद्ध में दोनों महाशक्तियाँ बुरी तरह फंस जाएगी जिससे विश्व का अंत भी हो सकता है या जैसे कि आज की दुनिया है या बन रही है शायद यहां पर मानव की सुरक्षा का प्रश्न ही सर्वोपरि है। यदि उनके सामने युद्ध या शान्ति का अन्तिम विकल्प हो तो उन्हें युद्ध से अवश्य हट जाना चाहिए और शांति को चुनना चाहिए। यह उन्हें मानवता के लिए, प्यार के कारण नहीं किन्तु इस विषय में अपने अस्तित्व के लिए करना चाहिए। अतः यह उचित ही है कि वर्तमान अरब के विद्वान और साहसी नेता अनवर सादात इसके लिए पहलकदमी करें। हमें आशा है कि सऊदी अरब की ठोस अधिकारपूर्ण और संतुलित शक्ति सादात तथा न्याय और चिरस्थायी शान्ति की ओर रहेगी।

पश्चिम एशिया में शक्ति के संतुलन पर शायद रूस चिंतित है। रूस महान देश है और शान्ति के लिए बड़ी बाजी लगा सकता है। अरब इसरायल युद्ध का धीरे धीरे समाधान हो रहा है, अतः अमरीका और रूस दोनों देखेंगे कि अरब लोगों की राष्ट्रीयता यह सहन नहीं करेगी कि कोई दूसरा उनके मामले में हस्तक्षेप करे। प्रत्येक देश में रूस के विश्वसनीय एजेंट—स्थापित कम्युनिस्ट पार्टी—हैं किन्तु इन पार्टियों में किसीका भी भविष्य मैं अच्छा नहीं समझता, क्योंकि जब भी आज की विश्व शासन पद्धति में वास्तविक राष्ट्रीयता और अतिरिक्त क्षेत्रीय देशभक्ति में संघर्ष होगा तो साम्यवाद ही घाटे में रहेगा, जब तक पूर्वी

यूरोप की तरह इन देशो म रूस अपनी मनाए नही फला देता। यदि इन मामलो मे रूस निरतर अपरिपक्व रहगा तो उसे अमरीकी शक्ति का आमना सामना करना होगा। मैं नहीं समभता कि अमरीका या रूस के लिए इस माग का अपनाना सम्भव है। दुनिया इतनी सिकुड गई है और य महाशक्तिया विश्व म इस प्रकार टागें फलाए हुए हैं कि जस कि यूरोपीय साम्राज्यवाद के पुराने दिना म होता था इनके लिए शक्ति का सतुलन अब क्षेत्रीय नही है। उनके लिए वास्तविक रूप म प्रश्न विश्व शक्ति का सतुलन है और यहा यद्यपि दोनो की लडन की शक्ति बराबर दिखाई देती है रूस को कृषि और उद्योग दाना म अमरीकनो के बराबर आने मे प्रयास करना होगा और उसके लिए आवश्यक तकनीक अर्जित करनी होगी। रूस के लिए उसका अथ है, अमरीका के साथ शक्ति सतुलन का नष्ट किया जाना।

पश्चिम एशिया म साम्यवाद की स्थिति यह है कि रूसी साम्यवादियो को चीनी साम्यवादियो से मुकाबला करना होता है और यह रूसी दल्य के लिए चुनने की बात हो सकती है। चीनी दल्य जिसका विश्व मे आर्थिक और सनिक शक्ति का कोई प्रतिद्वद्वी नही है वहा युद्ध म मनुष्यो के मन और हृदय को जीतने की एक गम्भीर प्रतिद्वद्वी बन सकता है। किन्तु पश्चिम एशिया मे शक्ति सतुलन —यह उचित आम तौर पर समभी जाती है— इसको यह गम्भीरता स प्रभावित नही करेगा या मुझे ऐसा दिखाई देता है।

●●

तारकुडे ने कृपापूर्वक मुझे रजनी कोठारी और डी० एस० शेठ की चार पुस्तकें भेजी हैं। इसस पूव उन्होने मुझे भगवदगीता

उपनिषदो की दो पुस्तकें और उपनिषदो पर स्वामी रगानाथानन्द की एक अच्छी पुस्तक भेजी थी। इनमे एक रजनी द्वारा सम्पादित बहुत ही आशावादी जनल आल्टरनटिव्स' का पहला नम्बर था। इस जनल के अन्त म एक बहुत ही शानदार और सुबोध लेख—है—पहला लेख लेखक है फ्रिटज सुमचर।

ज्यो-ज्यो मैं फ्रिट्ज का लख पढ़ता हू मरे मन म बठी बहुत सी यादें ताजी हो जाती हैं। उनमे जो बहुत ही सजीव थी वह यह कि किस प्रकार दो अवसरों पर मैंन फ्रिटज को आमत्रित किया था (योजना आयोग द्वारा) कि कसे सोरवोन्वेरा गए थे और वाराणसी सस्था म भाषण दिया था और ठहर थ और इस दौरान उन्होन आम तौर पर गाधीवादियो शिक्षाशास्त्रियो वनानिको और दूसरे लोगो को प्रेरित किया था। पिछली बार जब वे आए तो प्रधानमत्री न उन्हें 45 मिनट रुकने के लिए वाध्य किया (योजना आयोग के उपाध्यक्ष डी० पी० धर न उन्हें केवल 10 मिनट दिए थ और प्रधानमत्री से चाहते थे कि उन्हें अधिक समय न दिया जाए)। साक्षात्कार के अन्त म श्रीमती गाधी न उन्हे कुछ बातें लिखने के लिए कहा, जिनके आधार पर वे अपने आर्थिक सलाहकारो को काम करने के लिए कह। फ्रिटज न यह किया किन्तु उसका कोई लाभ नही हुआ। फ्रिटज अपन इस लेख (तकनीकी म विकल्प) म लिखत हैं कि सरकार प्रचलित पद्धति को लागू करन की कायकारी सस्था स ज्यादा कभी भी अधिक नही है। आज के युग म मार्क्स की परिभाषा की तुलना म विश्व के तथ्यो के यह बहुत निकट है। *मार्क्स के तथ्य उस समय ठीक थ।* मैं यहा स्पष्ट कर दू कि मैंने फ्रिटज को कुछ वर्षों के लिए गाधी इन्स्टीट्यूट के निदेशक[1] का कायभार सभालन क लिए

1 वाराणसी म गांधी विचारा के अध्ययन की सस्था। सन 1960 क प्रारम्भिक वर्षों में इसे जयप्रकाशजी के कहन पर प्रारम्भ किया गया था और वे 1972 तक इसक अवतनिक निदेशक थे।

यूरोप की तरह इन देशों म रूस अपनी सेनाए नही फैला देता। यदि इन मामलो मे रूस निरतर अपरिपक्व रहगा ता उसे अमरीकी शक्ति का आमना सामना करना होगा। मैं नहीं समझता कि अमरीका या रूस के लिए इस माग को अपनाना सम्भव है। दुनिया इतनी सिकुड गई है और य महाशक्तिया विश्व म इस प्रकार टागें फलाए हुए हैं कि जस कि यूरोपीय साम्राज्यवाद के पुराने दिनो म होता था इनके लिए शक्ति का सतुलन अब क्षेत्रीय नही है। उनके लिए वास्तविक रूप म प्रश्न विश्व शक्ति का सतुलन है और वहा यद्यपि दाना की लडने की शक्ति बराबर दिखाई देती है, रूस को कृषि और उद्योग दाना म अमरीकनो के बराबर आने मे प्रयास करना होगा और उसके लिए आवश्यक तकनीक अर्जित करनी होगी। रूस के लिए उसका अथ है अमरीका के साथ शक्ति सतुलन का नष्ट किया जाना।

पश्चिम एशिया म साम्यवाद की स्थिति यह है कि रूसी साम्यवादियो को चीनी साम्यवादियो से मुकाबला करना होता है और यह रूसी दैत्य के लिए चुनने की बात हो सकती है। चीनी दत्य, जिसका विश्व मे आर्थिक और सनिक शक्ति का कोई प्रतिद्वद्वी नही है वहा युद्ध म मनुष्यो के मन और हृदय को जीतने की एक गम्भीर प्रतिद्वद्वी बन सकता है। किन्तु पश्चिम एशिया म शक्ति सतुलन —यह उचित आम तौर पर समझी जाती है— इसको यह गम्भीरता से प्रभावित नही करगा या मुझे ऐसा दिखाई देता है।

●●

तारकुंदे ने कृपापूवक मुझे रजनी कोठारी और डी० एस० शेठ की चार पुस्तकें भेजी हैं। इसस पूव उन्होने मुझे भगवदगीता

उपनिषदों की दो पुस्तकें और उपनिषदों पर स्वामी रंगनाथानन्द की एक अच्छी पुस्तक भेजी थी। इनमें एक रजनी द्वारा सम्पादित बहुत ही आशावादी जनल 'आल्टरनेटिव्स' का पहला नम्बर था। इस जनल के अन्त में एक बहुत ही शानदार और सुबोध लेख—है—पहला लेख लेखक हैं फ्रिट्ज शुमाचर।

ज्यों-ज्यों मैं फ्रिट्ज का लेख पढ़ता हूं, मेरे मन में बहुत सी यादें ताजी हो जाती हैं। उनमें जो बहुत ही सजीव थी वह यह कि किस प्रकार दो अवसरों पर मैंने फ्रिट्ज को आमंत्रित किया था (योजना आयोग द्वारा) कि कैसे सोरबोन्वेरा गए थे और वाराणसी संस्था में भाषण दिया था और ठहरे थे और इस दौरान उन्होंने आम तौर पर गांधीवादियों शिक्षाशास्त्रियों वैज्ञानिकों और दूसरे लोगों को प्रेरित किया था। पिछली बार जब वे आए तो प्रधानमंत्री ने उन्हें 45 मिनट रुकने के लिए बाध्य किया (योजना आयोग के उपाध्यक्ष डी० पी० धर ने उन्हें केवल 10 मिनट दिए थे और प्रधानमंत्री से चाहते थे कि उन्हें अधिक समय न दिया जाए)। साक्षात्कार के अन्त में श्रीमती गांधी ने उन्हें कुछ बातें लिखने के लिए कहा, जिनके आधार पर वे अपने आर्थिक सलाहकारों को काम करने के लिए कहें। फ्रिट्ज ने यह किया किन्तु उसका कोई लाभ नहीं हुआ। फ्रिट्ज अपने इस लेख (तकनीकी में विकल्प) में लिखते हैं कि सरकार प्रचलित पद्धति को लागू करने की कार्यकारी संस्था से ज्यादा कभी भी अधिक नहीं है। आज के युग में मार्क्स की परिभाषा की तुलना में विश्व के तथ्यों के यह बहुत निकट है। मार्क्स के तथ्य उस समय ठीक थे। मैं यहां स्पष्ट कर दूं कि मैंने फ्रिट्ज को कुछ वर्षों के लिए गांधी इन्स्टीट्यूट के निदेशक[1] का कार्यभार संभालने के लिए

1 वाराणसी में गांधी विचारों के अध्ययन की संस्था। सन 1960 के प्रारम्भिक वर्षों में इसे जयप्रकाशजी के कहने पर प्रारम्भ किया गया था और वे 1972 तक इसके अवैतनिक निदेशक थे।

कहा था। उन्होंने इस सुझाव स्वीकार किया था किन्तु दुर्भाग्यवश उनकी पहली पत्नी का असमय कैंसर से देहान्त हो गया और वे बहुत से बच्चे पीछे छोड गई। उस समय फ्रिटज नेशनल कोल बोर्ड मे थे। उस दुघटना ने उनकी सारी योजनाओ को गडबडा दिया। एक वर्ष या कुछ समय बाद उन्होंने फिर विवाह किया और नया जीवन प्रारम्भ किया। ऐसी परिस्थितियो मे वे भारत आने की सोच भी नही सकते थे और न ही मैं उनको विवश कर सकता था। पहली बार ग्रेट ब्रिटेन और यूरोप जब मैं प्रभा के साथ गया था तो मैं फ्रिटज से मिला था। यह शायद 1958 की बात है। हम सोशलिस्ट यूनियन ने आमन्त्रित किया था। रीता हिंडरन इस *यूनियन की चेतना थी। फ्रिटज भी उसी यूनियन मे* थे। अब यह यूनियन समाप्त हो चुकी है किन्तु सोशलिस्ट कमेटी अभी तक निकलती है यद्यपि रीता भी अब नही है।

अब भारत मे चालू पद्धति और उसका दर्शन क्या होगा यह बहुत ही रुचिकर प्रश्न होगा। पहली बात तो यह है कि क्या कोई पद्धति है? इस देश की 80 प्रतिशत जनता गाव मे 20 प्रतिशत शहरो मे रहती है। इस जनसख्या मे कुछ तो औद्योगिक श्रमिक है कुछ चौथे दर्जे के कर्मचारी और कुछ तीसरे दर्जे के कर्मचारी। शहरी इलाको मे यद्यपि बहुत गरीबी तथा गन्दगी और गन्दी बस्तिया हैं फिर भी गाव से लोग लगातार शहरो मे जा रहे है। उनमे से कुछ को रोजगार मिलता है किन्तु जनसख्या की आवाजाही जारी रहती है। औद्योगिक श्रमिक तथा तीसरे और चौथे दर्जे के कर्मचारियो को छोडकर कुछ ऐसे लोग हैं जो आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हैं। उनमे से एक छोटा भाग पर्याप्त सम्पन्न है और पश्चिम के रहन सहन के ढग से रहता है। इसके अलावा स्कूल और विश्वविद्यालय हैं। सरकार के अधिकारी तथा मन्त्री हैं (बडे-बडे नगरो मे)। यदि कोई पद्धति है तो वह इन तत्वो की बनी हुई है और उस पद्धति का दर्शन मिश्रित तथा आर्थिक दृष्टि

से विशेष वग का ही दशन है। ग्रामीण क्षेत्रो के श्रेष्ठजन लगातार शहरी क्षेत्रा मे आते जा रहे हैं। इस पद्धति का क्या दशन है? जितना उनके पास है उसे और बनाओ ऊची सीढियो पर चढो तथा आमूल विचारो (समाजवादी-साम्यवादी इत्यादि) मे उनके अनुसार अधिकाश लोगों के पास जो धन सम्पत्ति है वह बनी रहे अर्थात लाभ को बाटो। सभी राजनीति सभी शिक्षा तथा सभी सुविधाए समाज के इस छोटे-से ऊपरी वग तक सीमित है—जरूरी नहा कि सभी पूजीपति हो लेकिन सभी विशेष सुविधा प्राप्त कृपका को छोडकर—सावजनिक क्षेत्र मे औद्योगिक श्रम व्यवस्था शायद सर्वाधिक महत्त्वपूण है।

भारत म चन्द व्यक्तिया को छोडकर श्रेष्ठजनो की यह छोटी सी परत अधिक आधुनिक-तक्नीक, अधिक औद्योगीकरण उचित यान्त्रिकीकरण और कृषि का रासायनीकरण चाहती है। भारत म आधुनिकता का यह लोकाचार है। इस प्रकार यदि फ्रिन्ज ने अपनी साधारण धारणाओ से क्षण मात्र के लिए श्रीमती गाधी को प्रभावित कर लिया हो तो इस पद्धति का दशन बहुत गहरे दफना दिया गया है।

सितम्बर, 6

(टिप्पणी जारी)—बिहार सघष और इसी तरह के दूसरे सघर्षों मे विरोधी दला के मिल जाने से बहुत-से बुद्धिजीवी मित्रो और शुभचिन्तका को चिन्तित कर दिया है। मैं भी इससे कुछ कम चिन्तित नही रहा हू। पुरानी घटनाओ को याद करके मैं अपने आप से पूछता हू कि क्या मैंने भूल की है? और की है तो वह क्या है? सघष के दौरान भी मैंने ये प्रश्न बार बार पूछा। उत्तर क्या थे, तथा हैं? इसम सदेह नहा है कि यदि सघष म **विरोधी**

कहा था। उन्होंने इसे सहर्ष स्वीकार किया था किन्तु दुर्भाग्यवश उनकी पहली पत्नी का असमय कसर स देहान्त हो गया और वे बहुत से बच्चे पीछे छोड गई। उस समय फ्रिटज नेशनल कोल बोर्ड म थे। *उस दुर्घटना न उनकी सारी योजनाओ को गडबडा* दिया। एक वर्ष या कुछ समय बाद उन्होंने फिर विवाह किया और नया जीवन प्रारम्भ किया। ऐसी परिस्थितियो म वे भारत आने की सोच भी नहीं सकते थे और न ही मैं उनको विवश कर सकता था। पहली बार ग्रेट ब्रिटेन और यूरोप जब मैं प्रभा के *साथ गया था तो मैं फ्रिटज स मिला था। यह शायद 1958 की* बात है। हम सोशलिस्ट यूनियन ने आमंत्रित किया था। रीता हिंडरन इस यूनियन की चेतना थी। फ्रिटज भी उसी यूनियन म थे। अब यह यूनियन समाप्त हो चुकी है किन्तु सोशलिस्ट कमेटी अभी तक निकलता है यद्यपि रीता भी अब नहीं है।

अब भारत म कौन पद्धति और उसका दर्शन क्या होगा यह बहुत ही रुचिकर प्रश्न होगा। पहली बात तो यह है कि क्या कोई पद्धति है ? इस देश की 80 प्रतिशत जनता गाव म 20 प्रतिशत शहरो म रहती है। इस जनसख्या म कुछ तो औद्योगिक श्रमिक हैं कुछ चौथे दर्जे के कर्मचारी और कुछ तीसरे दर्जे के *कर्मचारी। शहरी इलाको म यद्यपि बहुत गरीबी तथा गन्दगी और* गन्दी बस्तिया हैं फिर भी गाव स लोग लगातार शहरो मे आ रहे ह। उनम स कुछ को रोजगार मिलता है किन्तु जनसख्या की आवाजाही जारी रहती है। औद्योगिक श्रमिक तथा तीसरे और चौथ दर्जे के कर्मचारियो को छोडकर कुछ ऐस लोग हैं जो आर्थिक *दृष्टि स सम्पन्न है। उनम स एक* छोटा भाग पर्याप्त सम्पन्न है और पश्चिम के रहन सहन के ढग स रहता है। इसके अलावा स्कूल और विश्वविद्यालय है। सरकार क अधिकारी तथा मत्री हैं (बडे बडे नगरो म)। यदि कोई पद्धति है तो वह इन तत्त्वो की बनी हुई है और उस पद्धति का दर्शन शिक्षित तथा आर्थिक दृष्टि

से विशेष वग का ही दशन है। ग्रामीण क्षेत्रो के श्रेष्ठजन लगातार शहरी क्षेत्रा मे आते जा रहे हैं। इस पद्धति का क्या दशन है? जितना उनके पास है, उसे और बढाओ, ऊची सीढ़ियो पर चढो तथा आमूल विचारो (समाजवादी-साम्यवादी इत्यादि) मे उनके अनुसार अधिकाश लोगो के पास जो धन सम्पत्ति है वह बनी रह अर्थात लाभ को बाटो। सभी राजनीति, सभी शिक्षा तथा सभी सुविधाए समाज के इस छोटे-से ऊपरी वग तक सीमित है—जरूरी नही कि सभी पूजीपति हो लेकिन सभी विशेष सुविधा प्राप्त कृषको को छोडकर—सावजनिक क्षेत्र मे औद्योगिक अथ-व्यवस्था शायद सर्वाधिक महत्त्वपूण है।

भारत मे चन्द व्यक्तियो को छोडकर श्रेष्ठजनो की यह छोटी सी परत अधिक आधुनिक-तकनीक अधिक औद्योगीकरण उचित यान्त्रिकीकरण और कृषि का रासायनीकरण चाहती है। भारत म आधुनिकता का यह लोकाचार है। इस प्रकार यदि फ्रिटज ने अपनी साधारण धारणाओ से क्षण मात्र के लिए श्रीमती गाधी को प्रभावित कर लिया हो तो इस पद्धति का दशन बहुत गहरे रचना दिया गया है।

सितम्बर, 6

(टिप्पणी जारी)—बिहार सघष और इसी तरह के दूसरे सघर्षो मे विरोधी दलो के मिल जाने स बहुत-से बुद्धिजीवी मित्रो और शुभचिन्तको को चिंतित कर दिया है। मैं भी इसमे कुछ कम चिन्तित नहीं रहा हू। पुरानी घटनाओ को याद करके मैं अपने आप से पूछता हू कि क्या मैंने भूल की है? और की है तो वह क्या है? सघष के दौरान भी मैंने य प्रश्न बार-बार पूछा। उत्तर क्या थ रहा है? इसम सन्देह नही है कि यदि सघष म विरोधी

दल न उलझ जाते तो इसका स्वरूप परीक्षण उपयोग शिक्षाप्रद मूल्य लोगो को अपनी समस्याओ को अपनी आखो से देखने की उपादेयता, (दलो की आखो स नही) तथा अपने सामर्थ्य के अनुसार अपनी समस्याए सुलझाने की जिम्मेदारी को सोचने अपने आपको बदलने, अपने भौतिक और सामाजिक वातावरण का बदलने और इस प्रणाली म यदि उन्हे शान्तिपूर्ण मुकाबला करना हो या अवज्ञा के लिए अपने आपको प्रस्तुत करना पडे—अकेले म या समूह म, या सावजनिक रूप म (अर्थात सामूहिक सघर्ष के माध्यम से) तो उनसे समझौता नही हो सकता था।

किंतु आदर्श की प्राप्ति बिना तकलीफ के कभी नही होती। पहली कठिनाई यह थी और फिर भी होगी जब कभी भी दोबारा कोशिश की जाएगा कि राजनतिक दलो को खुले समूह सघर्ष से दूर रखना सभव नही है। हा यदि सर्वोच्च कायकर्ताओ तक ही सघर्ष सीमित किया हाता और उनका सिद्धान्त हाता कि सभी राजनतिक दलों (शासकदल सहित) को दूर रखा जाए तो उन्हें दूर रखना सभव हो जाता, किंतु एसी स्थिति म यह सघर्ष जनता का सघर्ष न होता।

इस कठिनाई का दूसरा रूप यह है कि मैंने यह सघर्ष प्रारम्भ नही किया। सघर्ष जसे भी चल रहा था मैंने उसकी बागडोर सभाली और उसका निर्देशन किया उसे फलाया और गहरा बनाया। *अनुमानत दूसरे स्थानो पर भी और अन्य समय म भी* जब भी दूसरे लोगो ने जनता सघर्ष गठित करना चाहा होगा तो उनके सामने भी यही कठिनाइया आई होगी। इसके अतिरिक्त प्रारम्भ मे जबकि बिहार छात्र आदोलन एक निर्दलीय मामला था और इनके कायक्रमो म भाग लेनेवाले 80 स 90 प्रतिशत युवा पुरुष तथा महिलाओ का किसी राजनतिक दल स कोई वास्ता नही था। इसके नेता अवश्य ही छात्र या भूतपूर्व छात्र थे जिनका अपने दल स गहरा सम्बन्ध रहा होगा और इसम कोई सदेह नही कि

बाहर से दल के नेता उनका मार्ग-दर्शन करते थे। इनमे मुख्यत चार दल थे—जनसघ, समाजवादी दल, बी० एल० डी० तथा कांग्रेस (ओ०)। बहुत से विश्वविद्यालय केन्द्रो मे जनसघ सबमे मजबूत तत्त्व था। कुछ मे बी० एल० डी० तथा एस० पी० सचालन समितियो मे कांग्रेस (ओ०) के नेता थे, जिनकी यद्यपि सख्या कम थी किन्तु वे काफी परिपक्व तथा प्रभावशाली थे।

इन परिस्थितियो म बिहार सघर्ष के साथ मेरा सम्बन्ध स्थापित हुआ। वहा पहले से ही राजनतिक दल थे। दरअसल सभी निष्पक्ष प्रेक्षक स्वीकार करेंगे कि मेरे प्रयत्नो ने दल के प्रभाव को दबाए रखने के साथ ही मतक्य भी बनाए रखा और सघर्ष को शुरू म छात्र सघर्ष और बाद मे जनता सघर्ष का रूप दिया।

दलीय और निर्दलीय सघर्ष का एक और सैद्धान्तिक महत्त्वपूर्ण पहलू भी है। सब जानते हैं कि बिहार तथा गुजरात मे जब सघर्ष प्रारम्भ हुए, उस समय राज्य सरकारो के पास कुछ मार्गें या शिकायतें प्रस्तुत की गई थी। वे भी भ्रष्टाचार (खास तौर पर सरकार मे), बेरोजगारी शिक्षा प्रणाली म सुधार (या क्रान्ति), इसके साथ ही परीक्षाओ भर्ती, छात्रावास इत्यादि के सम्बन्ध मे छोटी छोटी शिकायतें। इन टिप्पणियो म, जसाकि मैंने पहले कहा है यह राज्य सरकार पर निभर था कि वह छात्रो स मित्रभाव से मिलती और मागो के सम्बन्ध म गम्भीरता स बातचीत करती और उनके लिए कुछ न कुछ करती, किन्तु जब दोनो राज्यो ने मुकाबला करने का मार्ग चुना तो सरकार के विरुद्ध आदोलन अपरिहार्य हो गया। जिस प्रकार शहद मक्खियो को अपनी ओर खीचता है, उसी प्रकार विरोधी दल इस ओर तुरन्त खिच आए। ऐसी स्थिति म कोई क्या कर सकता है ? उसम परिणाम यह निकलता कि जिस तरह विनोबाजी चाहते थ कि यह कोशिश की जाए कि सरकार के साथ सघर्ष न हो (विनोबाजी के कहने के अन्य कारण थे जिनकी मैंने इन पृष्ठो म पहले व्याख्या की है)। प्रश्न यह

कि आप क्या कर सकते हैं ? कोई भी कम से कम कोई भी ऐसा नहीं कर सकता जिसका सम्बन्ध किसी न किसी दल से न हो और अपने उद्देश्यों के लिए किसी स्थिति से लाभ उठाने की आकांक्षा न हो और जो फिर भी शांतिमय क्रांतिकारी संघर्ष चलाने का इच्छुक हो, अर्थात सामाजिक दृष्टिकोण में आधारभूत परिवर्तन के आगे और हमारे देश में व्याप्त परिस्थितियों के अनुसार कभी भी ऐसी सरकार से संघर्ष न करे जिस प्रकार की सरकार इस समय है। किंतु यदि कोई चमत्कार हो जाए और सरकार तथा सत्ताधारी दल शान्तिकारी संघर्ष में सहयोग देने के लिए आगे बढ़े तो वह प्रसन्नता का समय होगा दुख का नहीं। मैं नहीं समझता कि श्रीमती गांधी के अधीन कांग्रेस कभी भी इस प्रकार का व्यवहार करेगी। विरोधी दल की क्या स्थिति है ? क्या वे आगे से अच्छा व्यवहार करेंगे यह भी देखना है। मेरा व्यक्तिगत विचार है कि वे करेंगे—कम से कम बिहार में और आशापूर्ण ढंग से अन्य राज्यों में भी, बशर्ते उन राज्यों में परिवर्तन के लिए लोकप्रिय संघर्ष प्रारम्भ हो।

अब हम प्रश्न के अन्तिम भाग को लेते हैं।

क्या बिहार जैसे जनता संघर्ष में राजनैतिक दलों का मिलना कोई बुराई है ? इनकी भूलें पर्याप्त स्पष्ट थीं जिसके सम्बन्ध में संक्षिप्त रूप में पूर्ववर्ती अनुच्छेदों में कहा गया है तथा जिसके लिए प्रत्येक मनीपूर्ण तथा विवेकशील आलोचक ने स्पष्ट कहा है किंतु जैसाकि मैंने ऊपर बताया है, ऐसे खुले संघर्ष में—जहां अधिकांश संख्या में कालेज के छात्र तथा युवा लोग भाग ले रहे हों, उसमें किसीको भी संघर्ष से बाहर रखना असंभव है। आखिरकार बिहार में जिन दलों ने भाग लिया उन्होंने दलों के रूप में भाग नहीं लिया। उनके नेता, कार्यकर्ता तथा समर्थक व्यक्तिगत रूप में आए। अलबत्ता इन दलों ने संघर्ष के बाहर अपनी औपचारिक बैठकों में संघर्ष का पूरी तरह समर्थन के लिए प्रस्ताव पास किए

और बयान जारी किए, किंतु पूछे जाने का प्रश्न यह है कि विरोधी दलों का संघर्ष में भाग लेना क्या विशुद्ध बुराई है? मेरा बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर है— नहीं। स्पष्टतया जिस बात पर तर्क किया जाता है वह यह कि इसका पहला परिणाम यह है कि इससे संघर्ष को शक्ति मिलती है, किंतु इससे भी महत्त्वपूर्ण बात है कि इस विधि से दलों की कार्यप्रणाली में बहुत परिवर्तन होगा। यह सही है कि उस राज्य में, जहां संघर्ष में गैर पार्टी के नेता इतने मजबूत नहीं हैं वहां ऐसा नहीं होगा, किंतु बिहार में ऐसा हुआ। इस संघर्ष में सभी कार्यरत दलों को सम्पूर्ण क्रांति के आन्दोलन तथा परिवर्तन लाने की गतिशीलता में विश्वास था। यह कम उपलब्धि नहीं है। मैं अपने बुद्धिजीवी मित्रों को इन बड़ी सम्भावनाओं पर विचार करने के लिए आमंत्रित करता हूं। अभी तक हमने छात्रों तथा जनता के आंदोलन को सरकार से मुकाबला के रूप में देखा है। अगले सामान्य चुनावों के बाद बिहार में राज्य सरकार के सहयोग से जनता का आंदोलन देखने की पूरी सम्भावना है। मुझे विश्वास है कि अग्नि की जिस परीक्षा से बिहार में विरोधी दल गुजरा है और गुजर रहा है उससे उसके सम्पूर्ण क्रांति के इरादे पूर्ण होंगे। मैं स्वीकार करता हूं कि सम्पूर्ण क्रांति से पहले अगर ईश्वर ने मुझे दृश्य से हटा दिया तो यह केवल एक सपना रह जाएगा किंतु इसकी प्रतीति नहीं खो पाएगी और कोई इस सूत्र को आगे ले जाने के लिए बाद में जरूर आएगा यह मुझे विश्वास है।

सितम्बर 7

मैंने जो ऊपर लिखा है उसमें एक विचार और आगे बढ़ाना चाहता हूं। भारत में जिस प्रकार का लोकतंत्र आजकल है, निकट

भविष्य म भारत मे किसी अ य प्रकार के लोकतन्त्र के स्थापित होन की कोई सम्भावना नही है। यदि विरोधी दल अगला ससदीय चुनाव जीत भी जाता है तो वनमान सविधान और चुनाव के नियमा म भी सुधार हो जाएगा, किंतु लोकतन्त्र के स्वरूप म बहुत अन्तर नही होगा। अत क्राति के कायक्रम को आग बढाने सिवा दल के सम्ब ध म या सयुक्त दला के सम्ब ध म पार्टी की सरकार के लिए जनता के सघष के लिए कोई माग नही है (सघष मे छात्र और युवा दोना सम्मिलित हैं) जसाकि ऊपर भी वता चुका हू यह सघष या तो विप्लव होगा या फिर सौम्य होगा।

लोकतन्त्र के वतमान स्वरूप म सुधार लाने के सम्ब ध म मैंने विरोधी सरकार के अधीन सवैधानिक और साविधिक सशोधनो का उल्लेख किया है किंतु इस करने के लिए अतिरिक्त सवधानिक और कानूनी माग भी हा सकता है। जनता का आदोलन जारी रखने की स्थिति मे ही यह सब सम्भव है। य सघष समितिया जनता समितिया या नवनिर्माण समितिया विप्लवी समितिया, (जनता के आदोलन की सस्थाए चाहे कोई भी नाम दें) जसाकि हम सोचे हुए हैं अपना काय कर सकती हैं या फिर ऐसा करने का प्रयास करेंगी। उनका काय-व्यापार इस प्रकार होगा (क) उम्मीदवार के चुनाव के समय सवाद या परामश साधन की तरह और (ख) प्रहरी की तरह। अपने स्थानीय प्रतिनिधि तथा सरकार के कुल कामकाज पर जवाबदेही लागू करन के लिए इसम लोगो की साझेदारी के सम्ब ध म आजकल हम बहुत सुनते है। श्रीमती गाधी इस प्रपच की रचयिता है किंतु यह सब छल-कपट है। एक ओर आप लोगो के मुह बन्द कर उन्ह अपन सही अनुभव तथा शिकायतें कहने स रोकती है तथा लोगा को सहयोग देने और उनका यह काम, वह काम करने की बातें कहकर उनके जख्मा पर नमक छिडकती हैं। आज लोगा को एक ही वात की अनुमति है और वह है श्रीमती गाधी की तारीफ म गान गाना।

चीफ जस्टिस न कहा है कि ससन सर्वोच्च है और सविधान के साथ जो कुछ भा चाह कर सकती है। सविधान के किसी भाग को जसे वह चाहे, वदल सकती है। हमारे लोकतत्र का यह भयानक चित्र है। कोई आश्चय नहा कि गाधीजी, जो ससदीय प्रजातत्र का बहुमत की तानाशाही कहत थ। किसी बात की जड तक पहुचने की उनम वास्तव मे कितनी तीव्र बुद्धि थी! अगर श्री डे सही हैं तो सविधान का वडी उग्रता स वदलना होगा। उच्च यायालय को साफ-साफ और निरपक्ष रूप स यह निधारित करना चाहिए कि हमारे लोकतत्र का मूलभूत ढाचा क्या है जिसे ससद नहा बदल सकती। अन्यथा सर्वोच्च यायाल्य को अपना साफ निणय देना होगा कि आधारभूत ढाचे का ख्याल एक कल्पना है और ऐसी कोई वात वस्तुत नही है। फलत सर्वोच्च यायाल्य के सविधान यायाधीशवग को भी सदा के लिए हटा देना चाहिए।

आइए, अब राजनीति की बात कर! ससद सदस्या के लिए, चाहे व किसी भी दल के हा--'ससद सबस ऊची है' य शब्द बहुत शानदार लगत हाग। व अपने मिथ्याभिमान का रिझात हैं, वडप्पन की अनेक धारणाए देत ह और अपना मुह मोड लेत हैं, किन्तु राजनीति की दष्टि म ससद की श्रेष्ठता से क्या अथ है? इसका अथ है प्रजातत्र के विरुद्ध बगावत। ससद का वास्तविक अथ है केबिनेट (ग्रेट ब्रिटेन के लिए उतना ही सत्य है जितना कि भारत के लिए), और केबिनेट का अथ है नता—प्रधानमत्री। काग्रेस जैस हुक्मुल दल के लिए नता का अथ है यथाथ रूप मे तानाशाह। भारत म केबिनट का अथ है श्रीमती गाधी। अत जब 'ससद सर्वोच्च है' जस सुरीले शब्द कह जात हैं ता यह समझना चाहिए कि श्रीमती गाधी सर्वोच्च हैं।

एक और तरह का दल भी है—जैसे ब्रिटेन की कंजरवेटिव पार्टी या लेबर पार्टी। जबकि इसमें उद्देश्य में प्रधानमंत्री का अर्थ 'बराबर वालों में पहला' है जैसा विलसन है। इन दलों के भीतर भी अपनी शक्ति और आन्तरिक जीवन है और नेता बदल भी दिए जाते रहे हैं। पार्टी प्रबन्ध में अधिक उनके कार्यों का महत्त्व है। जनमत का बदलना तटस्थ मतदाता जो प्राय: निर्णायक भूमिका निभाते हैं अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति, रोटी रोजी की कीमतें, रोजगार की स्थिति—ये सब और अन्य कारण अपनी भूमिका निभाते हैं। इनसे भी अधिक महत्त्वपूर्ण दो दलों का होना है जो उक्त कारणों एवं अन्य कारणों से एक दूसरे को हटाने की क्षमता रखते हों। मूलतः यही यू० के० में प्रधानमंत्री की 'तानाशाही' स्थिति को रोके रखते हैं। भारत में प्रत्येक बात किस प्रकार अलग है। इस लिए किसी को संसद की श्रेष्ठता की धारणा के भुलावे में नहीं रहना चाहिए। यह धारणा इस स्थिति में ठीक नहीं बैठती। यहां पर स्पष्ट नियंत्रण और सन्तुलन बनाए रखना चाहिए। राज्य का कोई भी अंग श्रेष्ठ नहीं होना चाहिए। इन विचारों से सहमत सक्षम व्यक्तियों को इस दिशा में बहुत साफ काम करना चाहिए।

सितम्बर 9

रजनी कोठारी द्वारा सम्पादित उस बहुत ही उपयोगी जर्नल आल्टरनेटिव्स में दूसरा लेख जिसोह आमो फडका आया है जिसका शीर्षक 'विकास – तीसरा मार्ग' है। इस लेख को पढ़ते समय मुझे महसूस हुआ कि लेखक उन्हीं विचारधाराओं को प्रस्तुत कर रहा है जो मैं 1954 से करता आ रहा हूं। इससे मुझे प्रेरणा मिली है कि मैं एक छोटी सी पुस्तिका लिखूं जिसमें मैं उन विभिन्न विचारों को एकत्र करूं जिन्हें अलग अलग समयों में

प्रस्तुत करता आ रहा हू और बिखरी हुई डोरियो को एकत्र करके समूचा रूप द दू । यह समूचापन उन्मादपूर्ण बुनाई की तरह नही बल्कि प्राकृतिक सुव्यवस्थित सम्पूर्णता होगी जिसके हिस्से स्वाभाविक है कि अन्य हिस्सो म मेल खाएगे और सब सुव्यवस्थित रूप म एक-दूसरे मे मिल जाएगे ।

मैं अब उन हिस्सो की बात करता हू जिनके सम्बन्ध म मैंने एक या अन्य समय चर्चा की है

1 नतिक आध्यात्मिक ढाचा (क) मनुष्य शरीर और आत्मा दोनो है। उसके शरीर को भौतिक तथा आध्यात्मिक आवश्यकताओ की जरूरत है। (ख) भौतिक आवश्यकताओ की अवश्य पूर्ति होनी चाहिए—खुराक कपडा और रहन का स्थान इत्यादि ।

खुराक पर्याप्त सादा, पौष्टिक तथा स्वादिष्ट होनी चाहिए, किन्तु यह अत्यधिक नही होनी चाहिए । कपडा न केवल उपयोगी ही बल्कि आखो को तथा स्पश करन म भी अच्छा लग । हर प्रकार क मौसम के लिए यह सब पर्याप्त होना चाहिए। यह अधिक नही होना चाहिए, फशन की धुन नही होनी चाहिए और न ही खर्चीला होना चाहिए । कपडो म उपयोग म लाया जाने वाला सामान (यथासम्भव) सहज होना चाहिए और असहज तथा कृत्रिम नही होना चाहिए । रहन का स्थान साधारण किन्तु मनुष्यो के रहने के काबिल होना चाहिए (स्वस्थ वायु रोशनी आदि) । रहन के लिए बडे तथा तडक भडक वाले स्थानो से बचना चाहिए । जीवन म विलासिता को निरुत्साहित किया जाना चाहिए । सुख-साधन एक सापेक्ष उक्ति है, यह सामाजिक आवश्यकताओ तथा सामान्य स्तर के अनुरूप होनी चाहिए ।

इसी तरह भौतिक आवश्यकताओ के सम्बन्ध म भी व्यक्ति को स्वय स्वयं सीमित करना है । यह नतिक धारणा है । मरे मन मे कोई सन्यास की बात नही है । यह आध्यात्मिक अभिलाषाओं के लिए है । सिवा आध्यात्मिक मूल्य या आत्म की प्राप्ति के लिए

जो सन्यास होना आवश्यक समझते हैं, औसत प्रकार के मनुष्य और हम सबके लिए पूरे भौतिक सतोष मे ही आध्यात्मिक जीवन है। याचना करना अधिक मागना दौलत इकटठा करने के लिए बुरे साधनो का इस्तेमाल करना आध्यात्मिक के विरुद्ध है।

किसका विकास और किसके लिए का प्रश्न, युद्ध तथा शान्ति आध्यात्मिकता सौदय और सजनात्मकता का प्रश्न।

भौतिक विकास पर नतिक आध्यात्मिक प्रतिबध।

2 प्राकृतिक वातावरण सम्बन्धी रूपरेखा ग्राम, छोटे नगर तथा बडे नगर का प्रश्न और विशाल तथा ग्रामीण प्रदेश—ग्रामो का पुन समूहीकरण—छोटे ग्रामो को मिला देना बडे ग्रामो को फिर स सुनियोजित करना। आदिवासी क्षत्र पहाडिया और वन तथा मदान। मदानो मे गावो का अनुकूल क्षत्र नगरो का अनुकूल क्षेत्र अर्थात छोटे गाव जहा स गाव के लिए सडकें, बिजलीघर इत्यादि फलत है। इस प्रकार के नगरो के लिए सामुदायिक विकास योजना का प्रधान कार्यालय का गठन एक आदश होगा बक, भण्डारघर, अस्पताल इत्यादि।

गाव छोटे नगरो नगरो की जनसख्या के भौगोलिक वितरण की यह तस्वीर बलपूवक नही लाई जा सकती। इसक लिए आव श्यक है कि सामाजिक आर्थिक तथा राजनतिक विकास के यह अनुरूप हो और जनता इसे लोकतान्त्रिक ढग स स्वीकार कर और राज्य की इकाइयो तथा स्वावलम्बी सस्थाओ द्वारा इसे लोकतान्त्रिक ढग से लागू किया जाए।

3 आर्थिक रूपरेखा आर्थिक विकास का लक्ष्य मानव की खुशहाली है। परिवार मे प्रत्येक वयस्क या परिवार के मुखिया (पति) नाबालिग तथा अविवाहित बच्चे तथा वद्ध माता पिता, बेरोजगार भाई या भतीजे ये कठिन प्रश्न हैं—जीवन स्तर—न्यूनतम।

भारत म शायद हमारे पास बहुत उच्च स्तर की आधुनिक

तक्नीक पूजीप्रधान उद्योग हैं। सिवा रक्षा की आवश्यक्ताओ के मैं समझता हू कि हमे जानबूझकर इस कुछ दर के लिए रोक देना चाहिए। बहुत ही मूल्यवान, भडकीले, अनुपयागी तथाकथित प्रतिष्ठा दनवाला कृत्रिम उपक्रम, जसे उपग्रहा के विकास का काय क्रम बन्द कर दना चाहिए। वैज्ञानिक अनुसधान तथा विकास और तकनीक के लिए विज्ञान के उपयोग (जैसे चन्द्रमा पर जाना और इसी प्रकार के) के बीच यहा कृत्रिम भिन्नता दिखाई है उसे स्वीकार किया है और बल दिया है। मैं विज्ञान के क्षेत्र मे हीनता की माग नहा कर रहा हू किन्तु विज्ञान को लागू करने की बात कर रहा हू जिनका सम्बन्ध भारत मे अपनी परिस्थितिया तथा जनता की आवश्यक्ताओ स अनुसार सोचना हमारे हित म है।

औद्योगिक विकास के लिए मध्यवर्ती उद्योग लघु उद्योग, ग्रामीण उद्योग विकास का तरीका ही अपनाना चाहिए। इसके लिए ग्राम तथा लघु उद्योग की तकनीक को प्रोत्साहित करना होगा। न्यायसगत तकनीक के विकास के लिए समयानुकूल अनुसधान किए जान चाहिए और उन्हे विकसित किया जाना चाहिए। ग्रामीण स्कूलो म ग्रामीण तक्नीकी सेक्शन होन चाहिए। स्थानीय आवश्यक्ताओ के अनुसार सद्धान्तिक तथा व्यावहारिक पहलू होने चाहिए।

मिल्कियत का स्वरूप व्यक्ति (परिवार) स्वयसेवी उत्पादक सामूहिक पूजी (ग्राम) सहकारिता, निजी लाभ पर आधारित लघु उद्योग की मिल्कियत जो कुछ श्रमिक नौकर रखता है और न्यूनतम मजदूरी देता है। बडे उद्योग कुछ प्रतिबन्धो के बावजूद पूजीपति प्रणाली के हैं इसलिए सावजनिक निगम प्रणाली ज्यादा अपनाइ जानी चाहिए। सावजनिक निगम के सचालको तथा प्रबन्धको को प्रोत्साहन लाभ दना, लोकतान्त्रिक विनियम काय कुशलता तथा फिजूलखर्ची आदि के सम्बन्ध मे गहराई से अध्ययन किया जाना चाहिए और मागदशन होना चाहिए। वतमान परि-

स्थितियों में क्या श्रमिक और प्रबंधक सफल हो सकते हैं ? बड़े-बड़े उद्योगों में श्रमिक मिल्कियत लागू नहीं की जा सकती वहां पर सामाजिक मिल्कियत का विकल्प लागू करना होगा। किन्तु यदि उद्योगों में लाए गए कर्मचारी ट्रस्टी के रूप में—अपने हितों के ट्रस्टी नहीं, बल्कि उपभोक्ताओं समुदायों, समाज और राष्ट्र के हितों में ट्रस्टी रूप में प्रबंध कर सकते हैं तो यह हर हालत में अच्छा होगा। इस दृष्टि से युगोस्लाविया का स्वरूप (तानाशाही को इसमें से निकालकर) बड़ा स्वीकार्य चित्र होगा।

बड़े-बड़े उद्योगों—सार्वजनिक और निजी या सार्वजनिक लिमिटेड कम्पनी मिल्कियत को जारी रखा जाना चाहिए। निजी क्षेत्र में अधिक प्रोत्साहन होना चाहिए, ताकि वे उत्पादन बढ़ाएं विकसित करें तथा विस्तार करें। अनावश्यक प्रतिबंध (नियंत्रण लाइसेंस इत्यादि) हटा दिए जाने चाहिए बशर्ते कानून द्वारा निर्धारित वे कुछ मानकों के अनुकूल हों।

प्रबंधों में श्रमिकों की साझेदारी का भी प्रयास किया जाना चाहिए, किन्तु जब तक ट्रेड यूनियन अपने प्रतिनिधियों को उचित ढंग से प्रशिक्षित नहीं कर लेती तो श्रमिक अच्छी प्रकार से प्रबंधक के क्षेत्र में प्रभावकारी नहीं होंगे। उनका प्रभाव श्रमिकों के हित—कारखाना की शर्तें मकान स्कूल इत्यादि तक ही सीमित रहना चाहिए।

बड़े बड़े उद्योग विशेष रूप से कृषि सम्बन्धित सभी उत्पादन यूनिट परिस्थिति अनुसार सौंदर्य एवं स्वच्छता के सम्बन्ध में बहुत ही संवेदनशील हैं।

आमा पडको ने जिस नव उपनिवेशवाद के बारे में लिखा है, उसका भारत के सम्बन्ध में गहराई से अध्ययन किया जाना चाहिए। यह कहने में मैं सक्षम न था हूं यद्यपि इसके सम्बन्ध में मेरा भय निराधार था और जिसका मैंने इज़हार किया है।

4 राजनैतिक रूपरेखा मूलभूत स्वतन्त्रता विकेन्द्रीकरण

साम्यवादी ।

5 सांस्कृतिक रूपरेखा

6 शैक्षिक रूपरेखा ग्रामीण स्कूल कृषि ग्रामीण उद्योग, अर्थशास्त्र समाजशास्त्र (क्षेत्र में छात्रों के लिए अर्थपूर्ण), विज्ञान, भाषा और साहित्य आर्थिक सहयोग और सहकारिता (कानून, नियम, संविधान), ग्राम सभा (निर्णय लेनेवाली तथा लागू करने वाला) ग्राम अदालत लेख तथा बहीखाता (कृषि व्यापार तथा ग्रामीण उद्योग) स्वच्छता (शौचालय जलसम्भरण) जीवाणु जीवविज्ञान स्वास्थ्य (ग्रामीण रूपरेखा के सम्बन्ध में) बागवानी, प्राणिविज्ञान खुराक तथा पोषाहार (साधन उपलब्ध) गैस संयंत्र खाद तैयार करना आदि।

7 सामाजिक रूपरेखा

8 परिवर्तन तथा पुनर्निर्माण की शक्तियां।

सितम्बर 11

आज विनोबाजी का जन्म दिवस है। आज उन्होंने अपने जीवन के 80 वर्ष पूरे किए हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि वे सौ वर्ष जीएं। कल और आज के समाचारपत्रों से पता चलता है कि उनका स्वास्थ्य काफी सुधर गया है। उन्हें खांसी तथा बुखार से आराम है।

मृत्युंजय बाबू का पत्र प्राप्त हुआ। एक अन्य मित्र से भी चार पृष्ठों का पत्र मिला था उसकी तुलना में इनके पोस्टकार्ड में बिहार में बाढ़ के कारण हुई तबाही से सम्बन्धित अधिक सूचना है। वह केवल बिहार सहायता समिति के सम्बन्ध में किसी सूचना को देना भूल गए हैं। उनका उस संस्था से बहुत दूर का सम्बन्ध है। उन्होंने गंगा बाबू तथा गांधी मेमोरियल संग्रहालय के सम्बन्ध

म तथा डा० रजी अहमद के सम्बन्ध म भी कुछ लिखा है। शायद उनके पास महिला चर्खा समिति के सम्बन्ध म कोई सूचना नही है।

●●

एक चिडा और एक चिडी की कहानी

एक था चिडा और एक थी चिडी—
एक नीम के दरख्त पर उनका था घोसला
बडा गहरा प्रेम था दोना म
दोना साथ घासले से निकलते
साथ चारा चुगते
या कभी-कभी चारे की कमी होने पर
अलग अलग भी उड जाते।
और शाम को जब घासले म लौटत
तो तरह तरह से एक दूसरे को खूब प्यार करत
फिर घासले म साथ सो जाते।
एक दिन आया—
शाम को चिडी लौटकर नही आयी
चिडा बहुत व्याकुल हुआ।
कभी अदर जाकर खोज
कभी बठकर चारो ओर देखे।
कभी उड के एक तरफ कभी दूसरी तरफ
चक्कर काट के लौट आवे
अधेरा बढता जा रहा था
निराश होकर घासले म बठ गया
शरीर और मन दोनो से थक गया था

उस रात चिडे को नीद नही आयी
उस दिन तो उसने चारा भी न चुगा
और बराबर कुछ बोलता रहा
जस चिडी को पुकार रहा हो।

दिन भर ऐसा ही बीता
घोसला उसको सूना लग
इसलिए वहा ज्यादा देर रुक न सके
फिर अधेरे न उसे अन्दर रहने को मजबूर किया
दूसरी भोर हुई
फिर चिडी की वसी ही तलाश
वसे ही बार-बार पुकारना
एक बार जब घोसले के द्वार पर जा बठा था
तो एक नई चिडी उसके पास आकर बठ गई
और फुदकने लगी
चिडे ने उसे मार कर भगा दिया
फिर कुछ देर बाद चिडा उड गया
और उडता ही चला गया

सितम्बर 12

एसा दिखाई देता है कि काग्रेसजनो ने विनोबाजी के गौरव बढाने की पूरी कोशिश की है। उनमे से एक श्री खाडिल्कर अपने-आपको नही रोक सके जब उन्होने बडे गव से कहा कि—विनोबाजी म एक गुण था कि सर्वोदय सघष के सकट के समय म भी वे चट्टान की तरह डट रहे। यह सब अद्भुत धूतता की बात

है। श्रीमती गाधी का हवाई जहाज म विनोबाजी के पास पहुचना आश्रम मे रहना अब दिल्ली मे जन्म दिवस समारोह मे इन घिनौने शब्दो का कहा जाना। प्रधानमन्त्री केवल लिख सकती है परामर्श *और कष्ट दे सकती है। बचारा गोकुल भाई!* म पूरी पूरी आशा करता हू कि निषेध के मामले म जो यह परिवतन की लहर चली है, उसका वे पूरा लाभ उठाएग।

हालाकि बहुत दिनो पहले मैंने श्रीमती गाधी की बाता पर किसी तरह की आलोचना न करने का निणय लिया था अपवाद स्वरूप एक छूट लकर मैं उनकी छात्रो म सम्बधित एक टिप्पणी (जिस उन्होंने कई तरीको स दोहराई है) पर कुछ कहना चाहूगा।

छात्रा के लिए हमारा दृष्टिकोण क्या है इसपर बोलते हुए और बाद म मेरे या मरे साथिया का नाम लिए बिना उन्होने कहा— इन लोगो के लिए छात्र कोई अहित नही कर सकते। वे बसें जला सकते थे लट सकते थे और किसी प्रकार की शरारत कर सकते थे किन्तु उनके लिए (अथ हमार लिए) वे अति *पावन और पवित्र थे।*

गुजरात और बिहार सघर्षो मे छात्रो ने जितनी महत्त्वपूण भूमिका निभाई है उतना ही वे भविष्य म भी निभाएग। मैं समझता हू कि छात्रा क प्रति न्याय के लिए जो उनपर तथा मुझपर अपमानजनक शब्द कह गए है उनका उत्तर दू। यह सत्य है कि कई मौका पर छात्रा न बसो रेलवे स्टेशन को जलाया है रेल पटरिया उखाड़ी है अपन अध्यापको को पीटा है और इसी तरह की अय बातें की है। कोई भी व्यक्ति जिस छात्रों और इस देश क युवावग के प्रति जरा भी जिम्मेदारी का एहसास है इन कायवाइया के लिए क्षमा नहीं करेगा। गरजिम्मेदार राजनतिक कायकर्ताओ ने कुछ मौका पर अति उत्साह तथा गलत उम्मीद स प्रोत्साहन दिया होगा कि यह सब कुछ क्रान्ति का—

हिंसात्मक क्रांति के लिए मंगलाचरण है, किन्तु इन तत्त्वों के अलावा कोई भी छात्र हिंसा को क्षमा नहीं करेगा। तब आपको इस सम्बन्ध में क्या करना है? स्पष्ट है कि सबसे महत्त्वपूर्ण बात है कि छात्रों को समझाने की कोशिश करें। इस तरह का व्यवहार व क्या करते हैं? छात्रों के नेताओं में कुछ अपराधी आन्त के हो सकते हैं और शायद उनके गिरोह में कुछ हुल्लड़-बाज होंगे, पर वे छात्र होंगे—यह भी जरूरी नहीं है। किन्तु छात्र अशान्ति का वातावरण अपराध से पैदा नहीं किया जा सकता। इसके कारण कुछ अनुपयुक्त शैक्षिक पद्धति में हैं, बेरोजगारी के कारण नैराश्य में हैं तथा सामाजिक आर्थिक विकास की गलत व्यक्तियों की नीतियों में है। जड़ में दरअसल ये समस्याएं हैं जिन्हें श्रीमती गांधी को पकड़ना चाहिए क्योंकि वे प्रधानमंत्री हैं और आज व्यावहारिक ढंग से तानाशाह हैं। उनके 20 सूत्री कार्यक्रम को यदि लागू भी किया जाए तो वह केवल सतही होगा। और इन्हीं दिनों कोई छात्र अशान्ति बड़ी शक्ति से फूट पड़ेगी।

किन्तु आप मेरे तथा जिन्होंने मेरे साथ काम किया, उनसे क्या अपेक्षा करते हैं? यह सही है कि हमने छात्र हिंसा को समझने की कोशिश की है। मैंने कम से कम कभी क्षमा नहीं किया था और इसका प्रभाव कम नहीं समझा किन्तु निश्चयात्मक रूप से जो किया है वह यह है कि मैंने लोगों की अंधी नाराजगी और युवा वर्ग के आवेश को शान्तिपूर्ण क्रान्ति की ओर मोड़ा है। गुजरात के छात्र संघर्ष पर मेरा कम प्रभाव था किन्तु इस अग्रगामी संघर्ष के प्रति ईमानदारी बरतते हुए यह कहना होगा कि अधिकांश छात्र नेता हिंसा के विरुद्ध थे। यह दिलचस्प बात है कि सबसे ज्यादा विषाक्त तथा आग से खेलने वाले छात्र नेता जो खुले आम हिंसा की बात कहते थे अब श्रीमती गांधी के बाड़े में आ गए हैं।

बिहार के सम्बन्ध में स्थिति यह है कि जो भी हिंसा हुई,

यह सघष के साथ मेरे प्रसग से परे हुई। उसके उपरान्त छात्रो न अनुशासित सिपाहियो की तरह व्यवहार किया यद्यपि उनम अधिकाश सभी परिस्थितियो म शान्तिपूण ढग अपनाने के अनुयायी नही थे किन्तु सिवा उन सद्धान्तिक आरक्षणो के उन्होने शान्तिपूण ढग से व्यवहार किया कुछ मौको पर अत्यधिक उत्तेजना के बावजूद जसाकि 4 नवम्बर को हुआ जब हमपर अश्रुगम छोडी गई तथा लाठिया बरसाई गइ। मैं यह नही कह रहा हू कि सघष के दौरान कोई हिंसात्मक घटना नही हुई किन्तु जो थोडी सी घटनाए हुइ भी वे भडकाने वाले एजेंटो (अधिकाश सी० पी० आई० के लोग) द्वारा अत्यधिक उत्तेजना के फलस्वरूप था या नेता की कमी के कारण।

अत श्रीमती गाधी के लिए यह कहना गलत है कि हमारे लिए छात्र कोई नुकसान नही कर सकत। जब भी मौका प्राप्त हुआ हमन उनकी भूलें बताइ और वकल्पित कारवाई के सुझाव दिए।

किन्तु बिहार सघष चल रहा था और मैं कितना चाहता था कि शिक्षा तथा समाज के सामाजिक आर्थिक ढाचे म क्रान्ति लाई जाए क्योकि केवल इससे ही छात्रों की आकाक्षाए पूरी हो सकती थी। उत्तर निरन्तर मिल रहा था किन्तु क्रान्तिकारी आसारों से डरकर श्रीमती गाधी ने इस माग को रोकने का प्रयास किया है। लेकिन यह माग स्थायी तौर पर नही रोका जा सकता। मैं नही समझता कि सघष के दबाव और दखल के बिना राष्ट्रीय जीवन के किसी पहलू म किसी प्रकार का क्रान्तिकारी परिवतन लाया जा सकता है। वस्तुत बहुत से परिवतन तो सघष के दौरान ही कर लिए जाएगे और शष सघष के परिणामस्वरूप लोकतान्त्रिक ढग से कानून बनाकर कर लिए जाएगे। जनता की सीधी कारवाई के परिणामस्वरूप जो परिवतन आएग उन्ह बाद म कानून द्वारा नियमित किया जाएगा। सघष के दबाव या दखल के फलस्वरूप

जो सीधे परिवर्तन किए जाएगे या कामचलाऊ रूप म (कानून द्वारा) किए जाएग, वे कइ प्रकार के होंगे। असहयोग नागरिक प्रतिरोध नागरिक अवना, औद्योगिक क्षेत्र म यह हड्ताल से सीधे प्रबन्ध हाथ म लेने की व्यवस्था तथा उद्योगा का सचालन—इसके लिए वहुत ही अनुभवी सचालनवग तथा टेड यूनियन एकता की आवश्यकता हागी।

पिछले 10 सप्ताहा मे जिन लोगो को मैंने पत्र लिखे हैं, उनके नाम ये हैं

1	शिवनाथ प्रसाद (बहनोई)	1 पत्र	पटना
2	टी० अब्राहम (मेरा सचिव)	2 पत्र	पटना
3	गुलाब यादव (मेरा सवक)	2 पत्र	पटना
4	जयनारायण (सहायक मित्र)	2 पत्र	पटना
5	जीवेश (वहन का पाता)	1 पत्र	पटना
6	गगाशरण सिन्हा (मित्र)	1 पत्र	पटना
7	अनिल प्रसाद (भतीजा)	1 पत्र	पटना
8	श्रीमती मालती सिन्हा (मित्र)	1 पत्र	बम्बई
9	रफीक खा (मित्र)	1 पत्र	नई दिल्ली
10	सुगाना दास गुप्ता (मित्र)	1 पत्र	वाराणसी
11	डी० बनसी (भतीजा)	1 पत्र	पटना
12	सुशीला सिन्हा (मित्र)	1 पत्र	पटना
13	प्रभा चौधरी (मित्र)	1 पत्र	बलिया
14	जगदीशसिंह (मित्र)	1 पत्र	बलिया
15	स्नेहमयी प्रसाद (मौसी)	1 पत्र	पटना
16	विभासिंह (मेरी पुत्री की तरह)	1 पत्र	पटना
17	कुसुम देशपाडे (मेरी पुत्री की तरह)	1 पत्र	पौनार
		जोड 20 पत्र	

सितम्बर 14

आज के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' म यू० एन० आई० की रिपोट है जिसम श्री ब्रह्मानन्द रेडडी के मद्रास का भाषण है और जिसकी अन्तिम पक्तिया इस प्रकार हैं। एक प्रश्न का उत्तर देत हुए उन्होने कहा कि 'गिरफ्तार किए गए व्यक्तियो म म तीस प्रतिशत सरकार द्वारा रिहा कर दिए गए हैं।' काश कि यह पूछा गया होता कि कुछ पकडे गए लोगो का ब्योरा दें और जो रिहा किए गए उनकी कुल कितनी सख्या है और पकडे गए अथवा रिहा किए गए व्यक्तियो म कितने राजनतिक थ और कितने तस्कर थ।

आज के 'ट्रिब्यून' म उसी भाषण की तीन कालम शीष मे यह रिपोट छपी है कि 'मीसा के अधीन पकड गए कैदी पहले ही रिहा कर दिए गए—रेडडी।' दोनो रिपोट इस सम्बन्ध म सहमत हैं यद्यपि ट्रिब्यून न उस अधिक स्थान दिया है और हिन्दुस्तान टाइम्स म एक कालम शीष म कहा गया है—'विद्रोह शीघ्र ही समाप्त होगा—रडडी' (विद्रोह से आशय नागा मिजो क्षेत्र स है)।

ट्रिब्यून की पी० टी० आई० रिपोट मे रेडडी न इस तरह कहा, बनात हैं (बडे-बड अक्षरो मे मुख्य शीष समाचार)—'पूरे देश म सामान्य स्थिति होने के कारण आपातस्थिति लागू करन स अब तक जितन लोग मीसा के अधीन गिरफ्तार किए गए थ उनम स तीस प्रतिशत रिहा कर दिए हैं—गहमत्री द्वारा यह स्वीकार किया जाना बहुत महत्त्वपूण है कि सारे देश म सामान्य स्थिति हो गई है।

सेवा में,   चंडीगढ़
सचिव गृह विभाग,   15 9 1975
भारत सरकार
नई दिल्ली ।

महोदय

आज की तारीख तक मेरे 7 7 75 के पत्र का कोई उत्तर प्राप्त नही हुआ है । इस पत्र म मैंने बिहार या राज्य म किसी समीपवर्ती स्थान म स्थानान्तरण के लिए प्रार्थना की थी । मैं अब उस प्रार्थना को दोहरा रहा हू और आशा करता हू कि इसका अनुकूल उत्तर प्राप्त होगा ।

इसके अतिरिक्त एक और भी मामला है, जिसकी ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हू । इस सप्ताह को छोडकर, जो इस महीने की 10 तारीख स प्रारभ हुआ है अब तक मैं 10 से अधिक सप्ताह से नजरबन्द हू । वर्तमान नियमो के अनुसार प्रति सप्ताह दो पत्र की दर म मैंने अभी तक 20 पत्र लिखे हैं । इनम स केवल एक पत्र कुसुम देशपाडे[1] को मिला दिखाई देता है जैसाकि उसके पत्र स पता चलता है । और दूसरो म स किसीका भी उत्तर प्राप्त नही हुआ और मेरे पास पक्की सूचना है कि अधिकाश पत्र सम्बधित प्रेषितियो के पास नही पहुचे ।

जो पत्र मैंने लिखे थे उनम से कुछ मित्रो और कुछ रिश्तेदारो को थे । एक नजरबन्द रिश्तेदार और मित्र दोनो को पत्र लिख सकता है । ब्रिटिश शासन के दिनो म भी यह व्यवस्था थी । कुसुम देशपाडे दूर स भी मेरी रिश्तेदार नही है यद्यपि वह मुझे इतनी ही प्रिय है जितनी की पुत्री (वस्तुत यह स्पष्ट है कि इसके मामले म अपवाद किया गया है) ।

अत महोदय, यह तथ्य कि मेरे 20 पत्रो म स 19 पत्र रोक लिए गए है यह केवल सेंसरशिप का मामला नही है । मैं समझता

1 कुसुम देशपाडे पौनार मे आचार्य विनोबा भावे के आश्रम में रहती हैं ।

हू कि नजरबद के रूप म मर जो अधिकार हैं उनस मुझे गभीरता पूवक वचित किया गया है। मुझे विश्वास है कि इस मामले पर गभीरतापूवक विचार किया जाएगा और भूल सुधार किया जाएगा।

भवदीय
—जयप्रकाश नारायण

सितम्बर, 18

आज रात श्री बी० सा० शुक्ला न समाचारपत्रो को एक प्रमाणपत्र दिया है—'अधिकाश समाचारपत्र अब अच्छा व्यवहार कर रह हैं। क्या अदभुत बात है! एसा दिखाई दता है कि इन लोगो न अपना पूरा मानसिक सतुलन और विवक खो दिया है। वे अनुभव नहीं कर रह हैं कि वे कितने हास्यास्पद लगते हैं जसाकि श्रीमती गाधा का लोकतत्र।

आज रात (8 30 बजे) मुझे पी० जी० आई०[1] की अतिथिशाला म भेज दिया गया। घूमन के लिए यहा सुदर लान है। नर्सें मेरी देखभाल नही करेंगी। डा० कालरा प्रात और सायकाल आएग। कभी-कभी डा० खत्री भी शायद आ जाए। डा० चुटटानी तथा डा० मेहरा भी कभी कभी आएगे।

सामान्य स्वास्थ्य के लिए कदम आग बढे हैं। डा० कालरा ने मेरी 9 30 बजे रात परीक्षा की—नब्ज 80 नेप कुशल।

1 चडीगढ में पोस्ट ग्रेजुएट इस्टीटयट आफ मेडिकल एजुकेशन तथा अन सधान, जहा जयप्रकाशजी बन्दी किए गए।

2 पी० एन० चटटानी निदेशक पी० जी आई ।

सितम्बर, 19

नई जगह के कारण ठीक प्रकार से नींद नहीं आई। डॉक्टर वालरा प्रात 7 45 बजे आए। नाड़ी गति 80, ताप कुशल। धूप के कारण प्रात की सैर बन्द करनी पड़ी। कल से प्रात की सैर सात बजे से होगी।

सितम्बर, 20

आज सुबह समाचारपत्रों में 'धर्मनिरपेक्षता समाजवाद तथा लोकतन्त्र के शिक्षकों के पहले अखिल भारतीय सम्मेलन की काम वाही की रिपोर्ट देखी। श्रीमती गांधी शिक्षकों की इस संस्था की कुलपति हैं। इस संस्था में विख्यात उपकुलपति तथा विद्वान प्रोफेसर हैं जैसे श्रीमती सुभद्रा जोशी (शिक्षकों की कोषाध्यक्ष), डॉ० के० एल० श्रीमाली (शिक्षकों के अध्यक्ष) प्रो० रशीदुद्दीन खाँ और शेष।

अब अब भारत को और भारतीयों को धर्मनिरपेक्षता समाजवाद और लोकतन्त्र के विषय में फिर से शिक्षित करना पड़ेगा। पुराने शिक्षक—गांधी, नेहरू पटेल, प्रसाद, आजाद, सी० आर० और शेष पितामह अब पुराने पड़ गए हैं। अब श्रीमती गांधी और अन्य दूसरे शिक्षकों द्वारा रेडियो जी हुजूरी इत्यादि द्वारा, इन महान् सिद्धान्तों के सम्बन्ध में पढ़ाया जाएगा। पहला पाठ है—विरोधी दल को मजबूत न होने दिया जाए (नहीं तो श्रीमती गांधी जैसी साहसी औरत का नाश हो जाएगा), दूसरा पाठ है—विरोधी नेताओं को जेल में (या नजरबंद) कर दें, नागरिक स्वतन्त्रता नष्ट कर दें तथा समाचारपत्रों की स्वतन्त्रता को भी दबा दें, तीसरा पाठ है—मतभेद आलोचना, फूट विरोध पैदा करके लोगों का

पेट झूठ से भरें और तब तक झूठ बोलते जाए जब तक कि उनका मस्तिष्क नही धुल जाता ।

(आज मैं थकान महसूस कर रहा हू । य टिप्पणिया कल जारी रहेंगी ।)

तारकुडे आज आए थे । उनकी बाता को नोट किया है और कल उनपर टिप्पणी की जाएगी ।

सितम्बर, 21

तो इसलिए नई दिल्ली की घबराई हुई इस महिला के अनुसार हम सब—श्री मोरारजी देसाई, श्री अशोक मेहता श्री अटल बिहारी वाजपेयी श्री चन्द्रशेखर श्री रामधन और बहुत-से अन्य व्यक्ति श्रीमती गाधी उनके परिवार मुख्यमत्रियो और इनका समथन करनवाले अन्य लोगो का विनाश करने की योजना बना रहे हैं। वह यह स्पष्ट नही कर रही हैं कि यह कसे किया जाना था और विनाश का सही अथ क्या है ? मैंन श्रीमती गाधी को नई दिल्ली की घबराई हुई महिला कहा है—अवश्य वह घबराई हुई थी—लगभग अपना विवक खो चुकी हैं क्योकि जनमत उनके विरुद्ध हो गया है। उन्ह भय है कि आगामी चुनाव म वे हार जाएगी अत उनके लिए एक कूट योजना तैयार की गई। किसने तैयार की यह अभी रहस्य है , किन्तु इस सम्बन्ध म यहा जो बात देखने की है, वह यह है कि घबराहट के कारण श्रीमती गाधी ने धमनिरपेक्षता, समाजवाद और लोकतत्र के शिक्षका को विरोधी दल के लोगो के उनके तथा परिवार को नष्ट करने की अधर्मी योजना के बारे म कुछ नही कहा बल्कि भारत के और विश्व के कम जानकारी रखनवाले लोगो को गुमराह करने की योजना के अधीन ऐसा किया गया । लोकतत्र को दबाने को न्यायसगत सिद्ध

करने के उद्देश्य स यह झूठ जानबूझकर बोला गया। जसे जसे समय बीतता जाएगा मेरा अनुमान है कि वह इससे और बड साहसी झूठ बोलेंगी। आखिरकार उस गलत कहनेवाला भी तो कोई नही है और यदि कोई है ता प्रत्युत्तर देकर उसे प्रकाशित करने का कोई साधन नही है, सिवा भूमिगत ढग से छपवाकर इश्तहार बाटने के, जो बहुत कारगर नही है।

तारकुन्दे न मुझे कल बताया कि श्रीमती गाधी का एक तरफा प्रचार का पहले जसा ही असर हो रहा है। बम्बई म उन्होंने बुद्धिजीविया का अपना सिर हिलाते और कहत सुना कि देखा आखिरकार अब अधिक अनुशासन है और अवश्य ही विरोधी लोग बहुत दूर हट गए है। इस प्रकार बुद्धिजीविया का विश्वासघात प्रारम्भ हो गया है। अब डूबते नाव को चूहा ने छोडना शुरू कर दिया है।

शिक्षको के सम्मलन मे श्रीमती गाधी के काय की चचा करत हुए मैं उनके हिन्दुस्तान टाइम्स (सितम्बर 20) मे छप भाषण के कुछ उद्धरण नीचे दूगा।

जिस विचार को मैंने प्रारम्भ स ही जाहिर किया कि (श्रीमती गाधी की कारवाई 25 जून क मेरे इस निणय के फलस्वरूप) जब तक उच्च यायालय उनकी अपील पर निणय न दे दे, वे प्रधान मत्री का पद छोड दें और उसके लिए सत्याग्रही भर्ती किए जाए जो उनके निवासस्थान या उतन समीप (जितना अनुमत्य हो) जाए और इस प्रकार नागरिक अवज्ञा करें। जसी मुझे आशका थी इस योजना पर बहुत विस्तत रूप म और बहुत समय पहले मैंने सोचा था और योजना बनाई थी। 25 जून के मेरे उस प्रस्ताव का भारतीय लाकतत्र के सिर पर एकसाथ चोट से इसका कोई सम्बन्ध हो सकता है या नही किन्तु इसम कोई सदेह नही है कि यह योजना बनाइ गई थी कि श्रीमती गाधी और जिन्होंने काग्रेस और सी० पी० आई० का समथन किया हो, उन्हे कभी भी

सत्ता से न हटाया जाए। इसकी कोई चिन्ता नहीं है कि जनता या मतदाता क्या समझते है और क्या चाहते है। यह उद्देश्य सामने रखकर बहुत समय पहले बड़े ध्यानपूर्वक लक्ष्य निर्धारित किए गए। बिहार संघर्ष और दिल्ली सत्याग्रह जिसकी एक सप्ताह के लिए योजना बनाई गई थी और 25 तारीख को सार्वजनिक सभा में घोषणा की गई थी ये केवल सुविधाजनक बहाने थे। यह सब कुछ श्रीमती गांधी द्वारा कहा हुआ बताते है।

श्रीमती गांधी ने कहा कि हम इस दिशा में नहीं खिसके हैं। यह मार्ग बहुत सोच विचार तथा सभी संभव विकल्पों को तौलकर चुना गया है। (हिन्दुस्तान टाइम्स 20 सितम्बर)। प्रश्न यह है कि इसकी योजना कहां तैयार की गई? कांग्रेस कार्यकारिणी में नहीं अन्यथा इसका पता चल जाता। क्या कार्यकारिणी में कभी इसका अनुमोदन किया? ऐसा दिखाई नहीं देता। क्या केबिनेट की राजनीतिक मामलो की समिति या तथाकथित भीतरी केबिनेट जिनके सदस्यों के बारे में कोई नहीं जानता उसीने इसकी योजना तैयार की? उत्तर नहीं में दिखाई देता है। क्या गृहमन्त्री को इस योजना की व्यापकता गहराई और इरादा का पता था? उत्तर फिर वही दिखाई देता है—नहीं। स्पष्टत इसकी योजना प्रधानमंत्री के गोपनीय विश्वासपात्रों, जिसमें रूस के हिमायती सदस्य हैं द्वारा उनके रहस्य कोठरी में तैयार की गई होगी। इनमें एक या दो रूस के दूतावास के भारतीय सेल के किसीके साथ निकट का सम्पर्क तथा नियमित पत्राचार होता होगा। मुझे विश्वास है कि एक दिन यह रहस्य खुलेगा किन्तु यह मेरा अनुमान ही है।

यहां एक और उद्धरण दिया जाता है कि श्रीमती गांधी ने कहा कि लोकतन्त्र में अन्तत जनता की आवाज होती है। हमने लोगों का मुंह बन्द तो नहीं किया है। थोड़े में लोग नजरबन्द थे और आज भी कुछ विरोधी दल के सदस्य सत्याग्रह तथा उसी

तरह की बातें कर रहे हैं।

श्रीमती गाधी न कहा कि व विरोधी दल की आलोचना या सत्याग्रह के विरुद्ध नही हैं किन्तु बहुत ही अल्पसख्यकों द्वारा बहुत सख्यको के मुह ब द करन के मैं विरुद्ध हू।

श्रीमती गाधी ने यह स्पष्ट नही किया कि किस प्रकार अल्प सख्या बहुत बडी सख्या के लोगो का मुह ब द कर सकती है। यह कहा किय, गया तथा कमे ? सत्यनक्ति सहित कुछ अल्पसख्या के लोग शायद ऐसा कर सकें, किन्तु एक शान्तिमय सघष इस करने की कोशिश कस कर सकता है ? और मुह ब द करने का क्या अथ है ? पटना मे 16 नवम्बर 1974 को काग्रेस का प्रदशन बुरी तरह असफल रहा जबकि लोगो को बसा, गाडियो ट्रको, नावा से मुफ्त लाया गया था। माग म मुफ्त भोजन दिया गया था तथा कुछ नय कपडे बाट गए थे। सत्तारूढ काग्रेस और उसका पूरा प्रशासन इसे बडा सफल बनाने मे जुटा हुआ था। वहा पर श्रीमती गाधी का विचित्र बालक श्री बरुआ भी अपनी शक्तिशाली बुद्धि का लाभ दन और इस आयोजन को पूरी तरह सफल बनाने के लिए साहसी काय के नेता के रूप म वहा थे। किसीके मुह ब द करने की क्या एक भी घटना हुई ? किसी भी एक व्यक्ति न रिपोट की— कि किसी व्यक्ति ने किसी व्यक्ति के भाग लेने के लिए पटना जान से रोका ?

और 18 तारीख की सावजनिक बठक क्या एक अल्प सख्यको का बहुसख्यको का मुह ब द करने का उदाहरण नही है ?

श्रीमती गाधी ने विरोधी दल द्वारा अब भी सत्याग्रह सगठित करने की बात कही है। तानाशाही शासन मे मैं पहली बार सत्याग्रह की बात सुन रहा हू। समाचारपत्रा म मैंन कुछ नही देखा। यदि श्रीमती गाधी फिर झूठ नहा बाल रही हैं तो मुझ प्रसन्नता है कि यह हा रहा है। इसका अथ है कि अग्नि अभी है और उसके शोले इधर उधर यदा-कदा दिखाई देते हैं। गाधीजी

के सत्याग्रह सघष के दिना म भी इसी प्रकार हुआ करता था।

श्रीमती गाधी कहती हैं कि उन्हाने लोगा की जबान नही बन्द की है—अच्छी बात है। पकवान का सबूत उसके खाने म है। वह कहती हैं कि लोकतन्त्र जनता की अन्तिम आवाज़ है।

जी हा—उन्होंने विहार म लोगो की आवाज़ नही सुनी जबकि यह आवाज अपनी अभिव्यजना म बिलकुल स्पष्ट थी। उन्हाने कहा कि इस विषय का निणय अगले चुनाव म होगा। मैंन उनकी चुनौती स्वीकार की।

प्रमाण रूप म पकवान के कारण सामने आ रह हैं। श्रीमती गाधी के दशनानुसार जनता की आवाज़ केवल चुनाव के समय ही अभिव्यक्त होनी चाहिए। अन्य किसी समय भी जनता की आवाज को मान्यता नही है और न हा उस अभिव्यक्त करने का उसका अधिकार है। हा, एक अपवाद है कि जब जनता अपनी ओर से उनके घर म पहुचे, उनसे त्यागपत्र न दन की प्राथना करे और उन्हे अनाथ न होन द उस समय जनता की आवाज को अधिक मान्यता है और उसको अवश्य सुना जाए और उसका पालन किया जाए। यह कसा पाखण्ड है! यह नही होगा। अगल वष के प्रारम्भ मे लोकसभा के चुनाव म हम दखना है कि जनता की आवाज़ को उनके हित म बन्द कर दिया जाता है कि मताधिकार दकर उसे व्यक्त करने का अधिकार दिया जाता है।

ट्रिब्यून (20 सितम्बर) के मुखपष्ठ पर शिक्षको के पहले अधिवेशन के उद्घाटन इत्यादि और समारोह का चित्र है। मेरे मित्र डा० के० एल० श्रीमाली श्रीमती गाधी के बाद बठे दिखाई देत हैं। उनके चहरे पर पूण सतोप के भाव दिखाई दे रह है। जसे ही मैं उस चेहरे को देखता हू, मुझ उनका वह चेहरा याद आ रहा है जब कामराज योजना के अधीन उन्ह नेहरू ने अपन मन्त्रिमण्डल से हटा दिया था, क्योकि श्रीमाली के अनुसार उनस धीरेन्द्र ब्रह्मचारी के योगाश्रम के लिए निधि सग्रह करने के लिए कहा गया

या जिसम वह असमथ रहे। श्रीमनी गाधी उस समय धीरेन्द्र ब्रह्मचारी और उनके आश्रम म व्यक्तिगत रुचि रखती थी। इस तरह श्रीमाली के व्यवहार से वह नाराज हो गइ और जब उनके पिता ने मत्रिमण्डल म परिवनन किया तो श्रीमाली का हटा दिया जाना है। श्रीमाली के अनुसार डा० के० जी०[1] मईन्नेन का नहरू ने उन्हे मनाने के लिए भेजा था, किन्तु व अपन निणय पर अडिग रहे। उनका कहना था कि योगाश्रम को सहायता दना न्यायसगत नही है क्योकि उनके पास पहले स दी गई राशि का उचित लेखा जोखा नही है। उन्होने कुछ सद्धातिक प्रश्न भी उठा दिए थे, किन्तु परिणाम यह हुआ कि व शिक्षामत्री के पद स खुद हटा दिए गए। उस समय वे कितन कटु ग्रालोचक थे और अब इस उपकुलपति के चेहरे पर सौंदय के चिह्न। वाह लोग किस प्रकार बदल जात हैं।

सितम्बर 24

बर्ट्रेंड रसल की आत्मकथा की तीसरी जिल्द समाप्त की। इस पुस्तक स उस व्यक्ति का जो चित्र उभरता है वह बहुत ही आकषक प्रशसनीय और महान है। किसी न उनको सभ्यता का आभूषण की सज्ञा दी है। यह सुन्दर व्याख्या है। मैं बर्ट्रेंड रसल का 'मानवता का आभूषण' समझता हू। मानव समुदाय के विकास की अभी आशा है क्योकि बर्ट्रेंड रसल जस महानुभाव चाहे कइ शताब्दियो के बाद काल के गभ से उदित होत हैं।

इस पुस्तक के अन्त म 'पुनश्च' बहुत ही हृदयस्पर्शी है। अतिम शब्द रसेल की प्रौढता के द्योतक हैं

यदि मैं जीवन जीया हू तो उससे दृष्टि पाने के लिए जीया

1 दिवगत डॉ के जी सईदैन भारत सरकार के शिक्षा सलाहकार थे और 1964-66 तक शिक्षा आयोग के सदस्य थे।

हूं—व्यक्तिगत तथा सामाजिक दोनो। यह देखने के लिए कि महान क्या है, सुन्दर क्या है और सौम्य क्या है। समय के ऐसे जीवत क्षणो के भीतर की आवाज सुनने के लिए ताकि विवेक कर सकू – सामाजिक—उस समाज की कल्पना करने के लिए, जिसे बनाया जाता है जहा व्यक्ति निर्बाध अपना विकास करेंगे, जहा घणा और लालच तथा ईर्ष्या मर चुकी होगी क्योंकि उन्हे पालन पोषण करनेवाला कोई नही होगा। मैं मानता हू कि ये चीजें और विश्व अपनी सभी आतको के भी मुझे विचलित नही कर सका।

कितना महान दृष्टिकोण है—भविष्य मे विश्वास!

सितम्बर 25

अपार प्रसन्नता का दिन था। बहुत ही सुन्दर आश्चय वा ि्न जब सुगाता दरवाजे पर आए। उनके पीछे डिप्टी कमिश्नर थे। मैंने उन्हें गले लगाया और पूछा—'कसे आए?' एसा हुआ कि दिल्ली मे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की बठक मे पी० एन० धर स मिले। बातचीत के दौरान उन्होने उन्हें बताया कि वे मुझे मिलने के बन्त इच्छुक हैं। धर ने कहा क्या नही जाए और उनस मिलें। सुगाता ने पूछा कि यह मुलाकात क्या कुछ मिनटो तक ही रहेगी? धर ने कहा नही जितना समय चाहे ले सकते हैं। यह धर की कृपा थी। मैंने सुगाता स कहने को कहा कि मैं उनका आभारी हू किन्तु खेद है कि मेर मन के अनुसार धर बुरी सगत क कारण गिर गए हैं। सुगाता शाम को दूसरी बार मिलने आए। इन भटो म डिप्टी कमिश्नर हर समय साथ रहे।

सितम्बर, 26

आज तीन महीने की नजरबन्दी पूरी हुई है। ऐसा अनुभव होता है कि अब जल्दी जल्दी दिन बीत रहे हैं किन्तु साथी के अभाव के कारण समय बडी कठिनाई से बीत रहा है। पर ऐसा दिखाई देता है कि तानाशाही के गत में गिरना रुक गया है। अल्पावधि के अलावा स्थायी तौर पर यह कहना कठिन है। कल सुगाता कह रहे थे कि जिन क्षेत्रों मे वे गए हैं उनमे यह सामान्य धारणा है कि अगल वर्ष संसदीय चुनाव होगे। यदि ऐसा हुआ तो यकीनन लोकतंत्र वापस आएगा यद्यपि आपात-स्थिति नही हटाई जाएगी और समाचारपत्र पूरी तरह स्वतंत्र नही होगे किन्तु समाचारपत्र जेल म अवश्य दिए जाएगे। विचार व्यक्त करन और मेल मिलाप में अधिक स्वतंत्रता होगी।[1]

सितम्बर, 28

कल (सितम्बर 27, शनिवार) मेरे लिए अच्छा दिन नही था। जसे ही मैं शौचालय म बठा, मेरे पेट मे भयानक दद हुआ। पहले मैंने सोचा कि यह टल जाएगा किन्तु यह जा नही रहा और अधिक तीव्र हो गया। मुझे अत्यधिक पसीना आने लगा, बेहोशी होन लगी और बहुत कमजोर हो गया। उसमे हाथ मुह धोन तथा अपने बिस्तर पर लौटने मे कठिनाई हुई। मैंने डाक्टर कालरा को बुलवा भेजा और डॉ० चट्टानी को सूचित करन को कहा। यह दद कद घटे रहा। डॉक्टरो न दवा दी। सारा दिन बिस्तर म रहा। केवल तरल पदाथ लिए तथा रात दिन का थोडा-चावल और

1 श्री सुगाता दास गुप्ता जयप्रकाशजी द्वारा वाराणसी में स्थापित गाधी अध्ययन इंस्टीट्यूट के निदेशक।

दही। निदान जो कुछ भी हा करें, मरे जीवन मे इस प्रकार का यह पहला अनुभव था। अत्यधिक पसीना दद तथा कमजोरी के कारण मैंने पहले यह सोचा था कि यह दिल का दौरा है किन्तु दद निचले पट म था। हृदय रक्तचाप इत्यादि सब सामाय थ। ई० सी० जी० की गई और कुछ नई बात नही मिली।

आज मुझे काफी आराम है। लॉन म 20 मिनट की सर की —6 30 वजे शाम।

सितम्बर, 29

ट्रिब्यून म तीन काम्म शीप म श्री जगजीवनराम का भाषण छपा है जिसम बडे आग्रह स कहा गया है— 20 सूत्री कायक्रम लागू करने के लिए प्रधानमत्री का नेतत्व महत्त्वपूण है। मैं हैरान हू कि वफादारी की इतनी ओछी घोषणा। क्या इसके पीछे कोई छिपा कारण है या वफादारी की नियतकालिक प्रतिना? विश्वास न ी ाता कि इस प्रकार की चापलूसी जगजीवन बाबू जस व्यक्ति करें। कितना अध पतन है!

कितने खेद का विषय है कि किसी न भी जगजीवनराम म नही पूछा कि *प्रधानमत्री के नेतत्व म 10 सूत्री कायक्रम क्या* असफल रहा? शायद विरोधी दल ना ही विश्वासघात है जिन्हे दोषी ठहराना था उन्ह।

आज के ट्रिब्यून म यह घोषणा की गइ है कि पूण मद्यनिषध किए जाने की सम्भावना है। कितनी आश्चयजनक बात है! राज नतिक चालबाजी के बावजूद यह बहुत ही उत्कृष्ट बात होगी। राजनतिक चाल यद्यपि विनोबाजी को कायल करने और सर्वोदय सघप को शात बनाने तथा केवल प्रचार करने की है तथा जयप्रकाश एव उनके मित्रो को, श्रीमती गाधी जसी गाधी भक्त की

तुल्ना म अगावत करना है इसका आगामी चुनाव मे भी लाभ होगा। हा मुझे इसपर तनिक भी आपत्ति नही है। जहा तक मेरा सम्बध है लोकतत्र के लिए सघप तथा भ्रष्टाचार कुशासन इत्यादि के विरुद्ध लडाई जारी रहगी। मेरा अन्तिम लक्ष्य सम्पूण क्रांति है।

सितम्बर 30

मिस्र के राष्ट्रपति सादात अभी भी न केवल पश्चिम के वल्कि सपूण अफ्रीका एशिया के देशो के सभी नताओ के पक्के सहायक हैं। चयरमन माओ त्से तुग अपन आपमे एक वग हैं और निस्सदेह वे महापुरुष है। उन्ह निकालकर आज अफ्रीका एशिया म कोई नही है जिसकी सादात से तुलना की जा सके। राष्ट्रपति नासर की पचवीं बरसी पर काहिरा मे उनकी भाषण की स्मृति अभी तक मर मन म है। उन्होने कितने साहसपूण और स्पष्ट शब्दो म कहा था कि रूस उनके साथ है जबकि अमरीका इसरायल को घातक अस्त्र तथा विशेषज्ञ भेज रहा है। इन हालात म उस 22 अक्टूबर, 1973 को युद्धविराम स्वीकार करना पडा। सोवियत यूनियन के साथ सम्बधो म सुधार उस समय हुआ जब 1972 म भूतपूव राष्ट्रपति रिचड निक्सन मास्को गए। उस समय एक सयुक्त विज्ञप्ति निकाली गइ जिसम पश्चिम एशिया म सनिक तनाव कम करने को कहा गया था। उस समय मैं पूरी तरह अस्त्र शस्त्र म सुसज्जित नही था। इसरायलिया से 10 कदम पीछे और मरी भूमि पर उनका कब्जा — (ट्रिब्यून सितम्बर 30)। राष्ट्रपति ने कहा— यह बयान हमारे लिए कमर तोडन के बराबर था। पूरा भाषण ही असाधारण है और इसका एक कतरन मैं अपने पास रख रहा हू।

हमारे देश के शासकों म क्या कोई ऐसा है जो इतने साहस से इतने स्पष्ट शब्दो मे कह सके ? यह देशभक्ति की चरम सीमा है। ईश्वर जानता है कि हमारे देश मे निणय लेने और सरकार के बडे बडे सस्थाना तथा राजतत्र मे रूसी कितना घुस चुके हैं।

अक्टबर, 1

हिन्दुस्तान टाइम्स का मुख्य समाचार है— विश्वविद्यालय को कानून मे बचने के लिए शरणस्थल नही बनाया जा सकता—प्रधानमत्री ।' ठीक है किन्तु मत्री बनने मे कोई कानून से नही छट सकता चाहे वे प्रधानमत्री ही क्यो न हो। सघप का कुल उददेश्य ही यह है। चुने जानपर जिन लोगा के हाथ मे सत्ता आई है वे कानून की परिधि से बाहर नही रह सकते। अत यह माग की गई थी कि एक प्रतिष्ठान सस्था—जसेकि स्वीडन की ओमबुडममेन है— गठित की जाए जो सत्ताधारी व्यक्ति के कानून तथा जनता के सामने जवाबदेही के लिए रहे। इस सम्ब ध मे सथानम रिपोट तथा छात्रो की समस्याओ की दूसरी सिफारिशें (जस ए० जी० नूरानी)के विचार विमश तथा मतक्य से निणय लेने के लिए आधार के रूप म स्वीकार करने का प्रस्ताव किया गया है। किन्तु हमारी माननीय प्रधानमत्री अपने आपको तथा राज्या मे अपने साथियो तथा केन्द्र मे किसी के प्रति जवाबदेही नही मानती जब तक कि अगले चुनाव मे सत्ता के सम्बन्ध म लोक निणय नही दे देना। जो अभी तक सत्ता हाथ मे लिए हैं इसस न केवल उनको स्वेच्छाचार का प्रोत्साहन मिला बल्कि धन शक्ति और चुनाव भ्रष्टाचार स विरोधी दल के लोगा की तुलना म यह सुनिश्चित करता है कि जिनके हाथ म शक्ति वे फिर शक्ति हथिया लेंगे। इस प्रकार कुशासन ।५।८ या एक

गिरोह का शासन सदैव चलता रहेगा।

जिन विषयो के लिए संघर्ष किया गया था यद्यपि प्रधानमंत्री ने उनम से आधे को स्वीकार करने के लिए कदम उठाए हैं, किन्तु आज भी उन्होंने ओमबुडसमेन (मैं यह उक्ति शाटहैण्ड के रूप मे प्रयोग म ला रहा हू) गठित करने के लिए कुछ नही किया है या कोई संस्था अथवा कार्यप्रणाली, जिसके अनुसार उम्मीदवारो को चुनने म उनका अधिक वचस्व हो तथा चुने गए प्रतिनिधियो पर कुछ नियत्रण हो और इस तरह वे लगातार जवाबदेही के लिए जिम्मेदार हो।

अनुशासन पर आजकल श्रीमती गाधी बहुत भाषण दे रही हैं और आपातस्थिति की घोषणा के कारण देश में अनुशासन का जो वातावरण बना है उसके लिए अपनी पीठ ठीक रही हैं, किन्तु उन्हें अभी सच्चाई का अनुभव करना है—मुझे भय है कि जिसे वह कभी भी नहा कर पाएगी कि देश मे जो अनुशासनहीनता आई है उसका कारण था सत्ताधारी पार्टी और उनके गुट के अह-कार अकुशलता भ्रष्टाचार तथा पार्टी की आपसी तथा भीतरी लडाई। श्रीमती गाधी ने स्वय अनुशासन का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया जब उन्होंने औपचारिक रूप मे राष्ट्रपति पद के लिए श्री सजीव रेड्डी का नाम प्रस्तावित किया किन्तु काय श्री वी० वी० गिरि के लिए किया। श्री गिरि ने (काग्रेसजन के रूप मे) सरकारी तौर पर काग्रेस के नामित उम्मीदवार के विरुद्ध चुनाव लडा। यह राजनतिक अनुशासनहीनता और विश्वासघात जसी भद्दी भूल को यह मानकर क्षमा किया गया है कि राजनीति तो राजनीति है। दूसरे शब्दों में राजनतिक व्यवहार को नतिक मान-दड से नही देख सकते, किन्तु श्रीमती गाधी ने अन्तरात्मा की सुखद आवाज को अपनी राजनतिक अनतिकता के साथ जोड-बढा लिया है।

यदि भारत तथा भारत के लोगो को अनुशासन के सदगुण

सिखान के लिए तानाशाही मुसीबतों म गुजारा जाना है तो वह गुण पहले ही परीक्षण म केवल मुलम्मा सिद्ध होगा। अनुशासन व्यक्ति तथा समूह के व्यवहार का एसा गुण है जिस हृदय म बठाना होता है और उसे स्वतन्त्र वातावरण म ही पोषित करना होना है, अर्थात ऐसी परिस्थिति पैदा करनी होती है जहा काय करन की स्वतन्त्रता हो। इस प्रक्रिया म विशेष रूप मे ऐस समाज म जहा राजनतिक शक्ति तथा राजनीति एसा प्रमुख स्थान रखती है (जो है किन्तु खेदपूण है)। जिसपर अनुशासन निभर करता है उसपर यह सबस अधिक निभर करना है खास कर उन व्यक्तियो के व्यवहार पर, जिनके हाथ म सत्ता है, फलत सरकार पर। 1974 75 म भारतीय राजनतिक दल की नतिकता का यथाथ मूल्याकन करन पर विदित होगा कि राजनतिक अनतिकता के मामले म सत्ताधारी काग्रेस को आसानी स सबस ज्यादा भ्रष्टाचार वाली सस्था कह सकत हैं। इसम सदेह नही कि काग्रस म ईमानदार व्यक्ति भी हैं और आज भी हैं किन्तु उन्ह ऐसी स्थिति मे पीछे रहना पडा, जहा कपट घूसखोरी लोभ तथा खुशामद और अन्य इसी प्रकार के अवगुण प्रचलित हैं। श्रीमती गाधी ने स्वय भी अपना कोई साफ चित्र प्रस्तुत नही किया। राष्ट्रपति के पद के चुनाव स प्रारम्भ करके ऐस बहुत म काय हैं जिनकी ओर यद्यपि जनता का ध्यान आकृष्ट हुआ किन्तु श्रीमती गाधी के उन मामलो के सम्बन्ध म जानकारी करान के लिए लगातार इकार के कारण वे सतत बद किताब म ही रह। नागरवाला और 60 लाख की घटना अभी तक अवर्णनीय रहस्य है। इसी प्रकार विदेश व्यापार लाइसेंस का मामला कभी भी पब्लिक अथवा न्यायिक जाच का विषय नही बना। यहा तक कि ससदीय बहस तथा तहकीकात मे बाधाए डाली गइ और उन्हे नाकाम किया गया। मिश्रा की हत्या का सम्बन्ध निश्चय ही लाइसेंस-काड से था उसपर भी अभी तक तहकीकात की जानी है और भण्डाफोड किया जाना है। मारुति

से सम्बन्धित बहुत से मामले कभी भी जाच में नहीं लाए गए। प्रधानमंत्री ने अपने अन्तःकरण की तसल्ली कर ली और अपने लड़के को छूटें जारी कर जनता के मन से शकाओं को दूर करने का प्रयास किया। यह सम्भव है कि मारुति व्यापार में वस्तुतः कोई मामला धुंधला न हो किन्तु इस निष्पक्ष जाच में सिद्ध किया जाना चाहिए था जिसे लगातार इकार किया जाता रहा, जैसे राजनैतिक प्रणाली में भारी सख्या में चुनाव निधि एकत्र करना, चुनाव में पैसे की शक्ति का प्रयोग। ससद तथा विधान सभा के प्रतिपक्ष के सदस्यों को पैसे से या नौकरी से खरीद लेना और बहुत से अनैतिक काय बिना किसी दंड के किए गए। राज्य सरकारों ने भी भ्रष्टाचार और भाई भतीजावाद के कारण इसी प्रकार की बदनामी ली। इसमें बिहार सबसे अधिक बदनाम हुआ। इस आधुनिक राजनीति क्षेत्र, जिसे कुछ न्यायप्रियों का भी समर्थन है के वातावरण में श्रीमती गाधी ने अनुशासन की परिभाषा आत्मनियत्रण और आत्मनियमन की है (हिन्दुस्तान टाइम्स), यह शुभकामना बनी रहनी चाहिए। भारतीय लोकतन्त्र की इस काली रात में श्रीमती गाधी हर एक को 'पुनर्विचार' का परामर्श दे रही हैं। मुझे विश्वास है कि बिना उनके कहे ही सब लोग स्वयं ही यह सब कुछ कर रहे होंगे। किन्तु यह दिखाई नहीं देता कि वह स्वयं पुनर्विचार कर रही हैं कि नहीं और यदि कर रही हैं तो यह राजनैतिक वातावरण को स्वस्थ बनाने की दिशा में नहीं, बल्कि अपनी शक्ति को स्थायी बनाने के लिए जो अभी तक उनके सभी कार्यों का एकमात्र उद्देश्य रहा है। आपातस्थिति को ही लीजिए। सभी पहलुओं से यह तथ्य स्पष्ट दिखाई देता है कि पूरे देश में शान्ति और खामोशी है। बड़े गर्व से वह अपने लिए तथा अपने साथियों के लिए इसकी चर्चा करती है—सभी प्रकार की अशान्ति और विरोध को दबाने की कामयाबी का मूल्य। इसीलिए आपातस्थिति को और अवधि को बढ़ाने का कोई औचित्य नहीं है, सिवा

इस बात के कि नीतिविरोध शक्ति से चिपकी रहें। अक्टूबर का महीना आ गया है। आगामी संसदीय चुनाव के सम्बन्ध में श्रीमती गांधी अभी तक अस्पष्ट किन्तु चौकस हैं। शायद वह उस समय तक चुनाव नहीं कराएगी जब तक उन्हें विश्वास न हो जाए कि उनका मतारोपण का अभियान पूरा हो गया है। और इस तरह विरोधी दल पूरी तरह नपुंसक बना दिए गए हैं। इस बात के लिए मुझे भय है कि उन्हें बहुत दूर तक रुकना होगा और जो काली रात देश पर छाई हुई है, वह कभी नहीं हटेगी क्योंकि मैं नहीं समझता, इन उद्देश्यों की पूर्ति में वे कभी भी सफल होंगी। बुद्धिजीवी लोगों के साथ चाहे कितना भी धोखा दिया जाता रहे आपातस्थिति को बढ़ाना और उसके साथ दमन तथा प्रजातान्त्रिक अधिकारों से इंकार का प्रभाव बिल्कुल उल्टा होगा। मुझे देश के युवावर्ग और छात्रों में दृढ़ विश्वास है। इस सम्बन्ध में मैंने पहले भी लिखा है अतः इसके आगे और कुछ नहीं कहूंगा। मुझे खेद है कि जगजीवन बाबू पूरी तरह डरे हुए से दिखाई देते हैं। लोकतन्त्र-विचार के सम्बन्ध में श्रीमती गांधी तथा बरुआ की तरह उन्होंने कुछ न करने का दृष्टिकोण अपना लिया है। यह उसी तरह है जिस तरह अमरीकन दक्षिण वियतनामियों को बचाने की कोशिश में उन्हें तबाह किए जा रहे हैं। बहुत-से बुद्धिजीवी होंगे जो इस छोटे-से पौधे के विकास के लिए बाड़ के रूप में रक्षा करेंगे ताकि उसका पूर्ण विकास हो सके। किन्तु जब सभी तरह समाप्त हो चुके हैं तो यह अभी संदिग्ध है कि आपातस्थिति में भारी संख्या में लोगों का पकड़ा जाना समाचारपत्रों पर अंकुश, व और बहुत-सी दूसरी बातें जो पिछले 26 जून से की गई हैं जिनसे इनके हिसाब से भारतीय जनतन्त्र को बचाया है। मैं पूर्णतः सहमत हूं कि इन सभी साधनों से हमारे लोकतन्त्र पर गहरी चोट लगी है जिससे निबटने के लिए बहुत समय लगेगा। यदि श्रीमती गांधी और उनके साथी लोकतन्त्र के नाम पर अथवा दूसरे बहानों से शक्ति

हथियार रखेंगे तो वे उस समय तक नहीं छोड़ेंगे जब तक शांति नहीं हो जाती। मुझे अभी तक विश्वास है कि इन अनधिकारी लोगों से शान्तिपूर्ण ढंग से शक्ति ले ली जाएगी और स्वतंत्रता तथा लोकतंत्र जनता को वापस मिल जाएगा। यदि हिंसात्मक क्रांति होती है या इसके लिए प्रयास होता है तो इससे अधिकार पूर्ण ढंग से शक्ति पर कब्ज़ा किए हुए लोगों को या तो बल मिलेगा या उनके स्थान पर इस तरह के अधिकारी लोग शक्ति हथिया लेंगे। यह बेचारा देश सब तानाशाही तथा पतन के गर्त में फिर से गिर जाएगा जिस प्रकार अफ्रीका एशिया के बहुत से दूसरे देश गिरे हैं। इस नियति से ईश्वर भारत को बचाए।

अक्टूबर, 2

कला का सौन्दर्य मकबरे पर निर्भर नहीं करता किन्तु यह शाश्वत सौंदर्य है। सभी पवित्र कलाएं मृत्यु निराशा की ओर नहीं ले जाती, बल्कि यह उस समय की संस्कृति को अलंकृत करती हैं, उसके उच्च मूल्यों को बताती हैं—अंद्रे मालरो—एंटी ममायर।

●●

बापू मैं आपके चरणों में अपना अभिवादन प्रस्तुत करता हूं। महात्मा गांधी विजयी रहें। महात्मा गांधी अमर रहें।

आज बापू की 116वीं वर्षगांठ है। उन्हें यह नश्वर शरीर छोड़े अड़तीस वर्ष बीत चुके हैं। इस अवधि में प्रत्येक ने उनके नाम पर कसम ली है किन्तु उनका बताया हुआ कार्य बहुत ही कम किया। अब कुछ वर्षों से इस देश के बुद्धिजीवी यह अनुभव कर रहे हैं कि बापू द्वारा बताए गए मार्ग से हटकर भारत ने बहुत

बड़ी भूल की है। यही बुद्धिजीवी और उनकी तरह के अन्य जवाहरलाल के समय में गांधी को रूढ़िवादी समझते थे और नेहरू के आधुनिक दृष्टिकोण की प्रशंसा करते थे। श्रीमती गांधी, जो नाटक की कला में निपुण हैं उन्होंने प्रायः दावा किया है कि वह केवल गांधीजी के पथ पर चल रही हैं। शायद आज भी महात्मा गांधी के जन्म दिवस पर वे इसी तरह के विचारों को प्रकट करेंगी किन्तु यह सब धोखा है।

कुछ वर्षों के लिए विनोबाजी ने भी चमत्कारपूर्ण बातें की थीं। ऐसा दिखाई देने लगा था मानो सामाजिक परिवर्तन और पुनर्निर्माण की एक नई गांधीवादी प्रणाली निकल आई है किन्तु अपने तूफानी भूदान प्रयास के उपरान्त कोई हलकी सी भी वायु नहीं बही। ग्रामदान के विज्ञान तूफान की बात न करें ग्राम स्वराज्य या इसी तरह के कोई दूसरे रचनात्मक प्रयास भी नहीं किए गए। बाद में वे अपने भीतर सिमट गए और निष्क्रियता के रूप में सक्रिय होने का प्रयोग प्रारम्भ किया। आज तक इसका कोई लाभ प्राप्त नहीं हुआ। किन्तु इतिहास में 10 या और कुछ वर्षों की अवधि कितनी है? इसी बीच देश गिरावट की ओर तेजी से बढ़ रहा है। भारतीय जिनमें से 50 प्रतिशत से अधिक लोग गरीबी सीमा में रहते हैं। उनका आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक पतन भी हुआ है। आज बापू का यह कथन याद आ रहा है जब उन्होंने भारत की व्याख्या करते हुए कहा था कि हमारा कष्ट अब यह नहीं है कि हमें सरकार जिसका स्वरूप सारी के द्वारा ह्रास हुआ है बल्कि इसका दर्द अब भी है कि अब जनता यह महसूस करने लगी कि अपने शासक शासन करने के योग्य नहीं हो सकते तो भारत दुखी हो सकती है। भारत अब अपने पांव पर खड़ा हुआ है, किन्तु वास्तविक लोक का अभी तक अपने पांव पर खड़ा है यह सभी जीवित तथा वास्तविक परिस्थितियों के सम्बन्ध में ... होती है। इसी

भयानक कहानी है जिसकी तुलना हम भिखारी की दयनीय स्थिति से कर सकते हैं।

अक्टूबर, 3

मद्रास म कल कामराज की गम्भीर हृदय रोग से मृत्यु हो गई। एक महान् व्यक्ति, भारतीय राजनीति के बहादुर योद्धा अब नहीं हैं। उनके जीवन का ध्येय अभी पूरा नही हुआ था। पिछली बार जब वे मुझे दिल्ली म मिले तो उन्होंने कुछ इस प्रकार कहा था 'आप जो कर रहे हैं देश के हित म, केवल वही आशा है किन्तु तमिलनाडु का बाद मे जब मने दौरा किया तो वे मेरे भाषणों से प्रसन्न नही थे। मैं डी० एम० के० की भत्सना न कर सका और न ही तमिलनाडु सरकार के विरुद्ध आदोलन के लिए आवाज दे सका। इसका कारण यह था कि अन्य कांग्रेसी मुख्यमन्त्रियो के प्रतिकूल श्री करुणानिधि विरोधी दल के लोगो के मिलने और डी० एम० के० सरकार की आलोचना के सम्बन्ध म बातचीत करने के लिए तैयार है। उन्होने यह भी कहा कि वे उनकी भूला भ्रष्टाचार या किसी अन्य किस्म के आरोपो के लिए जवाब देही के लिए तैयार हैं। उन्होने आगे बताया कि एक मामले म उन्होने पहल से ही एक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश जाच आयोग के रूप मे नियुक्त कर दिया है। उन्होंने यह भी बताया कि जनसामान्य व्यवहार जाच अधिनियम को उन्होने पहले से लागू करवा दिया है। उन्होने इच्छा व्यक्त की कि जनता मुझसे या विरोधी दल के नेताओं तथा उनकी भूलो के सम्बन्ध म बात चीत कर सकती है, जो नियमानुकूल नही थी। उस अधिनियम म निर्धारित कानून के अनुसार यदि किसी भी व्यक्ति के लिए झूठे आरोप लगाने पर कडी सजा मिलनी चाहिए थी, जो नही मिल

पाई। इन परिस्थितियों में जिम्मेदार विरोधी दल को डी० एम० के० नेता के वचनों को स्वीकार किया जाना चाहिए और उसके परिहार के लिए गम्भीर कदम उठाए जाने चाहिए। दरअसल तमिलनाडु में अपने एक भाषण में मैंने कामराज से आग्रह किया था कि वे इस चिकित्सा पद्धति को अपना लें और राज्य में व्याप्त अंधकारमय राजनीतिक वातावरण को साफ कर दें।

करुणानिधि राजाराम, सीजियान[1]—मैं यह नहीं कह रहा हूं कि इन्होंने मद्रास या दिल्ली में जो कुछ था, उसको उसी रूप में ले लूं या कि मैं भी उनकी तरह ही सोचता हूं, किन्तु कामराज और विरोधी दल से किसी प्रकार का प्रत्युत्तर प्राप्त न होने पर कम से कम मेरे लिए यह नहीं न था कि डी० एम० के० सरकार पर आक्रमण करने और उसके विरुद्ध जनता की सरकार के सत्तारूढ़ होने के लिए आह्वान करूं जबकि संघर्ष अब भी तैयार किया जा सकता था (क्योंकि जैसा मैंने बताने का प्रयास किया है यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक मामले में यह सरकार के विरुद्ध ही हो। सरकार संघर्ष के साथ ईमानदारी से सहयोग दे सकती है, क्योंकि इसका अंतिम लक्ष्य बहुत व्यापक है—सम्पूर्ण क्रांति)। किन्तु स्वाभाविक है कि तमिलनाडु के कामराज सहित विरोधी दल के नेता उस समय तक संघर्ष के लिए रुचिकर नहीं थे जब तक उनके तत्काल राजनैतिक उद्देश्य, विरोधी दल के उद्देश्यों से मेल भी नहीं खा लेते।

एम० जी० आर० की तुलना में कामराज के लिए स्थिति और भी कठिन थी क्योंकि जैसा कि उन्होंने मुझे दिल्ली की बैठक में बताया था, यह डी० एम० के० को कमजोर नहीं करना चाहते थे क्योंकि अन्य ए० डी० एम० के० भी इस अनुपात से सशक्त हो जाएगी। कामराज के लिए ए० डी० एम० के० डी० एम० के० से भी बुरी थी। फिर भी कांग्रेस (ओ०) की राष्ट्रीय नीति के अनुसार वह कांग्रेस (ओ०) को उसके समीप नहीं लाना चाहते थे।

1 डी० एम० के० नेता।

इस प्रकार भारत के अन्य राज्यो के असदृश कांग्रेस (ओ०) के नेता की हैसियत से कामराज की स्थिति बहुत ही अप्रीतिकर तथा निर्बल थी। उन्होने मुझे बताया था कि वह श्रीमती गाधी मे बिल्कुल ही विश्वास नही रखते और न ही वह रखती है, किन्तु तमिलनाडु की पूरी राजनीति म उनके डी० एम० के० तथा ए० डी० एम० के०, दोनो के खुला विरोधी होने के कारण उनके पास चालबाजी का कोई मौका नही है। उनको पता था कि श्रीमती गाधी जसी अनतिक राजनीतिज्ञ का ए० डी० एम० के० के साथ मिल जान म कोई सदह नही है और अ त मे वह आशका ठीक निकली। अत अस्थायी तौर पर उनकी स्थिति आगामी चुनाव मे 'अकेले ही रहन की है। वह जानत है कि उनकी पार्टी के लिए यह घातक होगा, फिर भी उन्हाने प्रतीक्षा करना और देखना ही बेहतर समझा। यदि उनकी पार्टी की राष्ट्रीय नीति और बिहार सघर्ष का बल न होता तो अन्ततोगत्वा उन्होन अपन भाग्य का पलडा श्रीमती गाधी की ओर झुका दिया होता। आपातस्थिति की घोषणा के बाद उनक पास जो स्थिति और विकल्प थे वे और जटिल तथा कम हो गए।

लकिन मृत्यु न उनके लिए इस बात का निर्णय कर दिया। मुझे भय है कि उनके अनुयायी विघटित तथा अलग अलग हो जाएग। श्रीमती गाधी के इस निर्णय से कि व उनकी अन्त्येष्टि मे भाग लेंगी, तमिलनाडु कांग्रेस (ओ०) को गम्भीर धक्का पहुचा है। मोरारजी भाई नजरब द हैं। मुझे आशका है कि शायद सी० बी० गुप्ता का स्वास्थ्य भी उन्ह यात्रा करन की अनुमति न देगा या उनका स्वास्थ्य अच्छा भी होता तो क्या वे जाते? अत श्रीमती गाधी एसी स्थिति का पूरा लाभ उठाएगी। कुछ भी हो, मुझे याद आ रहा है कि श्री नहरू ने व्यावहारिक एव औपचारिक रूप म अपने पुराने साथी राजेंद्र बाबू की अन्त्येष्टि म भाग लेना आवश्यक नही समझा। यद्यपि राष्ट्रपति राधाकृष्णन् ने अपन पद का मान रखने और अपने सद्भावो के लिए बासघाट पटना म उनकी

अन्त्येष्टि में भाग लिया। नेहरू परिवार के लिए राजनीति ही बस सब कुछ है।

अक्टूबर, 4

कामकाज की अन्त्येष्टि बहुत ही सच्ची मानवीय घटना है—बहुत ही हृदयस्पर्शी मर्मभेदी तथा शोकपूर्ण।

'ट्रिब्यून' के 4 कॉलम शीर्ष में छपा है— भारत में पूर्ण शान्ति —प्रधानमन्त्री। कितना आश्चर्यजनक! जैसेकि आपातस्थिति से पूर्व सारे देश में अशान्ति थी! श्रीमती गांधी इस विषय में लगभग प्रतिदिन बोलती हैं।

आगामी फरवरी मार्च के संसदीय चुनावों के सम्बन्ध में पूछे जाने पर श्रीमती गांधी ने कहा— मैं अभी कुछ नहीं कह सकती। अभी काफी समय है। आम तौर पर हम बहुत पहले नहीं सोचा करते'—जी हां अभी बहुत समय है। अक्टूबर नवम्बर दिसम्बर जनवरी—चार महीने शेष हैं। विरोधी दल के नेता बंदी हैं प्रेस तथा प्लेटफार्म जकड़े हुए हैं। सारे देश में भय का वातावरण है। ऐसा दिखाई देता है कि चुनाव के समीप शायद दिसम्बर में या जनवरी के प्रारम्भ में बंदियों की रिहाई होगी विचार अभिव्यक्त करने की स्वतन्त्रता होगी और आपस में मिलने और बातचीत की आजादी दी जाएगी। विरोधी दलों को मौका मिलेगा कि वे अपना घर ठीक कर लें किसी प्रकार का चुनाव संगठन बना लें (जैसाकि गुजरात जनता मोर्चा चाहे प्रमुख विरोधी दलों का विलयन न हो) और इतने समय में ही निधि एकत्र कर लें। यह सम्भव है कि श्रीमती गांधी के सोचने का ढंग वस्तुतः यही हो।

अक्टूबर, 5

राजा, लाल बाबू और अब्राहम आए। उनके साथ भेंट हुई। उन तीनों को बहुत कुछ कहना था, किन्तु मैं भेंट से न्याय नहीं कर पाया। मुझे उनसे बहुत सी बातें कहनी थी। बहुत से प्रश्न पूछने थे किन्तु उनमें से अधिकांश मेरे मन में ही रह। बहुत समय नहीं था। भविष्य के लिए मैं कहूंगा कि व एकसाथ न आवें। यह दूसरों के लिए भी लागू रहेगी।

यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि सुधा तथा उमा जानकी तथा प्रभात का रिहा कर दिया गया है। जानकी स व एक पत्र लाए थे। सेंसर द्वारा पत्र लिए जाने के उपरान्त कल या परसों वह मुझे मिलेगा।

दिल्ली में राजा नयनतारा से मिले थे। वापसी पर शायद फिर मिलें। बाबूजी पटना में है।

किसीको मेरे पत्र प्राप्त नहीं हुए। गुलाब तथा जीवेश को पटना भेजे गए दो पत्र प्राप्त हुए। नितात आपत्तिरहित व्यक्तिगत पत्रों स भी सरकार बहुत डरी-सी दिखाई देती है, या यह केवल सकीर्णता है।

अक्टूबर, 6

मालूम हुआ है कि सुगाता ने प्रोफेसर धर की मुझसे हुई बात की पूरी रिपोर्ट भेज दी है। यह अच्छी बात है। कम से कम कुछ ता बात आगे बढ़ी है। मुझे आशा है कि सुगाता शायद वापस आए। शायद शेख साहब को मेरा पत्र भेज दिया गया है या उनको इस सम्बन्ध में बता दिया गया है। उस ओर से भी किसी बातचीत का प्रारम्भ होना सम्भव है।

सुगाता को एक दिन और रुकना था। वह 9 तारीख को लौटे और फिर हमने बहुत देर तक बातचीत की। उन्होंने चाहा कि मैं अपनी बात दोबारा कह दू, ताकि घर को रिपोर्ट करते समय वह भूल न करें। सयोगवश घर ने सुगाता को स्पष्ट कर दिया था कि वे प्रधानमंत्री की विशिष्ट हिदायता से पहलकदमी कर रहे है।

अब मैं नही जानता कि इस सबका अथ क्या है और इसका क्या परिणाम निकलेगा।

स्वास्थ्य के अनुसार 8 तारीख मेरे लिए फिर बुरा दिन था। अधिक्तर अनडिया की शिकायत। ऐसा दिखाई दता था कि मेदा भीतर से फटने जा रहा है यद्यपि बाहर से छूने पर बहुत नरम था। कोई भूख नही थी। कब्ज थी। यहा तक कि गस भी नहा गुजर रही थी। शाम को 99 2 डिग्री बुखार हुआ। ऐसा दिखाई देता है कि अतडिया म सक्रम तथा सूजन है। डा० चुट्टानी ने स्टेमडिल तथा नेवा क्युइन टिकिया लेने को बताई हैं। यूनियनजाइम का इस्तेमाल फिर से शुरू कर दिया है। आज मेरा स्वास्थ्य आगे से अच्छा है यद्यपि कमजोरी अवश्य है।

अक्टूबर, 11

मैंने आज आयु के 73 वप पूरे कर लिए हैं। कितने आश्चय की बात है! यह ईश्वर की अनुकम्पा है कि इतनी लम्बी पुरानी बीमारी के बावजूद भी मैं इतनी आयु जीया हू। ईश्वर मुझे बुद्धि तथा शक्ति दे कि मैं, जो भी जीवन का शेष समय मेरे पास बचे उस लोगों और देश की सेवा में लगा दू। ईश्वर की सवा का सबसे बडा रहस्य यही है। परमात्मा मेरा मन तथा हृदय सभी अपवित्र बाता से साफ रखें।

यद्यपि मैंने यहां किसी को नहीं बताया था कि किया एक पुलिस अधिकारी के (बातचीत के दौरान पता चल गया) कि मेरा जन्मदिन कब है। मुझे प्रसन्नतापूर्वक यह देखकर आश्चर्य हुआ कि कार्यकारी मजिस्ट्रेट तथा जेल के अधीक्षक सरदार मोहिन्दर सिंह अपने हाथों में फूलों का एक बड़ा गुलदस्ता लिए हुए जन्मदिन की बधाई देने के लिए मेरे कमरे में आ रहे हैं। यह उनकी महान कृपा है। राज्य उभरता है और आत्मा सिकुड़ती है शासितूर प्रतिरोधकार कार्यवाहकों ने जार के राज्य के सम्बन्ध में कहा।
— राजबंधन तथा स्टालिन की प्रतिभागाथा, पृष्ठ 149 बर्गमन मुनि की उक्ति।

तानाशाही हो गई हो तो स्वाभाविक है कि पश्चिम के प्रजातान्त्रिक देशों का ध्यान इस ओर आकर्षित हो। सम्भवत विस्मय भी हो। और जब पश्चिम को यह पता चल जाए कि श्रीमती गांधी ने आपातस्थिति की घोषणा करके, चुनाव कानून संशोधन करके, संविधान संशोधित करके, उच्चकोटि के राजनैतिक नेताओं को पकड़कर बिना मुकदमा चलाए नजरबंद किया है और तुच्छ काल्पनिक कारणों से गैर प्रजातान्त्रिक तथा तानाशाही ढंग अपनाए हैं तो पश्चिम के प्रेस तथा नेताओं की चिन्ता और भी गहरी हो जाती है। 26 जून से जिन मिथ्या तथा गलत बातों का प्रचार श्रीमती गांधी कर रही हैं, उससे पश्चिमी देश गुमराह नहीं किए जा सकते, क्योंकि उनको वास्तविक स्थिति का पता है। लोकतन्त्र के दुश्मनों के अतिरिक्त कोई भी श्रीमती गांधी के उन्मत्त प्रचार से प्रभावित नहीं हो सकता।

श्रीमती गांधी इसको अच्छी तरह जानती हैं फिर भी बाहर जो भी उनकी इस कारवाई की निन्दा करेगा, उसका वह विरोध करेंगी। उन्होंने बी० बी० सी० को आज भारत विरोधी कहा है। स्पष्टतया श्रीमती गांधी भारत से प्रतिष्ठित नहीं हो सकती। उनके लिए भारत श्रीमती गांधी है। जो भी श्रीमती गांधी का विरोधी है, वह भारत का विरोधी है।

समय असमय श्रीमती गांधी कहती रही हैं 'मैंने अपना मिजाज भी नहीं खोया', चाहे उन्होंने अपना मिजाज खोया हो अथवा नहीं उन्होंने अपना धैर्य अवश्य खो दिया है।

क्लाईचवस्की की यह उक्ति श्रीमती गांधी के शासन पर पूरी तरह लागू होती है— जितना राज्य फूलता है उतनी जनता सिकुड़ती है। इसमें थोड़ा-सा संशोधन मैं करना चाहूंगा, वह है— राज्य के स्थान पर श्रीमती गांधी का कहा जाना। जिस ढंग से इन महीनों में वह बोल रही हैं यह स्पष्ट है कि उनका सिर फूल गया है। वह समझती हैं कि आपातस्थिति लागू करके, जनता तथा

प्रेस की स्वतन्त्रता दबाकर उन्होंने बहुत बडा काम किया है। उन्हें अपने आप म लज्जा आनी चाहिए कि केवल शक्ति हथिया रखने के कारण उन्होंने इतने भ्रष्ट तथा प्रतिक्रियावादी कदम उठाए हैं।

अक्टूबर, 16

मित्रो के साथ भेंट के सम्बन्ध म गृह-सचिव को लिखा है (प्रतिलिपि नीचे दी गई है)।

चडीगढ़
16 10 75

सेवा मे

गृह सचिव
भारत सरकार
नई दिल्ली I

महोदय

मुझे प्रसन्नता है कि नजरबद को अब सप्ताह म एक बार भेंट की अनुमति है और विशेष परिस्थितियो म उसके मित्र भी मिल सकते हैं।

जसाकि मैंने आपको पहले भी लिखा था कि यह स्थान मरे प्रदेश से बहुत दूर होने के कारण मेरे बधुओ के लिए सम्भव नही है कि प्रत्येक सप्ताह व मुझे मिल सकें। पिछल सप्ताह उदाहरण स्वरूप कोई भी मिलने नही आ पाया।

अत आपसे प्राथना है कि ऐसे विशेष मामले म (जिसमे सप्ताह म भेंट के अधिकार से मेरे वचित रहने का अनुमान है) एक मित्र को भेंट के लिए अनुमति दी जाए। इस उद्दश्य म मैं अपने कुछ मित्रो की सूची नीचे दे रहा हू (इनमे वे मित्र सम्मिलित हैं जो सक्रिय राजनीति म हैं)।

ये नाम[1] मैंने बिना किसी सदभ के दिए है। मुझे विश्वास है कि मेरे मित्र होने के नाते उन्हे किसी प्रकार की कठिनाई नही होगी।

आपका
—जयप्रकाश नारायण

अक्टूबर, 18

तानाशाही की ओर बढती हुई श्रीमती गाधी अब सरहद तक पहुच गई हैं। मीसा मे किए गए अतिम सशोधन से नजरबद का यह अधिकार भी छीन लिया है कि उसे बताया जाए कि किन कारणो से उसे नजरबद किया गया है और इससे भी अधिक भयानक बात है कि न्यायालय भी सरकार से इन कारणो को बताने के लिए नही कह सकते। वकील लोग सविधान के बुनियादी स्वरूप के सम्बन्ध मे तर्कादि करते रहे हैं जो सर्वोच्च न्यायालय के केशवानन्द भारती के मामले मे दिए गए निणय के अनुसार ससद द्वारा सविधान मे सशोधन करके काट छाट अथवा क्षति नही की जा सकती। जनता का यह अधिकार कि वह न्यायालय से यह जानने की प्राथना कर सके कि क्या उसे कानून के अनुसार दी गई स्वतत्रता या सरकार के सनक के कारण वचित तो नहीं किया गया है? इससे अधिक बढकर सविधान के स्वरूप की बुनियादी बात क्या हो सकती है! नागरिको के जो बुनियादी अधिकार शेष बच

1 (i) गगाशरणसिंह—पटना (ii) ए सी० सेन—नई दिल्ली (iii) मजित भट्टाचार्यजी—नई दिल्ली (iv) रामश्वर ठाकुर—नई दिल्ली (v) टी प्रब्राह्म—पटना (vi) जयनारायण सहाय—पटना (vii) एम० दास गुप्ता—वाराणसी (viii) कृष्णराज मेहता (ix) नरोत्तम शाह—बम्बई (x) कुसुम देशपांडे—पौनार वर्धा।

शामिल हैं। इसके साथ-साथ मिल्कियत तथा प्रबंध के स्वरूप में होने वाले मूल परिवर्तन भी शामिल हैं। यह आवश्यक है कि मिल्कियत तथा प्रबन्ध का सदैव अर्थ राज्य मिल्कियत और राज्यप्रबन्ध लिया जाता है। किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह में पंजीकृत या सहकारिता सोसाइटी के रूप में मिल्कियत राज्य के हाथ में निहित होनी चाहिए या इन सभी स्वरूपों को मिलाकर इसका एक स्वरूप हो सकता है। इसी तरह किसी स्थानीय समुदाय जैसे ग्राम सभा, ग्रामों के ग्रुप की सभा, प्रखण्ड सभा, जिला परिषद इत्यादि के रूप में भी मिल्कियत हो सकती है, या इस प्रकार की मिल्कियता को मिलाकर हो सकती है अर्थात् स्थानीय समुदाय और उपयुक्त बताए गए अन्य कथित स्वरूपों की मिल्कियत हो सकती है।

अक्टूबर, 26

प्रणव चटर्जी[1] (पटना) गोयल[2] (दिल्ली), दोनों वकील मुझे मिलने आए। यह बड़ी प्रसन्नता का दिन था। आज नज़रबंदी के चार महीने पूरे हो गए।

अक्टूबर, 29

पिछले दिन बहुत कठिनाई से बीते हैं। पेट के निचले भाग में लगातार दर्द रहा है। बहुत दुखी महसूस करता रहा। सभी प्रकार की जांच की गई किन्तु कुछ प्राप्त नहीं हुआ। अभी भी दर्द जारी है यद्यपि आगे से कम है। कब्ज है। त्रिफला अब कारगार नहीं हो

1 समाजवादी नेता और वकील।
2 डॉ० आर० गोयल—एक विख्यात वकील।

रहा। कल रात और आज प्रात क हुइ। भूख नही लगती। भोजन करने की बिल्कुल अनिच्छा है।

नवम्बर, 2

आज के दिन तक भी पट का दद जारी है। भूख नही लगती और भोजन करन की अनिच्छा। पेट साफ नही हुआ। 31 अक्टूबर की रात जिस कमरे मे था उसीमे फिर भेज दिया गया। इस लगातार दद के कारण बहुत दुखी तथा निराश हू। 3 4 दिन पहले उन्हाने निचली अतडियो का एक्स रे किया था (तब तक मैं बगल म था), बरियम मील अनीमा दिया गया। आज शायद सम्भवत वे ऊपर की अतडिया का एक्स रे लगे (मुह द्वारा बरियम मील)।

नवम्बर, 4

आज कुछ आराम है। पट का दद बहुत कम है। कल दीवाली थी और आज तारकुन्दे आए। मेरे केस की बाबत मुझे बताया। मोरारजी भाई के मित्रा को उनके साथ भेंट करने की अनुमति के सम्बध म श्रीमती पद्मा दसाई[1] याचिका पर बहुत कुछ निभर करता है ऐसा महसूस होता है। मित्रो को पत्र भी लिख जा सकत हैं। यदि मरा स्वास्थ्य ठीक रहा तो मैं कल लिखूगा।

नवम्बर, 5

कल मैंने सत्यव्रतजी की गीता पर टीका समाप्त की। मैंने

1 मोरारजी देसाई की पुत्र-वधू।

यह टीका पसन्द की है जो बहुत सरल तथा युक्तिसंगत है। बहुत-से स्थानों पर उन्होंने भी अरविन्द, लोकमान्य तिलक, विनोबा, डा० राधाकृष्णन और अन्य की टीकाओं का ज़िक्र किया है। अधिकांश गीता पर मैंने श्री अरविन्द की टीका सबसे अच्छी पाई है और कभी-कभी तिलक, विनोबा और अन्य की भी।

सत्यव्रतजी ने गीता के 18 अध्यायों को तीन भागों में बांटा है। पहले भाग में छः अध्याय हैं जिनकी विषयवस्तु कर्म है, दूसरे भाग में अगले छः अध्याय हैं जिनका सम्बन्ध भक्ति से है तथा अंतिम भाग में छः अध्याय हैं, जो ज्ञान की व्याख्या करते हैं, किन्तु उनका कहना है कि ये भाग (कर्म, भक्ति एवं ज्ञान) एक दूसरे से भिन्न नहीं हैं। तीन भागों में इनमें से एक पर एक भाग में विशेष बल दिया है यद्यपि शेष दोनों के सम्बन्ध में भी इसमें व्याख्या की गई है।

परिशिष्ट 1

21 जुलाई 1975
चंडीगढ़

प्रिय प्रधानमंत्री,

मैं आपकी प्रेस विज्ञप्तियों, भाषणों और छपे हुए मुलाकातों को पढ़कर हतप्रभ हूं (यह सच्चाई कि आपको हर रोज़ अपने कारनामों को न्यायसंगत साबित करने के लिए कुछ न कुछ कहना पड़ता है निश्चय ही यह आपका अपराध बोध है)। अखबार का मुंह बंद कर और सब प्रकार के विरोधों को रोककर आप बिना किसी आलोचना और प्रतिवाद भय के मनमानी असत्य बातें कहती रहती हैं। अगर आप यह सोचती हैं कि आप इसी तरह से अपने आपको जनता और विपक्ष की तनिक भी परवाह न कर स्वयं को न्यायसंगत साबित कर ले जाएंगी, तो यह आपकी दुर्भाग्यपूर्ण भूल है। अगर आपको इसमें तनिक भी संदेह है तो आप आपातस्थिति को उठाकर जनता को उनके मूलभूत अधिकार देकर अखबार को आज़ादी वापस देकर उन सबको जो और कोई अपराध न कर केवल राष्ट्रीय कार्यरत थे और जिन्हें आपने अकारण जेलों में बंद कर रखा है उन्हें रिहा कर इस सच्चाई की परीक्षा कर सकती हैं। महोदया नौ वर्ष उस जनता के लिए कोई

कम समय नही है जिस छठी बुद्धि प्राप्त है यह आपका अब तक भली भांति समझ चुकी है।

आपकी बातो के मुख्य मुद्दे जसा कि मैं समझ पाया हू ये हैं—(क) सरकार को गिराने की योजना थी (ख) कि एक व्यक्ति पुलिस और फौज म असतोष पदा करना चाह रहा था—यह *आपका मुख्य स्वर लगता है लेकिन कुछ साधारण स्वर भी हैं।* अक्सर आप कुछ आप्त वचन भी बोलती रहती हैं। उदाहरणाथ—जनतत्र की अपेक्षा राष्ट्र महत्त्वपूण है और भी कुछ इसी तरह।

जसे कि मैं ही मूल अभियोगी हू तो मैं पूरी *कथित* को साफ बयान करना चाहता हू। यह आपके लिए रुचिकर न हो, क्योकि आपका झूठ और अद्धसत्य बोलने की आदत पड चुकी है फिर भी कम से कम सच्चाई को कह देना तो आवश्यक है। सरकार गिराने की योजना के प्रसग म, जसाकि आप खुद भली भांति जानती हैं ऐसी कोई योजना नही थी। मुझे तथ्य कहने दीजिए।

भारत के सभी प्रदेशा म से केवल बिहार ही एक ऐसा प्रदेश था जहा जन आदोलन चल रहा था। परतु वहा भी मुख्यमत्री के कथनानुसार सारा आदोलन बहुत पहले ही ठडा पड गया था। पर सच्चाई यह थी जसाकि आपके गुप्तचरो द्वारा आपको भली भांति पता है वह आदोलन चारो तरफ फलता जा रहा था और उसम एक उफान आता जा रहा था। मेरी गिरफ्तारी तक गाव स प्रखड स्तर तक जनता सरकार गठित हो चुकी थी। आगे चलकर *यह प्रक्रिया जिले और प्रात स्तर तक पूरी होनी थी।* अगर आपको जनता सरकार के कायक्रमो को देखने, समझने की चिंता होती तो आपको पता चलता कि इसके सारे कायक्रम रचनात्मक थे। जसेकि वितरण प्रबध म सुधार निचली तह म भ्रष्टाचार को रोकना, भूमि सुधार के नियमो और कानूनो को लागू करना आपसी समझौतो से झगडो का निपटारा,

हरिजन के प्रति न्यायसगत व्यवहार, तिलक दहेज जसी सामाजिक कुरीतियों का दूर करना ग्रादि। इन सारे काय क्रमो म चाहे कोई कितनी कल्पना क्या न लगाए, कोई यह नहीं कह सकता कि य कायक्रम राष्ट्र विरोधी थे। केवल उन्ही स्थाना पर, जहा जनता सरकार पूण रूप से प्रतिष्ठित हो चुकी थी, वहीं कर न देने का कायक्रम चलाया जाने को था। ग्रादोलन जिन दिनो पूरी तजो पर था उन दिना शहरी इलाको म कुछ दिना के लिए धरना, सत्याग्रह करके सरकार के काम को ठप्प कर देने का प्रयत्न किया गया था। पटना मे जब भी विधान सभा की बठक होती, ता विधायको से त्यागपत्र के लिए ग्राग्रह किया जाता, ग्रौर उन्हें विधान सभा मे जाने से शान्तिपूण ढग से रोका जाता। य सार कायक्रम सिविल नाफर्मानी के ही ग्रनुरूप थे। इसके लिए हजारो स्त्री-पुरुष पूरे प्रात म गिरफ्तार किए गए।

ग्रगर ये सब बिहार सरकार को गिराने का प्रयत्न था, तो निश्चय ही यह वसा ही प्रयत्न था जसाकि भारतीय स्वतत्रता सग्राम के दिनो मे ग्रग्रेजी हुकूमत को ठप्प करने क लिए सत्या ग्रह ग्रौर सिविल नाफर्मानी' किया जाता था। पर वह ब्रिटिश हुकूमत केवल शक्ति से प्रतिष्ठित थी जबकि बिहार सरकार ग्रौर उसके विधायक दोनों सविधान द्वारा प्रतिष्ठित ग्रग हैं। जनता द्वारा निर्वाचित विधायका ग्रौर बनी हुई सरकार को निकालने का किसको ग्रधिकार है? यह ग्रापका प्रिय प्रश्न है। लेकिन तमाम ग्रधिकारी व्यक्तियो ग्रौर सविधान के ग्रधिकारी वकीलो द्वारा ग्रनेक बार उत्तर दिया जा चुका है। उत्तर यह है कि लोकतत्र म जनता को यह ग्रधिकार है कि वह भ्रष्ट सरकार से त्यागपत्र की माग करे जो सुचारु रूप से शासन न चला सकती हो। ग्रौर ग्रगर ऐसी सरकार के समथन म कोइ कानून हो तो उस भी रद्द किया जा सके, ताकि जनता दुबारा बहतर प्रतिनिधि चुन सके।

पर, इस प्रसग म यह बस निश्चित किया जा सकता है कि जनता क्या चाहती है ? सहज जनतान्त्रिक ढग से बिहार म उतने बडे-बडे जन प्रदर्शन, पटना का वह जुलूस, हजारो मतदान केन्द्रो म पूरे प्रान्त म बठकें, तीन दिन का वह सम्पूर्ण बिहार बन्द 4 नवम्बर की वह अविस्मरणीय घटना और 18 नवम्बर को गाधी मदान की वह अभूतपूर्व जन-सभा—य सब जन इच्छा के काफी बडे सुबूत थ। इस सम्बन्ध म बिहार सरकार और काग्रेस को अपने पक्ष म क्या दिखाना है ? 16 नवम्बर की वह दुर्भाग्यपूर्ण जवाबी कार्यवाही जो बरुआ के दिमाग की उपज थी और जिसके ऊपर विश्वस्त सूत्रो के अनुसार कुल 60 लाख रुपय खच किए गए। परन्तु यदि ये सब अन्तिम सुबूत नहीं हैं तो मैं बार-बार प्रजा स जनमत लेने की बात दोहरा रहा था, पर आप जनता क सामने आने से भयभीत थी।

बिहार आदोलन के इस प्रसग म मुझे एक और महत्त्वपूर्ण बात कहनी है, जो इस प्रकार के आदोलन की प्रकृति पर प्रकाश डालती है। बिहार के छात्रो न इस आदोलन को पारम्परिक ढग स नही शुरू किया। वे सबसे पहल अपने माग पत्रो को लकर मुख्यमत्री और शिक्षामत्री से मिल। अनेक बार मिल। परन्तु दुर्भाग्य यह है कि भ्रष्ट बिहार सरकार ने विद्यार्थियो की उन जायज मागो को गम्भीरतापूर्ण ढग से नही लिया। तब उन छात्रो ने विधान सभा का घेराव किया। उस दिन की घटनाओ ने ही बिहार आदोलन का सूत्रपात किया। फिर भी तब छात्रो न न तो मन्त्रिमडल और विधानसभा भग करने की माग की। यह माग तो अनेक सप्ताहो के बाद, जिसक बीच तमाम गोली काड, लाठी चाज और अन्धाधुन्ध गिरफ्तारिया हुई तब छात्र सघर्ष समिति न विवश होकर के उस माग को अपनी माग म सम्मिलित किया। स्पष्ट ऐसी स्थिति पर पहुचकर ही उस माग का पकडा गया। इस तरह बिहार म सरकार को मिल बठकर आपस म समझौता

करने का पूरा अवसर छात्रों ने दिया था। विद्यार्थियों की कोई भी मांग ऐसी नहीं थी, जो यामसगत न हो और जिसे आपसी समझौते के द्वारा न पूरा किया जा सकता हो, पर बिहार सरकार ने स्वयं संघर्ष का रास्ता बेहतर समझा। और अभूतपूर्व दमन का फैसला लिया। ऐसा ही उत्तरप्रदेश में हुआ। सरकार ने आपसी समझौते के रास्ते को बन्द किया और आपसी बातचीत को भी निरर्थक समझा। केवल दमनकारी मार्ग चुना। अगर ऐसा न किया गया होता, तो कोई ऐसा आंदोलन होता ही नहीं।

मैंने इस समस्या पर काफी विचार किया है। सरकार ने क्या नहीं बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से व्यवहार किया? मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि असली समस्या भ्रष्टाचार की ही थी। हुकूमत भ्रष्टाचार निवारण में पूर्णतः असफल रही। विशेषकर ऊंचाई पर, और खास कर मंत्रिमंडल स्तर के भ्रष्टाचार को दूर करने में जबकि भ्रष्टाचार निवारण ही इस आंदोलन का मुख्य मुद्दा था। विशेषतः सरकार और प्रशासन का भ्रष्टाचार। बिहार प्रदेश के अलावा भारत के किसी भाग में ऐसा आन्दोलन नहीं हुआ। यद्यपि उत्तरप्रदेश में सत्याग्रह का कार्यक्रम अप्रैल माह में शुरू हुआ पर जन आंदोलन का रूप यह नहीं ग्रहण कर सका। कुछ अन्य प्रान्तों में संघर्ष समितियां बनी पर कहीं भी अन्यत्र जन आंदोलन की सम्भावना नहीं बन सकी। और जैसे जैसे लोक सभा चुनाव के दिन नजदीक आते गए प्रतिपक्षी दलों का ध्यान निर्वाचन की ओर अधिक जाने लगा। उनके लिए सिविल नाफर्मानी जैसा संघर्ष गौण होता गया।

इस प्रकार सरकार गिराने की योजना जो कि आपकी कल्पना का ही एक चमत्कार है—एक तर्क मात्र है। आपकी सर्वसत्ताधारी कार्यवाही का। लेकिन एक क्षण के लिए कल्पना कीजिए यदि ऐसी पूर्व योजना होती, तो क्या आप सचमुच पूरी ईमानदारी से यह विश्वास करती हैं कि आपके पिछले साथी भूतपूर्व उपप्रधान

मत्री (मोरारजी दसाई), काग्रस वकिंग कमेटी के सन्स्य श्री चन्द्रशखर भी इसके अग होत ? अगर नही तो आपन उन्हे श्रौर उन जस तमाम लोगा को क्यो इस तरह गिरफ्तार किया ?

नही प्रिय प्रधानमत्रीजी, सरकार को गिराने की ऐसी कोई योजना नही थी। अगर कोई ऐसी योजना थी तो वह सीधी सरल और अत्यन्त कम समय की योजना थी। जब तक कि उच्चतम न्यायालय आपकी चुनाव याचिका पर अपना निणय नही दे दती। यह वही योजना थी, जो 25 जून को रामलीला मैदान मे नानाजी देशमुख द्वारा घोषित की गई थी। कायक्रम यह था कि बहुत थोडे से चुने हुए लोग आपके निवास स्थान के सामने और उसके आस पास इस बात के समथन म सत्याग्रह करेंगे कि जब तक उच्चतम न्यायालय का फसला नही हो जाता, आप सत्ता से बाहर रह । दिल्ली मे यह कायक्रम केवल सात दिनो तक ही चलने को था । उसके बाद यह कायक्रम प्रदेशो म चलाया जाता और जसा-कि मैंने अभी कहा यह केवल तभी तक चलता जब तक कि उच्चतम न्यायालय अपना फसला न दे देता । मुझे नही पता कि इसम भयकर अथवा राष्ट्रद्रोह का एसा तत्त्व क्या था ? प्रजातत्र मे जनता को सिविल नाफर्मानी का बुनियादी अधिकार है। जहा, जब उनकी न्यायसगत मागा की पूर्ति के सभी रास्ते बन्द हो जाए । कहना न होगा कि सत्याग्रही जानबूझकर कानून तोडने का दड सहज भाव स स्वीकार करता है। गाधीजी द्वारा लोकतत्र म जोडा गया यह एक नया आयाम है । यह कसा दुर्भाग्य है कि गाधी के ही भारत म इसकी अवना की जाए ! यह उल्लेखनीय है और न्यात य है कि अगर आप सत्ता स इस कदर चिपकी नही होती तो प्रतिपक्ष द्वारा किया गया सत्याग्रह का यह कायक्रम न सोचा गया होता । पर आपने ऐसा नहा किया । अपन पिटठुओ और खरीदे हुए लोगो स अपन दरवाजे पर रलिया और प्रदशन आयोजित कराए । और उनसे यह कहलवान की साजिश की कि

आप त्यागपत्र न दें। आपने इन रैलियों के समक्ष भाषण दिए और ऐसे तमाम अर्थहीन तर्क दिए मात्र अपने को सही और न्यायसंगत ठहराने के लिए, साथ ही प्रतिपक्ष पर झूठे आरोप मढ़ने के लिए। आपके निवास के सामने इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज का पुतला जलाया गया और शहर की दीवारों पर ऐसे तमाम पोस्टर्स लगाए गए जिसमें यह कहा गया कि जज और सी० आई० ए० के बीच यह कोई जोड़-गांठ थी। जब ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं प्रतिदिन घट रही थीं, तो प्रतिपक्ष के पास इसके अलावा और कोई चारा नहीं था कि आपकी इस बदमाशी को मुंहतोड़ जवाब दिया जाए। और उसने इसके लिए क्या फैसला किया था? किसी प्रकार की गुंडागर्दी नहीं, बल्कि स्वनियन्त्रित सत्याग्रह के ज़रिये।

वह यह योजना थी। कोई ऐसी काल्पनिक योजना नहीं थी सरकार गिराने की जिसने कि झूठ मूठ आपमें यह प्रतिक्रिया पैदा की। जिसमें जन स्वतन्त्रता नष्ट हुई और जिससे जनतंत्र को इतना गहरा आघात पहुंचा।

और प्रेस की आज़ादी क्यों छीनी गई? इसलिए नहीं कि भारतीय प्रेस गैरज़िम्मेदार, बेईमान व सरकार विरोधी था। सचमुच ऐसी परिस्थितियों में दुनिया का कोई भी प्रेस इतना ज़िम्मेदार न्यायसंगत नहीं था, जैसाकि भारतीय प्रेस। दरअसल आपके गुस्से का कारण यह था कि आपके त्यागपत्र और हाईकोर्ट के फैसले को लेकर कुछ समाचारपत्रों ने ऐसी आवाज़ उठाई जो आपके लिए रुचिकर नहीं थी। और उच्चतम न्यायालय के फैसले के अवसर पर सारे समाचारपत्रों ने यहां तक कि ढुलमुल टाइम्स आफ इंडिया बहुत तर्कसंगत और प्रभावपूर्ण सम्पादकीय में जब यह लिखा कि प्रेस का गला न घोंटा जाए, तो आप इसे न पचा सकीं। इसी प्रतिक्रिया ने भारतीय समाचारपत्रों का मुंह बन्द किया और उसपर आपका भयंकर आघात हुआ। यह

स्वार्थियों और आत्माहीन अवसरवादियों और भी दूसरों (अमथा) स बनी एक असीमित दुर्भाग्य म कांग्रेस बन गई है कभी महत्त्व पूर्ण काम नहीं कर सकती (पूरी कांग्रेस ऐसी नहीं कुछ अपवाद स्वरूप भी हैं। जगति म सोग जो दल की सम्स्यना म शामिल कर लिए गए हैं सावि शासकताधारा के मनुसार दल के भीतर रह कर आलोचना करना सम्भव नहीं रह जाए)। इस विषय पर बहुत बड़ी मात्रा में प्रचार तथ कागजी कार्यवाही करन की कोशिश की जाएगी, पर वास्तविक रूप म स्थिति बदल नहीं सकेगी। गरीबों की स्थिति—और जिनकी देन म बहुत बड़ी मात्रा है—पुजिन्ना (बीते हुए) वर्षों म और भी बदतर हुई है। इतना ही बहुत होगा अगर स्थिति को रोका जा सके। लेकिन उसके लिए पूरे राजनीतिक और आर्थिक ढांचे का परिवर्तन करना होगा।

मैंने उपर्युक्त बातें बहुत स्पष्ट और बिना किसी को ठेस पहुँचाने के उद्देश्य स लिखी हैं। मैंने इतना आपका अपमान अथवा बातों म फसान के उद्देश्य स नहीं कही हैं। न ही कमजोरी को छिपाने के लिए कही हैं। न ही जो मेरे स्वास्थ्य की चिन्ता की गई है उसके प्रति कोई अवज्ञा दिखाने के लिए कही हैं। बल्कि आपके सामने उन नंगी सच्चाइयों को प्रस्तुत करने के लिए कही हैं जिन आपने अपने झूठ द्वारा छिपाने की कोशिश की है। इस दुखद दायित्व को पूरा कर अन्त म मैं क्या आपसे बिना लेते हुए कुछ सलाह के शब्द आपसे कह सकता हूँ? आपको पता है मैं एक बूढ़ा हूँ। मेरे जीवन का कम पूरा हो चुका है और अब न जाने के बाद मुझे ऐसा कुछ नहीं है, जिसके लिए मैं जीवित हूँ। मेरा भाई और भतीजा और उनका परिवार और मेरी छोटी बहन—बड़ी बहन कुछ साल हुए, दिवंगत हो चुकी है—उनके अपने बच्चे और बच्चियां हैं। मैंने अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद जीवन को देश के काम में लगा दिया है, जिसके बदले मैंने कभी कुछ नहीं चाहा है। अतएव, मैं आपके बंदीगृह मे एक बन्दी के रूप म संतुष्ट हूँ।

क्या आप ऐसे मनुष्य की सलाह मानेंगी ? कृपया आप उस बुनियाद को मत नष्ट कीजिए जिसे राष्ट्रपिता गांधी और आपके महान् पिता ने इतने परिश्रम से बनाया था। जिस रास्ते को आपने चुना है उसमें केवल दुख और घोर निराशा है। आपको उत्तराधिकार के रूप में एक महान परम्परा, महत्त्वपूर्ण मूल्य और प्रजातंत्र के तत्त्व प्राप्त हुए हैं। अपने पीछे इनका दुखपूर्ण अवशेष मत छोड़िए। इनको फिर से जोड़ने में बहुत समय लगेगा। मुझे पूर्ण विश्वास है, यहां के लोग जिन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ युद्ध कर उसे परास्त किया है, वे आपकी तानाशाही और अपमान को बर्दाश्त नहीं कर सकते। मनुष्य की चेतना—उसे आप चाहे जितना नष्ट करना चाहें, कभी बर्बाद नहीं हो सकती। अपनी व्यक्तिगत तानाशाही को लागू करने के लिए आपने उन मूल्यों को बहुत गहरे दफनाना चाहा है पर वह मानव चेतना अपनी कब्र से फिर से जगेगी। यहां तक कि रूस में भी धीरे धीरे जग रही है।

आपने सामाजिक लोकतन्त्र की बात की है। दिमाग में कितनी खूबसूरत तस्वीर इन शब्दों से बनती है, पर आपने पूर्वी और मध्य यूरोप में देखा है कि वह सच्चाई कितनी बदशक्ल है। नंगी तानाशाही और अन्त में रूस की प्रभुसत्ता। कृपया मेहरबानी कर भारत को उस भयंकर नियति की ओर मत ठेलिए।

और मैं क्या पूछ सकता हूं कि ये सब अमानवीय तौर तरीके आखिर किसलिए ? क्या आपके 20 सूत्री कार्यक्रम के लिए ? पर किसने आपके उन 10 सूत्री कार्यक्रमों को फलित होने से रोका ? वे सारे असन्तोष विरोध और सत्याग्रह इसी कारण से तो थे कि आपने उन कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने के लिए कुछ भी तो नहीं किया। आपके शासन द्वारा दुख और दारिद्रय के बोझ के नीचे युवा शक्ति जिस तरह कराह रही थी उसीको हल्का करने के लिए तो यह आंदोलन हुआ। इसीके लिए चन्द्रशेखर, मोहनधारिया कृष्णकांत और उनके दोस्त बार बार इतना सब

वहुत रह है, जिसके लिए उन्हें ग्रनत दंडित किया गया।

ग्रापने लोकतन्त्र से दूर जाने की बात कही है। पर क्या वह विरोधी पक्ष के कारण या मेरे कारण एसा हुआ है? दरअसल प्रजातन्त्र से दूर हटने के पीछे आपका संकल्पहीन व्यक्तित्व जिम्मेदार है जिसमें न कोई बल था, न कोई दिशा थी। ग्रापने हमेशा तभी तेजी से नाटकीय रूप में सख्त कदम लिए हैं जब ग्रापपर कोई निजी संकट ग्राया है। ग्रौर जब ग्रापकी वह निजी सत्ता सुरक्षित हुई है तो ग्रापने सदैव दूर हटना शुरू किया है। प्रिय इंदिराजी, मेहरबानी करके ग्रपने ग्रापको इस राष्ट्र का प्रतिरूप मत मानिए। ग्राप ग्रमर नहीं हैं पर यह देश ग्रमर है। ग्रापने प्रतिपक्ष को ग्रौर मुझे हर तरह की बदमानियों से लाछित करना चाहा है। पर, मैं ग्रापको विश्वास दिलाता हूं कि यदि ग्राप सही काम करती हैं उदाहरण के लिए ग्रापका 20-सूत्री कार्यक्रम मंत्रिमण्डल के स्तर से भ्रष्टाचार का निवारण चुनाव प्रणाली में सुधार ग्रादि तो ग्राप पूरे प्रतिपक्ष का ग्रपने विश्वास में लीजिए, उनके सुझावों को मानिए। निश्चय ही ग्रापको सबका सहयोग ग्रौर समर्थन प्राप्त होगा। इसके लिए ग्राप प्रजातंत्र का विनाश मत कीजिए। निर्णय ग्रापके हाथ में है ग्रौर फैसला ग्रापको ही लेना है।

विदा के इन शब्दों के साथ मैं ग्रापसे ग्रलग होता हूं। ईश्वर ग्रापका साथ दे!

—जयप्रकाश

परिशिष्ट 2

2 सितम्बर 1975

(प्रधानमंत्री को लिखे पत्र का मसौदा जिसे भेजा भी जा सकता है और नहीं भी, जिसका फैसला मैं बाद में करूंगा।[1])

प्रिय प्रधानमंत्री,

काफी संकोच के बाद मैं इस पत्र को दुबारा लिख रहा हूं। मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूं कि मैं अपने देश के बारे में अत्यधिक चिन्तित हूं। भारतीय स्वतंत्रता के पितृजनों ने बड़ी दूरदर्शिता के साथ यहां लोकतान्त्रिक प्रभुतासम्पन्न गणतंत्र की स्थापना की थी। इन तीनों शब्दों में लोकतंत्र सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। एक देश, जिसने अभी अभी युद्ध कर अपनी आजादी हासिल की वह प्रभुतासम्पन्न नहीं हो सकता। वहां किसी प्रकार की राजशाही की स्थापना का भी सवाल नहीं है। देश को स्वभावतः प्रभुतासम्पन्न होना है और इसे सहज ही गणतान्त्रिक होना है। पर, इसके लिए सहज ही उसे लोकतान्त्रिक होना है ऐसी शर्त क्यों? संसार में ऐसे तमाम प्रभुतासम्पन्न गणतंत्र हैं जो लोकतान्त्रिक नहीं हैं।

1. यह पत्र प्रधानमंत्री को नहीं भेजा गया।

प्रभुतासम्पन्नता और गणतन्त्रता के बीच कोई विकल्प नहीं है। उस परिस्थिति में कोई भी देश न प्रभुतासम्पन्न हो सकता है न गणतान्त्रिक हो सकता है।

पर, प्रभुतासम्पन्न गणतन्त्र अधिनायकवादी हो सकता है—वह अधिनायकवाद किसी व्यक्ति का हो, चाहे किसी पार्टी अथवा सैन्य शक्ति का। यह एक विशेष समूह का राजतन्त्र हो सकता है, या फिर यह एक सीमित अधिकारों का गणतन्त्र हो सकता है, किन्हीं पढ़े लिखों तक सीमित (पढ़े लिखों का अर्थ कई अर्थों में) पर हमारे पितृजनों ने वयस्क मताधिकार पर आधारित संसदीय लोकतन्त्र को चुना। यह एक बहुत बड़ा कदम था और इसने पूरे संसार से आदर और प्रशंसा प्राप्त की। इसके लिए—

जैसाकि मैंने अन्यत्र लिखा है संसदीय लोकतन्त्र पर आधारित वयस्क मताधिकार का सत्य इसलिए संभव हुआ कि इसके पीछे महात्मा गांधी द्वारा संचालित भारतीय स्वतन्त्रता जैसा संग्राम, जिसमें भारत की सारी जनता नीचे से ऊपर तक समान रूप से सम्मिलित हुई थी, घटित हुआ। करोड़ों लोगों ने उस समय के जुलूसों, सत्याग्रहों, हड़तालों में भाग लिया और लाखों लोग जेल गए। इस जन आधार जन-चेतना जन-सहयोग के कारण ही वयस्क मताधिकार पर आधारित लोकतन्त्र यहां संभव हुआ और एक सच्चाई के रूप में हमारे सामने प्रकट हुआ। इसी जनसहयोग और लोक चेतना के ही कारण 25 जून, 1975 तक बावजूद अनेक अकाल युद्ध संकट, कुशिक्षा, बेरोज़गारी और दरिद्रता, यहां का लोकतन्त्र जीवित रहा।

यह लोकतन्त्र केवल एक राजनीतिक प्रस्ताव या विचार मात्र नहीं था बल्कि एक यथार्थ था। अगर भारतवर्ष में इस प्रकार स्वतन्त्रता संग्राम न लड़ा गया होता तो इस प्रकार की लोकतान्त्रिक व्यवस्था यहां संभव न थी। बहुत संभव था कि तब यहां तानाशाही होती। अब 25 वर्षों से अधिक समय के बाद पहली बार प्रजातान्त्रिक

प्रभुतासम्पन्न संविधान को गम्भीर चोट मिली है (माना है कि इसका पूर्ण नाश नहीं हुआ है)। यह मेरे लिए सबसे अधिक चिन्ता का विषय है और इसी चिन्ता ने मुझे इस पत्र को लिखने के लिए विवश किया है।

आपातस्थिति की घोषणा और उसके बाद जितने भी कुकृत्य हुए हैं, उन सबके औचित्य के लिए केवल आन्तरिक सुरक्षा की बात बार-बार कही गई है। प्रिय प्रधानमंत्री जी जहां तक आन्तरिक अशान्ति और असुरक्षा का प्रश्न है मैं आप से हर प्रान्त का उदाहरण देकर निवेदन करूं—जम्मू और कश्मीर में केवल कानून और शान्ति की ही समस्या थी, जिसे सुलझाने में शेख साहब पर्याप्त थे, पंजाब में ऐसा कोई संकट नहीं था। हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, गुजरात, पश्चिमी बंगाल, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, उड़ीसा, आसाम, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल में भी आंतरिक असुरक्षा का ऐसा कोई संकट नहीं था। सुदूर पूर्वी क्षेत्र नागालैंड और अन्य स्थानों पर जरूर कुछ अशान्ति थी पर सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार उसे दबाया जा चुका था। जैसा भी हो, वहां के राज्यपाल के पास अतिरिक्त शक्ति थी और उनकी सहायता में सेना सदैव मौजूद रहती थी।

आप कह सकती हैं कि केवल बिहार में ऐसा आन्तरिक संकट ही नहीं था, बल्कि पूर्ण अशान्ति थी। इस विषय पर आपमें और मुझमें मतभेद हो सकता है और इस विषय पर मैं आपसे यहां वाद-विवाद नहीं करना चाहता। पर अगर हम आपकी ही बात मान लें कि बिहार में ऐसा था तो उसके लिए पूरे देश को क्यों इस तरह दंडित किया गया? अगर आप चाहतीं, तो केवल बिहार पर आपातस्थिति लागू कर सकती थीं। ऐसा ब्रिटिश हुकूमत किया करती थी कि जिस प्रान्त विशेष में विप्लव आपदाओं को तीव्र करते होते वहां पर विशेष कानून और अधिनियम लागू कर देते, ताकि उस प्रांत विप्लव की लहर दूसरे प्रांतों में न फैल सके। सर,

प्रभुतासम्पन्नता और गणतन्त्रता के बीच कोई विकल्प नही है। उस परिस्थिति म कोई भी देश न प्रभुतासम्पन्न हो सकता है न गणतांत्रिक हो सकता है।

पर, प्रभुतासम्पन्न गणतन्त्र अधिनायकवादी हो सकता है— वह अधिनायकवाद किसी व्यक्ति का हो, चाहे किसी पार्टी अथवा सन्य शक्ति का। यह एक विशेष समूह का राजतन्त्र हो सकता है, या फिर यह एक सीमित अधिकारा का गणतन्त्र हो सकता है, किन्ही पढे लिखो तक सीमित (पढे लिखो का अथ कई अर्थों म) पर हमारे पितृजनो ने वयस्क मताधिकार पर आधारित ससदीय लोकतन्त्र को चुना। यह एक बहुत बडा कदम था और इसने पूरे ससार से आदर और प्रशसा प्राप्त की। इसके लिए—

जसाकि मैंने अन्यत्र लिखा है ससदीय लोकतन्त्र पर आधारित वयस्क मताधिकार का सत्य इसलिए सभव हुआ कि इसके पीछे महात्मा गाधी द्वारा सचालित भारतीय स्वतन्त्रता जैसा सग्राम जिसम भारत की सारी जनता नीचे से ऊपर तक समान रूप से सम्मिलित हुई थी, घटित हुआ। करोडो लोगा ने उस समय के जुलूसो सत्याग्रहो, हडतालो मे भाग लिया और लाखो लोग जेल गए। इस जन आधार जन-चेतना जन-सहयोग के कारण ही वयस्क मताधिकार पर आधारित लोकतन्त्र यहा सभव हुआ और एक सच्चाई के रूप मे हमारे सामने प्रकट हुआ। इसी जनसहयोग और लोक चेतना के ही कारण 25 जून, 1975 तक बावजूद अनक अकाल युद्ध सकट कुशिक्षा, बेरोजगारी और दरिद्रता, यहा का लोकतन्त्र जीवित रहा।

यह लोकतन्त्र केवल एक राजनीतिक प्रस्ताव या विचार मात्र नही था बल्कि एक यथाथ था। अगर भारतवष मे इस प्रकार स्वतन्त्रता सग्राम न लडा गया होता, तो इस प्रकार की लोकतान्त्रिक व्यवस्था यहा सभव न थी। बहुत सभव था कि तब यहा तानाशाही होती। अब 25 वर्षों से अधिक समय के बाद पहली बार प्रजातान्त्रिक

प्रभुतासपन्न सविधान को गम्भीर चोट मिली है (आशा है कि इसका पूर्ण नाश नही हुआ है)। यह मेरे लिए सबसे अधिक चिन्ता का विषय है और इसी चिन्ता ने मुझे इस पत्र को लिखने के लिए विवश किया है।

- आपातस्थिति की घोषणा और उसके बाद जितने भी कुकृत्य हुए हैं, उन सबके औचित्य के लिए केवल आन्तरिक सुरक्षा की बात बार-बार कही गई है। प्रिय प्रधानमंत्री जी, जहा तक आन्तरिक अशान्ति और असुरक्षा का प्रश्न है, मैं आप से हर प्रान्त का उदाहरण देकर निवेदन करू—जम्मू और कश्मीर म केवल कानून और शान्ति की ही समस्या थी, जिसे सुलझाने म शेख साहब पर्याप्त थे, पजाब म ऐसा कोई सकट नही था। हरियाणा, चडीगढ दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, गुजरात, पश्चिमी बगाल, महाराष्ट्र, आध्रप्रदेश उडीसा, आसाम, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल मे भी आतरिक असुरक्षा का ऐसा कोई सकट नही था। सुदूर पूर्वी क्षेत्र नागालड और अन्य स्थानो पर जरूर कुछ अशान्ति थी पर सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार उसे दबाया जा चुका था। जैसा भी हो, वहा के राज्यपाल के पास अतिरिक्त शक्ति थी और उनकी सहायता म सेना सदव मौजूद रहती थी।

आप कह सकती हैं कि केवल बिहार मे ऐसा आन्तरिक सकट ही नही था, बल्कि पूर्ण अशान्ति थी। इस विषय पर आपमे और मुझम मतभेद हो सकता है और इस विषय पर मैं आपसे यहा वादविवाद नही करना चाहता। पर अगर हम आपकी ही बात मान लें कि बिहार मे ऐसा था तो उसके लिए पूरे देश को क्यो इस तरह दडित किया गया? अगर आप चाहती, तो केवल बिहार पर आपातस्थिति लागू कर सकती थी। ऐसा ब्रिटिश हुकूमत किया करती थी कि जिस प्रात विशेष मे सिविल नाफर्मानी की तीव्र लहर होती वहा के विशेष कानून और अधिनियम लागू कर देते ताकि उस प्रांत विशेष की लहर दूसरे प्रातो म न फैल सके। खैर,

ये सब पहले की बातें हैं। सही या गलत ढग से पूरे देश पर आपात स्थिति लागू कर दी गई, पर आज की क्या स्थिति है ? आपने और आपके सहयोगियो ने स्वय अनेक बार ऐसा कहा है कि अब चारो तरफ शान्ति ही शान्ति है। अब कही भी अशान्ति का कोई चिह्न नही है। ऐसा मुझे अखबारो से पढकर पता चलता है। अगर यह सच है तो क्यो हजारो बेकसूर लोग, जेलो मे अब तक बन्द हैं ? उनका क्या अपराध है ? क्या अब तक मोरारजी भाई नजर बन्द हैं ? क्यो कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्य चन्द्रशेखर अब तक जेल मे हैं ? कांग्रेस ससदीय दल के मन्त्री रामधन क्यो अब तक जेल मे हैं ? ऐसे हजारो लोग क्यों अब तक जेल मे बन्द हैं ? अगर उनपर कोई अभियोग है तो न्यायालय मे पहले उसपर कार्यवाही होनी चाहिए और न्यायालय से उन पर फैसला लेना चाहिए। इस आपातस्थिति ने नागरिक स्वतन्त्रता का गला क्यो घोंट दिया ? अखबारो की आजादी का हनन और ऐसे अनेक कुकृत्य क्यो ? क्या आप भयभीत हैं कि एक बार भी आपातस्थिति ढीली हुई तो फिर से आदोलन की आग मे घी पड जाएगा ? मेरा विश्वास है आप परछाइयो से भयभीत हैं। आप और आपकी पार्टी क्यो इस भयकर भूल का दायित्व अपने ऊपर लिए हुए है ? क्या आप ऐसा सोचती हैं कि इससे आपका और आपकी पार्टी का कोई लाभ है ? आप शायद जनता को डराए रखना चाहती हैं। उन्हें घुटने टेकने की नसीहत देना चाहती हैं। पर इतिहास गवाह है यह कभी सफल नही होता। क्रिया और प्रतिक्रिया दोनों समान रूप से होती हैं यह उसूल विज्ञान और राजनीति दोनो मे समान है। अखबार की एक भेंट मे खास कर विदेशी समाचारपत्र के माध्यम से आपने आम चुनाव करने की बात की है, पर वह कब होगा, आपने उसका समय बताना नामजूर किया है। एक भेंट मे आपने कहा है कि आप विपक्षी दल के नेताओ के रुख को देख रही है और आप चाहती हैं कि उनके विचारो मे परिवर्तन हो।

क्या आप चाहती हैं कि प्रतिपक्ष के रूप में अब काम ही न करें? निस्सन्देह आप ऐसी मूर्खता की बात नहीं चाहती होंगी। फिर आप क्या चाहती हैं? आप शायद उनसे सतुलन की अपेक्षा करती हैं। पर प्रिय महोदया, ऐसे किसी आचरण का उदाहरण आपने स्वयं दिया है? आपने कैसे कैसे भयंकर आरोप उन प्रतिपक्षियों और मुझपर लगाए हैं कि आपके प्रति विरोध प्रकट करने का आशय है कि हम विदेशी शक्ति के इशारे पर कार्यरत हैं। आपको कई बार इसकी चुनौती दी गई है कि आप जो कहती हैं उसके लिए सबूत दें, पर अब तक आपने ऐसा कोई प्रमाण नहीं दिया है और अक्सर जब भी मौका मिलता है आप उसी तरह की निराधार बातें कहने से बाज नहीं आतीं। ईश्वर जाने, आप किसे इस तरह धोखा दे रही हैं! और मजा यह कि आपके सहयोगियों और आपकी पार्टी में ऐसे कई लोग हैं जो सी० आई० ए० और रूसी चमचे के रूप में कुख्यात हैं। मुझे पता है कि मेरी इस बात को रूस की आलोचना के रूप में ले लिया जाएगा और पूरी बात के लिए प्रसंग को बुनियाद से हटाकर दूसरी तरफ मोड़ दिया जाएगा। इसे आप बेहतर जानती हैं। मेरा विश्वास है कि भारत में मेरी तरह और कोई नहीं है जो रूस का ऐसा मित्र हो। पर मित्रता कभी गुलामी नहीं हो सकती। भारत को कभी भी किसी अन्य राष्ट्र का उपग्रह नहीं होना चाहिए। यह हमारे राष्ट्रीय हित में है कि हम रूस से मित्रता रखें, पर इस बात के लिए सावधान रहें कि हम किसी तरह से भी रूस के हाथ बिक न जाएं। कभी कभी मैं डर जाता हूं कि हम जाने अनजाने उनके इस अधिकार में आ चुके हैं। रूस की यह कोशिश रही है कि इस देश में उन्हींके समान एक तानाशाही व्यवस्था कायम हो। पिछले दिनों जितने भी जनतंत्र विरोधी काम हुए हैं, वे इसीके सुबूत हैं। प्रिय प्रधानमंत्रीजी, मैं फिर से दोहराता हूं कि आज पूरे भारतवर्ष में कहीं भी कोई आन्तरिक असुरक्षा का वातावरण नहीं है। यहां तक कि बिहार में

भी नही । सिविल नाफर्मानी का आदोलन आन्तरिक असुरक्षा का भाव नही । मैं यह कहना चाहता हू कि कि पटना म जितनी भी हिंसारमक कायवाही हुई है उसका मेरे 'बिहार आदोलन' से कोई भी सम्बन्ध नहीं । दु ख, विनाश, बीमारी, भूख और अवाल के इस वातावरण मे कोई भी आदोलन अथवा सघष की बात नहा सोच मकता । हमारा केवल यही कत्तव्य है कि ऐस दुर्दिन के समय हम जनता की सहायता क र, अ ततोगत्वा अपनी सहायता करें, पर मेरे सारे तक का यह आशय नही कि आप मुझे बदीगह से मुक्त करें । ऐसा कतई नही है । मैंने ऐसी सहायता बिहार के 1966 67 में अकाल म की है। जबकि सर्वोदय काय 1961 म मुगर और नवादा जिले में रोक दिया गया था और पूरी शक्ति के साथ मैं राहत के कार्यों में लग गया था। यह वह समय था, जब मैंने धान के खेतो मे सडती हुई और बहती हुई लाशो को अपनी आखो से देखा था।

एक और भी महत्त्वपूण बात विचार करने की है । सन 1974 के फरवरी माच म जब बिहार आन्दोलन शुरू हुआ था, विधान सभा के चुनाव के दिन 3 वप दूर थ । लोक सभा के चुनाव मे भी अभी दो वप बाकी थे । पर अब लोक सभा के चुनाव के केवल दो महीने शेष हैं । पर, यदि अभी विपक्षी दल के लोग और उसके नेता यदि जेल से रिहा कर दिए जाए तो चुनाव से ज्यादा अभी राहत काय का काम महत्त्वपूण है । ऐसा कोई अमानवीय व्यक्ति नही है जो इस दु ख के समय सघष अथवा आदोलन की बात सोचे । ऐसा ही विचार देश के युवा वग का भी है ।

अन्त मे मैं यह कहना चाहूगा कि चूकि जसा आप कहती हैं पूरी स्थिति अब काबू म है कही भी सरकार विरोध नही है मुल्क म सब कही व्यवस्था है, आप ससदीय लोकतत्र मे विश्वास रखती हैं और लोक सभा के चुनाव के अब केवल छ महीने शेष हैं तो आप अपनी पूरी ईमानदारी से अब सारे प्रतिपक्ष को जेल से

रिहा कर दें, प्रेस से प्रतिबंध हटा दें और समस्त मौलिक जनतान्त्रिक अधिकार जनता को लौटा दें तथा लोक सभा के चुनाव की तिथि की घोषणा कर दें।

आपकी व्याख्या के अनुसार अगर आपातस्थिति खत्म हो चुकी है तो उसके अनुरूप अध्यादेश जारी कर इस अमानवीय स्थिति को खत्म करें और भारत की मनीषा को उसकी सहजता पुन प्रदान करें।

पूरी ईमानदारी से मैं आपको अपने इस निवेदन पर विचार करने के लिए आग्रह करता हूं।

समस्त मगल कामनाओं के साथ

आपका

जयप्रकाश

परिशिष्ट 3

17, सितम्बर, 1975

प्रिय प्रधानमन्त्रीजी

26 अगस्त को मैंने आपसे एक महीने के 'पेरोल' पर छोड़ने का निवेदन किया था। 4 सितम्बर को कृषि मन्त्रालय के श्री बोहरा मेरे पास पटना में जो भी राहत काम हो रहा था, उसकी कैफियत देने आए थे। आप और आपके शासन द्वारा इस सम्बन्ध में जो कार्यवाही की गई थी, उसके बारे में सन्तोष व्यक्त किया था। साथ ही मैंने यह कहा था कि मेरी यह इच्छा है कि ऐसे संकट के समय मैं पटना में जाकर लोगों की सहायता करूं। मैंने उनसे कहा था कि मेरे इस आशय को प्रोफेसर पी० एन० धर को बताए, जिसके कारण ही वह मुझसे यहां मिलने आए थे। श्री बोहरा के आगमन से यह निष्कर्ष निकलता था कि मुझे पेरोल पर छोड़ने के निवेदन पर गंभीरता से विचार किया गया और उस विशेष परिस्थिति में मैं यथाशीघ्र सहायता कार्य के लिए पटना पहुंचूं। पर मुझे दुःख है कि इस बीच पूरे तीन सप्ताह का समय बीत चुका और इस बीच बिहार की भयंकर बाढ़ से लाखों लोग तबाह हो गए, जिसका मुझे अपार दुःख है। उत्तरप्रदेश में भी बाढ़ की भयंकर दशा है। मैं नहीं जानता कि मेरे क्षेत्र और मेरी जन्मभूमि

की अब क्या दशा है ? कल 'ट्रिब्यून' मे छपे 3 स्तभीय शीर्षक म कहा गया है— बिहार की बाढ गभीर स्थिति मे आज के भी समाचारपत्रो म यह रिपोर्ट है—'बिहार की बाढ की दशा चिन्ता-जनक । मुख्य कोसी नहर के दायें किनारे का टूट जाना कोई साधारण घटना नही है। इससे भयकर नुकसान हुआ होगा। मुगर जिले के सैकडो गाव बाढ की चपेट म आ गए होगे। इससे बिहार भूकम्प स भी अधिक नुकसान हुआ होगा।

इन परिस्थितियो मे मैं फिर से यह निवेदन करता हू कि जनता की सेवा के लिए मुझे फिर से एक अवसर दिया जाए। कृपया इस राजनीतिक सन्दर्भ मे न देखा जाए। ब्रिटिश हुकूमत के दिनो म भी, जब हम इनके साम्राज्यवाद को ध्वस्त करन के लिए युद्धरत थे, तब भी अग्रेजो ने मानवीय पक्ष को नजरदाज नही किया था। ऐसी मानवीय विपदा के समय राजनीति की क्या जगह है ? मैं अपने तईं चडीगढ के डिप्टी कमिश्नर के 21 8 1975 के उस पत्र का उदाहरण दे सकता हू, जिसे मैन आपके पास भेजा था। और जिसम मैंने लिखा था। 'मैं इस अनैतिक और अराजनीतिक मानता हू कि ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थिति का इस्तेमाल मैं अपने राजनीतिक सघर्ष और उद्देश्यो के लिए करू। ऐसे समय राजनीति की बात करना भी मानो विपत्ति और करुणा का मजाक उडाना है। जिसके पास तनिक भी मानवीय सवेदना होगी, वह अन्यथा नही सोच सकता।' ऐसा मेरा विचार है।

यह सरकारी मामला नही है कि ऐसे समय वहा गैर सरकारी सस्थाओ द्वारा राहत-कार्य की जरूरत नही है। आपने स्वय और आपके सहयोगियो ने लोगो से सहायता की माग की है। राहत काय मे जो मेरा अनुभव है, उसके बारे म आपको स्वय पता है।

श्री वोहरा के द्वारा मैंने प्रोफसर धर को एक दूसरा भी सदेश दिया था कि बिहार की बाढ स्थिति ने एक ऐसी नई परिस्थिति पदा की है, जिसके तहत फिर से पूरी राजनीतिक स्थिति को, जो

आपातस्थिति से पहले वहा चल रही थी, उसको फिर से सुधारा जा सकता है। मेरा यह विचार तब से और आज सुदृढ हुआ है। बिहार की बाढ स्थिति तब से और बिगडी ही नहीं है तब से बाढ का प्रकोप देश के अन्य हिस्सा मे भी फला है। ऐसी परिस्थिति मे आदोलन की बात सोचना असम्भव है। राजनीतिक आपातस्थिति के स्थान पर अब मानवीय आपातस्थिति का क्षण उपस्थित है, जिसम मुकाबला करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रयत्न अपेक्षित है। केद्रीय गहमत्री ने मद्रास म स्वय घोषित किया है (पूरे देश मे अत्र शाम स्थिति है। तीस लोग जेल से छाड दिए गए हैं। पी० टी० आई० ट्रिब्यून 14 9 1975)। ऐसी स्थिति म आपातस्थिति किस तरह न्यायसगत है।

एक कारण और है और वह महत्त्वपूण है। आपातस्थिति क्यो समाप्त हो ? लोक सभा के चुनाव के दिन नजदीक आ रहे हैं। सविधान के अनुसार लोक सभा के चुनाव अगले वष के शुरू म हाने हैं। ऐसी स्थिति म अगर आपातस्थिति नही है तो वर्तमान लोक सभा का कोई औचित्य नहीं रह जाता। पर, आप जानती हैं यह बहाना कितना थोथा है। यह किसी और को धोखा नहीं दगी बल्कि हमशा के लिए इस देश से ससदीय लोकतत्र का खात्मा हो जाएगा। जिसके लिए आप जनता म इतनी बातें करती हैं। इससे सबसे अधिक आपका ही अहित होगा। आप किस आधार पर जनता से यह कह सकती हैं कि वे लोक सभा मे अपन प्रतिनिधियो का चुनाव न करें ? आपके सहयोगियो के अलावा और कौन यह कह सकता है कि चूकि आपातस्थिति है इसलिए लोक सभा के चुनाव सभव नहीं हैं।

अब सितम्बर का यह तीसरा सप्ताह है। इस महीने के अन्त म अथवा अगले महीने के प्रारभ मे आपको लोक सभा के चुनाव की घोषणा कर देनी चाहिए, ताकि चुनाव आयोग समय से चुनाव की तिथि निश्चित कर सके। महोदया, आप देखेंगी कि आपकी

यह अकेली घोषणा मुल्क के समूचे राजनीतिक वातावरण को बदल देगी। किसी प्रजातंत्र मे आमचुनाव (यदि यह स्वतंत्र और निष्पक्ष हो) एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व के रूप में कारगर होता है जिससे कि राजनीतिक वातावरण में एक खुलापन और शुद्धता लाता है, साथ ही इससे तनाव खत्म होते हैं और राजनीति म फिर से एक नया स्वास्थ्य और नई चेतना आती है।

तटस्थ रूप से आप मेरे इन सुझावों पर विचार करें, इस निवेदन के साथ समस्त मंगल कामनाओं सहित—

आपका
जयप्रकाश

मुद्रक जिंदल प्रिंटर्स शाहदरा दिल्ली 110032